हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा



हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा

हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा

ज० म० दीमशित्स, पी एच० डी०

हिन्दी व उर्दू प्राध्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का प्रतिष्ठान, मास्को



राजकमल प्रकाशन

[illegible]

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

प्रथम संस्करण, १९६६

मूल्य दस रुपये

मुद्रक
नवीन प्रेस
दिल्ली

प्राक्कथन

डॉ० दीमशित्स की हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा एक रूसी विद्वान द्वारा हिंदी में लिखित पहला हिंदी व्याकरण ही नहीं, बल्कि हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में एक नई परम्परा का सूत्रपात है। हिन्दी अध्येता अभी तक देशी व्याकरणों के अतिरिक्त हिन्दी व्याकरण की मुख्यत अंग्रेजी परम्परा से ही परिचित रहे हैं। रूस में हिंदी सम्बन्धी जो कार्य हुए हैं उनकी छिटपुट सूचनाएँ तो थी, किन्तु इस बात का पूरा पता देने वाली सामग्री हमारे सामने न आई थी कि रूस में हिंदी सम्बन्धी अनुशीलन की सदियों पुरानी सुदीर्घ परंपरा है जिसे समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत भाषाविद और भी तत्परता से विकसित एवं समृद्ध कर रहे हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जब भारत ने 'पाश्चात्य जगत' के बाहर के अन्य देशों के साथ स्वतन्त्र रूप से संपर्क स्थापित किया तो भारतीय विद्वानों को उन देशों में किये गए भारतीयविद्या सम्बन्धी अनुसंधानों का भी अभिज्ञान हुआ और इस दृष्टि से भारत रूस मैत्री का विशेष महत्त्व है। जैसा कि डा० दीमशित्स ने इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में कहा है, 'यूरोप में हिंदी आदि अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन केवल व्यावहारिक उद्देश्यों से ही हो रहा था तथा यूरोप के अनेक देशों की उपनिवेशवादी नीति का ही वह एक अंग था। परन्तु रूस में वैज्ञानिक भारतीय विद्या का विकास बिलकुल अन्य उद्देश्य तथा आधार पर हो रहा था। वहां इसका विकास वैज्ञानिक जानकारी के प्राप्त्यर्थ तथा भारत की महान तथा अद्वितीय संस्कृति में रूसी सामाजिक क्षेत्रों की गहरी रुचि के कारण हो रहा था।" अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के द्वारा इस अनुसंधान को और भी बल प्राप्त हुआ तथा अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन विधिवत प्रारम्भ हुआ। इसका बहुत कुछ श्रेय अकादमीशियन अ० प० बरान्निकोव को है जिनके पवित्र नाम से प्रायः सभी हिन्दी प्रेमी पूर्णत परिचित हैं। श्री बरान्निकोव द्वारा शुरू किये गए कार्य को आज भी उनके सुयोग्य कर्मठ शिष्य तथा प्रशिष्य आगे बढ़ा रहे हैं जिनमें से एक डा० दीमशित्स भी हैं।

हिंदी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में डा० दीमशित्स के हिंदी-व्याकरण सम्बन्धी

नोधपूण निव ध प्रकाशित हो चुके हैं जिनस अनक हिंदी पाठक भलीभांति परिचित है। इसलिए जब व इस बार भारत आए तो हमने उनस हिंदी का एक सम्पूण व्याकरण प्रस्तुत करन का अनुरोध किया जिस उन्होंने अत्यधिक व्यस्तता क बावजूद स्वीकार करन की कृपा की और कठिन श्रम करके अपन दस बारह वर्षों क अध्ययन को लगभग तीन महीन म ही हिंदी माध्यम स प्रस्तुत कर दने की तत्परता भी दिखलाई। प्रवास की संक्षिप्त अवधि को देखत हुए उन्होंने वृहद् व्याकरण का लोभ संवरण करक रूपरेखा ही प्रस्तुत की है किन्तु विज्ञ अध्येताओं की दृष्टि म यह तथ्य प्रकट हुए बिना न रहेगा कि लेखक न जिस विनम्रतावश रूपरेखा कहा है उसम भी सामान्य सरलीकरण के स्थान पर यथास्थान हिंदी व्याकरण का अनक जटिल समस्याओं का विश्लेषण काफी बारीकी म जाकर किया गया है—विशेषण क्रिया प्रकरण शब्द निर्माण एव वाक्य गठन प्रभृति विषयों म।

जैसा कि दूसर बहुत स लखकों ने किया है उनके विपरीत डा० दीमशित्स ने अन्य व्याकरणों क आधार पर एक और व्याकरण तयार करन का आसान तरीका नहीं अपनाया है बल्कि उन्होंन परिश्रम एव विवकपूर्वक हिंदी की पत्र पत्रिकाओं तथा साहित्यिक पुस्तकों म भाषा के प्रचलित प्रयोगों को सकलित करक उनका विश्लेषण किया है इस दृष्टि स प्रस्तुत व्याकरण म हिंदी क यथासभव नय-से नय प्रयोगों का भी आकलन हुआ है—यहाँ तक कि साधु असाधु प्रयोगों का विचार किए बिना भी बहुत से उदाहरण उल्लिखित हुए हैं जस क्रिया के सातत्यबोधक रूपों का विवरण देत हुए पढ़ता होता है', 'पढ़ रहा होता है' 'पढ़ना होता था' पढ़ रहा होता था आदि की गणना। इसी प्रकार अंग्रेजी के अक्षरशः अनुवाद 'ममद म चल रहा बहस म भाग लेते हुए जैसे प्रयोगों को भी डा० दीमशित्स न अपने व्याकरण म निधड़क भाव से स्थान दिया है।

प्रचलित प्रयोगों का विविधता के साथ ही डा० दीमशित्स का यह व्याकरण नवीन व्याकरणिक श्रेणियों के निर्माण का दृष्टि स भी पर्याप्त समृद्ध है। भाषा रूपों का विवरण दत समय जहाँ उन्ह परम्परा म कोई परिभाषा अथवा अवधारणा प्राप्त न हो सका, वहाँ उन्होंन अपनी ओर स नई अवधारणाएँ प्रस्तावित की है जस शब्द निर्माण के सदर्भ म अर्द्ध उपसर्ग तथा व्यधिकरण के योग म बनने वाले शब्द। सामान्य वर्तमान काल तथा अपूर्ण भूतकाल म होना क्रिया के जटिल भेद वाले प्रयोगों का विवेचन करत हुए उन्होंन किसी घटना या व्यापार की प्राथिकता का उल्लेख किया है जो मरी

ही तरह सम्भवतः औरों के लिए भी अपरिचित हों। इसी प्रकार पद्धति और 'पठन' की दृष्टि से भी इस व्याकरण में ऐसी अनेक नई बातें दृष्टिगोचर होती हैं जिन सबका उल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है। एक हिन्दी पाठक के नाते प्रसंगात् मैं इतना ही कह सकता हूँ कि अपनी भाषा की ऐसी बहुत-सी विशेषताएँ हैं जिनकी ओर 'अतिपरिचयात् अवज्ञा' के कारण सामान्यतः हमारा ध्यान नहीं जाता। इस प्रकार से शायद डा० दीमशित्स ने प्रमाणित कर दिया कि किसी भाषा का व्याकरण कभी-कभी अन्य भाषा-भाषी अधिक सफलता से लिख जाते हैं क्योंकि उनमें प्रथम परिचय तथा प्रथम-दर्शन की अनाविल जिज्ञासा होती है। इस दृष्टि से इस व्याकरण का अत्यधिक व्यावहारिक महत्त्व है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे यह ग्रन्थ पाण्डुलिपि रूप में ही देखने को प्राप्त हो सका और इसके प्रणयन की प्रत्येक गतिविधि को निकट से जान सकने का अवसर मिला। स्पष्ट ही डा० दीमशित्स के इस वैज्ञानिक कार्य के लिए मेरे मन में सौहार्दपूर्ण शुभाशंसा है, साथ ही यह आकांक्षा भी कि इसके बाद वे शीघ्र ही हिंदी का एक बृहद् व्याकरण भी तैयार करने में सफल हों।

—नामवरसिंह

विषय-सूची

मनाशब्दों के निर्माणकारी अर्द्ध उपसर्ग—शब्द संयोजन—विशेषणों का निर्माण—विशेषणों के निर्माणकारी प्रत्यय—विशेषणों के निर्माणकारी अर्द्ध प्रत्यय—विशेषणों के निर्माणकारी उपसर्ग—विशेषणों के निर्माणकारी अर्द्ध उपसर्ग—शब्द संयोजन से विशेषणों का निर्माण—क्रियाओं का निर्माण—नामिक क्रियाएँ—व्युत्पन्न सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रियाएँ—प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग—अवधारणबोधक क्रियाएँ—अवधारणबोधक क्रियाओं में प्रयुक्त सहकारी क्रियाओं की विशेषताएँ—समानार्थक क्रियाओं तथा विपरीतार्थक क्रियाओं के संयोजनों द्वारा—क्रियाओं का निर्माण—क्रियार्थक समुदाय।

शब्दसमुदाय—वाक्य—वाक्य में शब्दों के सम्बन्धों के प्रकार—साधारण वाक्य—वाक्य के प्रकार—दो अंगों वाले वाक्य—वाक्य के मुख्य अंग—उद्देश्य—विधेय—क्रियाविधेय—नामिक विधेय—वाक्य के सहायक अंग—कर्म—गुणनिर्देशक—विशेषताबोधक—विधेय का वाक्य के उद्देश्य तथा प्रधान कर्म से अन्वय—एक अंग वाले वाक्य—निश्चित पुरुषवाचक वाक्य—अनिश्चित पुरुषवाचक वाक्य—अपुरुषवाचक वाक्य—अपूर्ण वाक्य—शब्द क्रम—शब्दसमुदाय में शब्द क्रम—वाक्य में शब्द क्रम—संयुक्त वाक्य—संयुक्त समानाधिकरण वाक्य—संयुक्त व्यधिकरण वाक्य—उद्देश्य उपवाक्य—विधेय उपवाक्य—कर्म उपवाक्य—गुणनिर्देशक उपवाक्य—संयोजक उपवाक्य—विशेषताबोधक आश्रित उपवाक्य—उपवाक्यबहुल संयुक्त व्यधिकरण वाक्य—प्रत्यक्ष कथन तथा परोक्ष कथन।

प्रस्तावना

भारत की राजभाषा हिन्दी संसार में सबसे अधिक व्यवहार में आने वाली भाषाओं में से है। परन्तु हिन्दी आधुनिक भारत की एकमात्र भाषा नहीं है। भारत में दो सौ से अधिक भाषाएं तथा बोलियाँ भारत के स्थानीय भागों में बोली जाती हैं। ९० से अधिक प्रतिशत लोग हिन्दी, उर्दू, बंगला, तमिल, तेलुगु, मराठी, पंजाबी, गुजराती, कन्नड़, बिहारी, उड़िया, राजस्थानी आदि बोलते हैं। अधिकतर भारतीय भाषाओं की अपनी अपनी स्वतन्त्र लिपियाँ हैं।

आधुनिक भारत तथा पाकिस्तान की भाषाएँ निम्नलिखित समुदायों में बाँटी जा सकती हैं —

(१) उत्तर भारतीय (२) द्रविड़ (३) तिब्बत-बर्मी (४) मुंडा (५) मान ख्मेर।

इनमें से सबसे बड़ा प्रथम समुदाय है। यह भारोपीय भाषाओं के परिवार का है। कई युगों में उत्तर भारतीय भाषाएं अपने व्याकरण विषयक रूपों के सुधार की दिशा में अपने आन्तरिक नियमों के अनुसार विकसित होती रही हैं। उत्तर भारतीय भाषाएं इन तीन वर्गों में विभाजित हैं—(१) पुरातन युगीन उत्तर भारतीय भाषाएँ (२) मध्ययुगीन उत्तर भारतीय भाषाएँ तथा (३) अर्वाचीन युगीन उत्तर भारतीय भाषाएँ।

पुरातन युगीन उत्तर भारतीय भाषाएँ वेदों तथा महाकाव्यों में प्रयुक्त भाषाएं हैं। इन भाषाओं का विकास ईसा से लगभग बारह सदियों पूर्व हुआ। सबसे अधिक प्राचीन साहित्यिक कृति, जो भाषा की दृष्टि से सबसे अधिक समृद्ध है वह है ऋग्वेद।

ऋग्वेद के पश्चात् अन्य बड़ी कृतियाँ रची गई जो पुरातन युगीन भाषाओं की बहुमूल्य साहित्यिक निधि हैं। इनमें से सबसे अन्तिम कृतियाँ रची गईं शास्त्रीय संस्कृत में। संस्कृत में साहित्य का विकास सुचारु रूप से अनेक सदियों तक होता रहा। ईसा से लगभग पाँच सदी पहले मध्ययुगीन भारतीय भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ। इन भाषाओं का तब व्यापक नाम पड़ा प्राकृत भाषा—इनमें पाली, शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी का समावेश है। उनके

स्थान पर ईसा क बाद का प्रारम्भिक सदियो म उनके परवर्ती अपभ्रंश रूपो का प्रारम्भ होता है। ये अपभ्रंश रूप प्राकृतो तथा वर्तमान काल तक की दस सदियो म विकसित होती आ रही आधुनिक उत्तर भारतीय भाषाओ के बीच की एक कडी थी। अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओ की सम्बन्धित अपभ्रंशो से उत्पत्ति हुई। उन्ही म से एक है हिन्दी भाषा। वह आधुनिक भारत म सबसे अधिक प्रचलित है। भारत के लगभग २५ करोड आदमी उसका व्यवहार करते हैं। हिन्दी म समृद्ध साहित्य तथा पत्र पत्रिकाओ का प्रकाशन हो रहा है। हिन्दी भाषा अर्वाचीन भारतीय भाषाओ के उत्तरीय समुदाय के परिवार की है।

आधुनिक भारत म हिन्दी के सबसे निकट भाषा उर्दू है। हिन्दी तथा उर्दू का प्रादुर्भाव और उनकी आजकल की स्थिति इस बात के परिचायक हैं कि उनका आधार—व्याकरण विषयक ढाँचा मौलिक शब्द भण्डार तथा ध्वनि सम्बन्धी प्रणाली प्राय एक सदृश हैं।

हिन्दी तथा उर्दू की भिन्नताएँ मुख्यत शब्दावली तथा आंशिक रूप से शब्द निर्माण और वाक्य रचना के क्षेत्र म दखने म आती है।

जैसा कि सुविदित है अपने विकास की प्रक्रिया म भाषाओ म विभिन्न परिवर्तन आया करते है। भाषा की ध्वनियाँ तथा पदरचना-सम्बन्धी ढाँचे आदि बदल जाते हैं।

भारतीय भाषाएँ भी अपने विकास के लम्बे तथा जटिल मार्ग से गुजरी है जिसमें पदरचना-सम्बन्धी ढाँचे में मौलिक परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन लम्बी अवधि के अन्दर होता रहा है। परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ में मध्य युगीन भाषाओ अर्थात प्राकृत भाषाओ में संश्लेषणात्मक ढाँचे के शनै शनै लोप फिर अपभ्रंश भाषाओ म उनके पूर्ण लोप तथा अन्त म अर्वाचीन भारतीय भाषाओ के विश्लेषणात्मक ढाँचे के निर्माण में प्रकट हुई है।

अर्वाचीन भारतीय भाषाओ के विश्लेषणात्मक ढाँचे के उत्तरो विकास के आधार पर उनमे पुरातन भारतीय संश्लेषणात्मक रूपो से सर्वथा भिन्न नवीन संश्लेषणात्मक रूपो का प्रादुर्भाव दृष्टिगोचर होता है।

संश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषाओ म व्याकरण विषयक रूप तथा वाक्य म शब्दो के बीच सम्बन्ध स्वयं शब्दो के रूपो के विकार से व्यक्त होते हैं। विश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषाएं इस तरह की भाषाएँ कहलाती हैं जिनमे व्याकरण-विषयक रूप तथा वाक्य में शब्दों के बीच सम्बन्ध शब्दो के रूपो द्वारा नहीं अपितु शब्दक्रम सहायक शब्दो आदि से व्यक्त होते हैं।

संश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषा का ज्वलन्त नमूना वैदिक भाषा है जो

उस युग की बोलचाल की साहित्यिक भाषा थी।

एक वदिक कालीन उपभाषा से विकसित शास्त्रीय सस्कृत एसी भाषा थी जिसमे सश्लेषणपरक रूपा का आधिक्य था। अपभ्रश भाषाएँ साहित्य म मध्ययुग के आरम्भ म प्रयुक्त होन लगी। उनके अर्वाचीन रूप ध्वनिया तथा पदरचना की दष्टि से उत्तर भारतीय भाषाओ के पूव रूपा स प्राय मिलत जुलत थ। अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओ के विकास का प्रक्रिया केवल १५वा सदी म पूण हुई है जब आधारभूत विभक्ति चिह्ना तथा अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओ की क्रियाओ के विश्लेषणात्मक रूपा का पूण विकास हुआ। लगभग इसी समय एक विश्लेषणात्मक टाच वाली भाषा पूण रूप मे विकसित हुई जिसको ही बाद म जाकर हिन्दी नाम दिया गया। हिन्दी भाषा मे अधिकाश क्रिया सम्बन्धी रूप विश्लेषणात्मक ढग स कृदन्ता तथा विभिन्न सहायक क्रियाओ के रूपा के सयोजन द्वारा बनत हैं। वाक्य मे शब्दा के सम्बन्ध विभक्ति चिह्नों द्वारा व्यक्त होते ह जो नामिक शब्दा या सवनामो के असामान्य कारक के साथ जुड होते है। जैसा कि सवविदित है शुद्ध विश्लेषणात्मक या शुद्ध सश्लेषणात्मक भाषाएँ नही होती ह। भाषा मे शब्द के व्याकरण विषयक कार्यो तथा वाक्य म शब्दा के सम्बन्धा की अभिव्यक्ति के चिह्ना निश्चित प्रकारा की बहुलता के अनुसार ही भाषाएँ विश्लेषणात्मक प्रधान या सश्लेषणात्मक प्रधान समझी जाती हैं। सस्कृत म भी सश्लेषण प्रधान रूपा के साथ कुछ थोड स विश्लेषणात्मक रूप देखने म आते है।

हिन्दी का व्याकरण सम्बन्धी ढाचा भी शुद्ध विश्लेषणात्मक नही है। विश्लेषणात्मक रूपो के साथ साथ भाषा म जिनका बाहुल्य है तथा इसीलिए हिन्दी भाषा की परिगणना विश्लेषण प्रधान भाषाओ म की जाती है सश्लेषण के तत्त्व भी विद्यमान हैं। ये तत्त्व हिन्दी भाषा के विकास के भिन्न भिन्न काला स सम्बन्धित हैं। जैसे, मध्ययुगीन भाषाओ के अवशेष 'मुझे', 'तुझे', तथा नय सश्लेषणात्मक रूप जो विश्लेषणात्मक ढाचे के विकास के समय म उत्पन्न हुए हैं— लडकियाँ' 'बोलती' इत्यादि।

हिन्दी मे विश्लेषणात्मक रूप क्रियाविशेषणा का छोडकर अन्य सभी प्रधान शब्द भेदो में विद्यमान होते हैं। जसे

(क) सज्ञाशब्दों में सब सज्ञाओ असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक बहुवचन रूपा का तथा आकारान्त व आकारान्त सज्ञाशब्दा के असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक एकवचन के रूपा का निर्माण होन समय।

(ख) विकारी विशेषणा आकारान्त विशेषण सवनामो तथा क्रमवाचक

संख्याओं में लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार उदल्त समय।

(ग) संज्ञा सर्वनामों में (१) एकवचन, एकारांत तथा एकारान्त कर्मकारक के प्रयोग में। (२) सब तथा 'कई सर्वनामों के असामान्य कारक सबों' तथा 'कइयों' के प्रयोग में।

(घ) क्रियाओं में। (१) आज्ञार्थक प्रकार के भेदों, सम्भावनार्थक प्रकार के सामान्य भेद तथा निश्चयार्थक प्रकार के प्रथम भविष्यकाल का निर्माण होते समय। (२) लिंग तथा वचन में कृदन्तों के विकार में। (३) पुरुष तथा वचन में सम्भावनार्थक प्रकार के सामान्य भविष्यकाली क्रियाओं के विकार में। (४) वर्तमान काल में पुरुष तथा वचन में होना क्रिया के विकार में। (५) प्रथम भविष्यकाल में पुरुष वचन तथा लिंग में क्रियाओं के विकार में। (६) अपूर्ण भूतकाल में लिंग तथा वचन में सहायक क्रिया होना के विकार में।

(८) लिंग तथा वचन में का विभक्ति चिह्न तथा सा निपात के विकार में।

नामिक रूपों तथा क्रिया के रूपों में नये सम्पूर्ण मराठी, बंगला तथा अन्य अर्वाचीन भारतीय भाषाओं में भी दृष्टिगोचर होते हैं।

प्रादुर्भाव की दृष्टि से हिन्दी भाषा का शब्द भण्डार दो प्रकार के शब्दों से सम्पन्न हुआ है—देशी और विदेशी। देशी शब्दों की दो श्रेणियाँ हैं—इनमें पहली श्रेणी के वे शब्द हैं जो पुरातन भारतीय काल से मध्य काल में से गुजरते हुए आधुनिक काल तक लम्बा मार्ग तय करके हिन्दी में थोड़ा-बहुत रूप बदल कर आए हैं। उन्हें कहते हैं तद्भव शब्द। दूसरी श्रेणी के वे शब्द हैं जो प्राचीन संस्कृत भाषा से बिना किसी रूपान्तर के हिन्दी में आये हैं। इन्हें कहते हैं तत्सम शब्द। विदेशी शब्द आये हैं मुख्य रूप से निम्नलिखित भाषाओं से—ईरानी तुर्की, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अंग्रेजी तथा आंशिक रूप से रूसी। संस्कृत से आये हुए शब्द हिन्दी की शब्दावली का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। ये संस्कृत शब्द दराज अर्थात अन्य भारतीय शब्दों के साथ नवीन शब्दों तथा शब्द समुदायों के निर्माण का आधार होते हैं। ये धर्म, शिक्षा प्रणाली, कला, विज्ञान और प्रशासन-सञ्चालन इत्यादि सम्बन्धी सामाजिक राजनीतिक शब्दावली की रीढ़ हैं। ये शब्द मुख्य रूप से साहित्यिक कृतियों के माध्यम से हिन्दी भाषा में आये हैं।

ईरानी भाषाओं से आये हुए शब्द विदेशी भाषाओं के शब्दों में मुख्य स्थान रखते हैं। वे हिन्दी में दो रीतियों से आये हैं। एक स्थानीय लोगों तथा ईरानी भाषाभाषियों के बीच सम्पर्क द्वारा और दूसरे प्रशासनिक संस्थानों,

सेना, स्कूल धर्म, साहित्य तथा कला आदि द्वारा, जिनमें १९वीं सदी के मध्य तक फारसी भाषा का बोलबाला था।

तुर्क शब्द मुख्यत हिंदी भाषा म बोलचाल द्वारा आये है। जसे कुली, कचा तोप बन्दूक दारोगा आदि।

अरबी शब्द अधिकतर अरबी शब्दों से समृद्ध ईरानी तथा तुर्की भाषाओं द्वारा हिंदी म आये है।

पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी शब्द सोलहवी तथा सत्रहवी सदियो मे बोलचाल द्वारा हिंदी म प्रयुक्त होने लगे। हिंदी म उनका भाग नगण्य सा ही है। कारण पुर्तगालियों तथा फ्रांसीसियों का भारत म प्रवेश अपेक्षाकृत अल्पकाल तक रहा और दक्षिण भारत के कुछ इलाकों तक ही सीमित रहा। इसलिए व भारत की आम जनता की भाषाओं तथा रहन सहन को बहुत प्रभावित नहीं कर सके। हिंदी म अपनाये गये पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी कतिपय शब्द नमूने के तौर पर हम दते है—

पुर्तगाली शब्द अलमारी, आया, आलपीन, इस्तरी, कमीज, कमरा काजू काफी इत्यादि।

फ्रांसीसी शब्द कारतूस, कूपन अग्रेज बुरुश आदि।

अंग्रेजी शब्द भारतीय भाषाओं म सोलहवी सदी म प्रयुक्त होने लगे। अंग्रेजों क उपनिवेशवादी काल के प्रारम्भिक काल म अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों क पदों तथा सैनिक उपाधियों का निर्देश करने क लिए किया जाता था। आगे चलकर भारत म ब्रिटिश प्रभुत्व के स्थापन क साथ साथ स्थानीय भाषाओं पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव प्रबल हुआ, जब सन १८५७ १८५९ के राष्ट्रीय भावनापूर्ण विद्रोह के दमन क पश्चात अंग्रेजी भाषा तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत की सरकारी कामकाज की भाषा घोषित की गयी थी। प्रत्येक आदमी क लिए जो सरकारी नौकरी म लिया जाता था, अंग्रेजी भाषा का जानना अनिवार्य था। मुख्य रूप स अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही नव भारतीयों का पश्चिमी विज्ञान तकनीकी तथा संस्कृति का परिचय प्राप्त होता था। इस प्रकार भारत म अंग्रेजों के दीर्घकालीन प्रभुत्व के समय हिंदी म तथा दूसरी भारतीय भाषाओं म भी विभिन्न प्रशासनिक प्रणाली, सरकारी प्रबंध-व्यवस्था, सेना शिक्षा प्रणाली, विज्ञान, तकनीकी, प्रेस तथा भारतीयों क राष्ट्रीय जागृति आदि सम्बन्धी अंग्रेजी शब्द आ गये हैं।

रूसी शब्द हिंदी म मुख्यत अंग्रेजी के माध्यम स आये हैं। जैसे सोवियत सद्दी स्पुतनिक मरखाज, स्वेज इत्यादि। सीधे रूसी से म बहुत कम

शब्द हिन्दी में लिये गये हैं। इस प्रकार के अधिकतर शब्द साथ ऐसा मुहावरे नहीं बल्कि ऐसा शब्द या ऐसी मुहावरा की प्रतिच्छाया है जो सोवियत संघ की परिस्थिति एवं प्रगति सम्बन्धी नये विचारों को व्यक्त करने के लिए अंग्रेजी तथा हिंदी संस्कृत के शब्दों के आधार पर बनाये गये हैं। जैसे पंचवर्षीय योजना अणु बिजलीघर शांति पुरस्कार विजेता सर्व विशारद संस्कृति भवन इत्यादि।

हिन्दी भाषा का शब्द भण्डार निरन्तर नये शब्दों तथा मुहावरों से भर रहा है। ये नये शब्द तथा मुहावरे न केवल इतर भाषाओं से लिए जा रहे हैं बल्कि हिंदी की अपनी विद्यमान शब्दावली के आधार पर भी शब्द निर्माण के कई प्रकारों द्वारा ये हिंदी को समृद्ध कर रहे हैं। हिंदी भाषा में शब्द निर्माण के नियम निम्नलिखित प्रकार के हैं—

(१) पदरचना विषयक प्रकार अर्थात आगम प्रत्ययों द्वारा शब्द निर्माण।

(२) वाक्यरचना पदरचना विषयक प्रकार।

(३) शब्दावली भावार्थ विषयक प्रकार।

प्रत्येक प्रकार के शब्द निर्माण के अपने अपने उप प्रकार होते हैं। हिन्दी भाषा में पदरचना विषयक प्रकार के निम्न अवान्तर प्रकार हैं—

(क) ध्वन्यात्मक पदरचना प्रकार जिसमें निम्न भेदों का समावेश होता है

(१) प्रत्ययरहित भेद इसमें स्वर दीर्घ या ह्रस्व हो जाता है अथवा स्वर का रूपान्तर हो जाता है। साथ साथ कभी कभी रूपान्तरित व्यंजन में भेद मुख्य रूप से सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रियाओं के निर्माण में देखने में आते हैं। जैसे

समझना	समझाना
पीना	पिलाना
टूटना	तोड़ना
छूटना	छोड़ना

(२) प्रत्ययसहित भेद इसमें संज्ञा के पहले अक्षर के स्वर में ध्वन्यात्मक परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन तब होता है जब 'इक' प्रत्यय द्वारा संज्ञाओं से विशेषण बनते हैं।

संज्ञाओं के प्रथम अक्षरों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन निम्न प्रकार के होते हैं

अ आ में परिवर्तित होता है आ अपरिवर्तित ही रहता है।

इ ऐ में परिवर्तित होता है।

ई ऐ म परिवर्तित होना है।

उ और ऊ दोनो ही 'औ म परिवर्तित होते है।

'ओ' 'औ' म परिवर्तित होता है।

उदाहरण

समय	सामयिक
इतिहास	ऐतिहासिक
नीति	नतिक
उपचार	औपचारिक
भूत	भौतिक
लोक	लौकिक

(ख) प्रत्ययसहित भेद, जिसम शब्दो का निर्माण केवल प्रत्ययो द्वारा होता है। जैसे

लेख	लेखक
खेत	खेता
मदद	मददगार
बल	बलवान

(ग) उपसर्गसहित भेद, जिसम नय शब्द का निर्माण उपसर्गों से होता है। जसे

देश	विदश
मान	अपमान
गुण	अवगुण
जान	अनजान

(घ) मिश्रित भेद जिसम नये शब्दो का निर्माण प्रत्ययो तथा उपसर्गों दोनो म ही होता है। जसे

मेल	अनमेलपन
भारत	अभारतीय
त त्र	स्वतन्त्रता
होश	बेहोशी

(ङ) मध्यप्रत्ययसहित भेद, जिसमे नय शब्द का निमाण मध्यप्रत्ययो से होता है। इस भेद क अनुसार सकमक क्रियाए बनती हैं, जैस निकलना स निकालना, मरना स मारना और बँटना से बाँटना सकमक क्रियाएँ बनती है।

विभिन्न शब्द भेदो म शब्द निर्माणकारी प्रक्रियाएँ विभिन्न होती हैं।

उदाहरण के लिए संज्ञाओं के निर्माण में उपसर्गसहित भेद कम प्रयुक्त होता है। जैसे

साहस	दु साहस
मानव	अतिमानव
काल	दुष्काल

यह भेद अधिकतर विशेषणों के निर्माण में दृष्टिगोचर होता है। जैसे

र्थक	अनर्थक
फल	विफल
पता	लापता
उम्मीद	नाउम्मीद

प्रत्ययसहित भेद संज्ञा शब्दों के निर्माण तथा विशेषण शब्दों के निर्माण दोनों में व्यापक रूप से व्यवहृत होता है। क्रिया शब्दों के निर्माण में उनका व्यवहार अपेक्षाकृत कम होता है। जैसे

भूमि	भूमिधर
अधीन	अधीनता
शान्ति	शान्तिपूर्ण
अपना	अपनाना

आधुनिक हिंदी में अपने उपयोग की दृष्टि से सारे प्रत्यय और उपसर्ग निम्न दो मुख्य वर्गों में बाँटे जा सकते हैं

(१) उत्पादक अर्थात प्रचलित प्रत्यय और उपसर्ग जिनका आधुनिक भाषा में नये शब्दों के निर्माण में प्रयोग होता है। इनमें सबसे महत्व के हैं नकारात्मक उपसर्ग, जैसे कि अ अन व गैर और भाववाचक संज्ञाओं के प्रत्यय जैसे इ वाद ता पन आदि। उदाहरणार्थ—

सहकारी	असहकारी
सुना	अनसुना
फायदा	बेफायदा
सरकारी	गैर सरकारी
बुरा	बुराई
साम्राज्य	साम्राज्यवाद
स्वाधीन	स्वाधीनता
लड़का	लड़कपन

(२) अनुत्पादक अर्थात अप्रचलित उपसर्ग और प्रत्यय जिनके द्वारा

आधुनिक हिन्दी भाषा मे नये शब्दो का निर्माण नही होता है। उनमे निम्न उपसर्ग और प्रत्ययो का समावेश होता है नि, अधि, अभि, बिला, बा, ति, वा हा, आक आदि।

उदाहरण

खोट	निखोट
राज	अधिराज
मान	अभिमान
नागा	बिला नागा
अदब	बाअदब
नी	नीति
देना	देवा
चरवाना	चरवाहा
तरना	तराक

हिन्दी भाषा मे शब्द निर्माण के पदरचना विषयक प्रकारो को वाक्य रचना विषयक प्रकारो से पृथक करना काफी कठिन होता है क्योंकि लगभग सब संयुक्त शब्दो मे जो वाक्यरचना विषयक प्रकार से अर्थात शब्द संयोजन से बने है उनके अंग एक-दूसरे पर निश्चित पदरचना की दृष्टि मे निर्भर करते है। हिन्दी भाषा मे शब्द निर्माण का विशुद्ध वाक्यरचना विषयक प्रकार अर्थात दो या तीन शब्दो का समान संयोजन गौण महत्त्व वाला होता है। इस प्रकार के अन्तर्गत निम्नलिखित श्रेणी के शब्दो का निर्माण होता है मा बाप, दिन रात आदि।

उक्त संयुक्त शब्दो के दो अंग पदरचना की दृष्टि से एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते है और उनके बीच योजक 'और' या 'तथा' प्रयुक्त हो सकता है।

हिन्दी भाषा मे शब्द निर्माण का वाक्यरचना पदरचना प्रकार सबसे अधिक प्रचलित है। इस श्रेणी मे निम्न अवान्तर भेद होते है

(क) शब्द संयोजन जैसे शान्तिप्रेमी (शान्ति+प्रेमी), देशनिकाला (देश+निकाला), बिजलीघर (बिजली+घर) आदि।

(ख) विशेषणों क्रिया के सामान्य रूपों कृदन्तो और यहा तक कि निपातो का सत्वीकरण। जैसे धनी वकालिक, उसके आने तक, कहा, घेरा हाँ में हाँ मिलाना नही करना भाग्य का आज और कल।

शब्द निर्माण के वाक्यरचना-पदरचनाविषयक प्रकार मे विभिन्न शब्द

भेदो का क्रियाविशेषणीकरण भी समाविष्ट है। हिन्दी में क्रियाविशेषण के अर्थ में निम्नलिखित प्रयुक्त होते हैं

(१) संज्ञाएँ और संज्ञाओं की द्विरुक्तियाँ। जैसे सुबह, रोज दिन दिन, इत्यादि।

(२) विशेषण। जैसे अच्छा बुरा, साफ, धीरे आदि।

(३) सर्वनाम। जैसे इतना उतना, ऐसा वैसा आदि।

(४) पूर्वकालिक कृदन्त। जैसे जान-बूझकर छिपकर मिलकर इत्यादि।

(ग) शब्द निर्माण के वाक्यरचना पदरचना प्रकार से संज्ञा तथा विशेषणपरक शब्दों के क्रियापरक शब्द भेद विनिमय (कन्वर्शन) का गहरा सम्बन्ध है। इस तरह के शब्दभेद विनिमय का अर्थ यह समझा जाता है कि संज्ञा या विशेषण से बिना किसी उपसर्ग या अव्यय के क्रिया का निर्माण होता है। इस किस्म के शब्दों का अर्थ वाक्यों में उनके स्थान तथा निश्चित शब्द भेद में निहित विशेषताओं पर निर्भर होता है। हिंदी में इस क्रियापरक शब्द भेद विनिमय के अंतर्गत क्रियाओं के रूप में कुछ स्त्रीलिंग संज्ञाओं और विशेषणों का प्रयोग होता है। जैसे सराहना, रचना स्थापना झूलना रोना आदि।

शब्द निर्माण का शब्दावली भावार्थ विषयक प्रकार व्यवहृत तब होता है जब नये विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का अन्य अर्थों में प्रयोग होता है। जैसे जवान शब्द युवक है किन्तु यह बोलचाल की भाषा में सैनिक के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। यान' शब्द जिसका पहले अर्थ था परिवहन का साधन किन्तु अब मुख्यत हवाई जहाज के अर्थ में व्यवहृत होने लगा है।

यूरोप में वैज्ञानिक भारतविद्या का प्रारम्भ रूस में हुआ था। अफानासी निकितिन तथा गेरासिम लेबिदेव की उत्कृष्ट कृतियों ने वैज्ञानिक भारतविद्या की आधारशिला रखी। इससे भारतविद्या के विकास को भारी प्रेरणा मिली। उन्होंने सबसे पहले दुनिया को भारतीय जनता की पुरानी संस्कृति तथा उसके कलात्मक और ऐतिहासिक स्मारकों से परिचित कराया।

यूरोप में अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन जिनमें हिंदी भी है, अठारहवीं सदी के अन्त में ही प्रारम्भ हुआ। यूरोप में इन भाषाओं का अध्ययन केवल व्यावहारिक उद्देश्यों से ही हो रहा था तथा यूरोप के अनेक देशों की उपनिवेशवादी नीति का ही वह एक अंग था। रूस में वैज्ञानिक भारतविद्या का विकास बिल्कुल अन्य उद्देश्य तथा आधार पर हो रहा था। वहाँ इसका विकास वैज्ञानिक जानकारी के प्राप्त्यर्थ तथा भारत की महान तथा अद्वितीय

मस्कृति म रूसी सामाजिक क्षेत्रो की गहरी रुचिया के कारण हो रहा था। परन्तु अक्तूबर क्राति से पूव के रूसी भारतविद्या के साहित्यशास्त्र तथा भाषा शास्त्र के क्षेत्र मे पर्याप्त सफलता एव सिद्धि के बावजूद कई कमिया थी जिनके कारण रूसी भारतविद्या के विकास म बाधाएँ पड रही थी। उन कमिया मे एक मौलिक कमी यह थी कि सब भारतीय भाषाओ म से केवल पुरातन भारतीय भाषाओ अर्थात वदिक तथा शास्त्रीय सस्कृत और आंशिक रूप स मध्ययुगीन भाषाओ का अध्ययन हो रहा था। अर्वाचीन भारतीय भाषाओ का अध्ययन नाममात्र का ही हो सका था। अक्तूबर क्राति से पूव क केवल एक रूसी भारतविद्याविद प्रोफेसर ई० प० मीनायव, जिन्हे पुरातन तथा अर्वाचीन भारतीय भाषाओ तथा साहित्या का अच्छा ज्ञान था भारत की सास्कृतिक विविधता के अध्ययन का महत्त्व समझते थे।

रूस में अर्वाचीन भारतीय भाषाओ का अध्ययन अक्तूबर समाजवादी क्राति के पश्चात ही विधिवत प्रारम्भ हुआ तथा भारतविद्या के प्रमुख सोवियत प्रतिनिधि अकादमीशियन अ० प० बरानिकोव के पवित्र नाम के साथ उसका अविनाभाव सम्बन्ध है। श्री बरानिकोव को सोवियत भारतविद्या के नये पथ प्रशस्त करने तथा भारतीय इतिहास व सस्कृति के बहुमुखी अध्ययन के आधार के रूप म महत्त्वपूण अर्वाचीन भारतीय भाषाओ का अध्ययन आरम्भ करने का श्रेय है। अकादमीशियन बरानिकोव न दाऊद अज़ादत्त के साथ मिलकर लेनिनग्राद विश्वविद्यालय म हिन्दी, उदू मराठी बँगला तथा पजाबी भाषाओ के अध्यापन का समुचित प्रबन्ध किया। उन दोनो ने अर्वाचीन भारतीय भाषाओ तथा साहित्या के विवेचना को तयार किया। अकादमीशियन बरानिकोव न अनेक ग्रन्थ तथा पाठ्यपुस्तका का प्रणयन किया। इन ग्रन्थो म सबसे अधिक महत्त्वपूण पाठ्यपुस्तक है हिन्दुस्तानी (हिन्दी व उदू)'।

श्री बरानिकोव द्वारा शुरू किये गए उक्त साहित्यिक काय एव साधना को आगे बढ़ा रहे है आज भी उनके सुयोग्य कमठ शिष्य तथा प्रशिष्य। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र म सफलतापूवक काय कर रहे है य० पा० चेल्गिव। उनके द्वारा हिन्दी कविता पर लिखी गई पुस्तक 'परम्परा तथा नवीन शली' शाघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। हिन्दी रूसी तथा रूसी हिन्दी शब्दकोशा के प्रणयन तथा सकलन म महत्त्वपूण योग दिया है डाक्टर व० म० बस्त्रोवनाय ने। उनके द्वारा सकलित हिन्दी रूसी शब्दकोश के दो मस्करण प्रकाशित हो चुके है। आजकल व डाक्टर व० लिपिरास्की तथा डाक्टर ग० जोग्राफ के साथ मिलकर नय बहत रूसी हिन्दी शब्दकोश के प्रकाशन की तैयारी म लग हुए हैं। डाक्टर

हिंदी भाषा में दीर्घ तथा ह्रस्व स्वर का आपस में विनिमय हुआ करता है। विनिमय होने वाले स्वरों के निम्न युग्म होते हैं —आ अ, ई इ, ए इ, ऊ उ ओ उ। ह्रस्व स्वरों का विनिमय आ अ ई ए, इ ए ए इ ए इ, उ ओ ओ उ प्राय सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रियाओं के निर्माण में देखा जाता है। जैसे—

बनना	बनाना
पीना	पिलाना
फिरना	फेरना
देखना	दिखाना
बैठना	बिठाना
रुकना	रोकना
सोना	सुलाना

शब्द निर्माण के विभिन्न प्रकारों में दीर्घ स्वर प्राय लघु हो जाते हैं। वैसे शब्द-संयोजन में संयुक्त शब्द के पूर्वअंश में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं। जैसे—अधपका (आधा+पका) घुड़चढा (घोड़ा+चढ़ना)।

कतिपय स्वरादि रहित प्रत्ययों द्वारा बनने वाले शब्दों में दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर हो जाते हैं। जैसे—बिटवा (बेटा+वा)।

लघु 'अ' का अनुच्चारण

हिंदी में प्रयुक्त शब्दों में कभी कभी अ का उच्चारण नहीं होता है। 'अ' का उच्चारण या उसका अनुच्चारण किसी शब्द में उसकी स्थिति पर निर्भर करता है। अ स्वर शब्द के अन्त में असंयुक्त व्यंजनों के पश्चात प्राय उच्चारित नहीं होता है किंतु जब शब्द के अंत में संयुक्त व्यंजन होता है तब 'अ स्वर का उच्चारण सुनाई देता है। जैसे—अन्न इन्द्र, शान्त, युद्ध इत्यादि। शब्द के प्रारम्भ में लघु 'अ का सदैव स्पष्ट उच्चारण होता है। जैसे—अक्षांश, गमन बचपन।

बोलचाल मे लघु 'अ' के अनुच्चारण के कुछ नियम

लघु 'अ का बहुधा उच्चारण नहीं होता है—

(१) शब्द के अंत में असंयुक्त व्यंजनों के बाद। जैसे—घर, रात, कमल, पुस्तक।

(२) तीन अक्षरों वाले शब्दों के दूसरे अक्षर में जब शब्द के अन्त में

कोई दीर्घ स्वर होता है। जैसे —बगरा, लकड़ी, बकरा करना, बोलना इत्यादि।

(३) चार अक्षरों वाले शब्दों में अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर में जब शब्द के अन्त में कोई दीर्घ स्वर होता है। जैसे—सुनहरा कचहरी समझना, निकलना इत्यादि।

(४) चार अक्षरों वाले शब्दों में दूसरे तथा चौथे व्यंजन के पश्चात् जब शब्द के अन्त में असंयुक्त व्यंजन होता है। जैसे—खटमल, पटसन।

(५) क्रिया के सामान्य रूपों के दूसरे अक्षरों में जब अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर में दीर्घ 'आ' होता है। जैसे—समझाना बदलाना इत्यादि।

लघु 'अ' के उच्चारण के कुछ नियम

लघु 'अ' का सदैव स्पष्ट उच्चारण होता है —

(१) शब्द के पहले अक्षर में। जैसे—कब तब सवाल, जवाब।

(२) अन्तिम असंयुक्त व्यंजनों से पूर्व। जैसे—नगर, धड़क, तरफ, परख।

(३) संयुक्त अन्तिम अक्षर में। जैसे—सत्य, धर्म बुद्ध।

(४) 'य' अन्त शब्दों में जब 'य' से पहले 'आ' 'इ', 'ई' 'ऊ' स्वरों में से कोई होता है। जैसे—राय निय राजकीय राजसूय।

(५) एकाक्षर शब्दों में। जैसे—न, व।

(६) चार अक्षरों वाली क्रिया के सामान्य रूप के द्वितीय अक्षर में। जैसे—निकलना, समझना बदलना इत्यादि।

(७) संयुक्त व्यंजन से पूर्वाक्षर में। जैसे—भुलक्कड़, उमंग, मुअत्तिल।

(८) विभिन्न द्विरुक्तियों से बने शब्दों में। जैसे—टकटकी, खटखटाना।

व्यंजन

व्यंजन वाग् इन्द्रिय की ऐसी ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुख में निश्वसित होने वाली वायु के लिए अनेक बाधाएँ आती हैं। हिन्दी में व्यंजन के

निम्नलिखित भेद हैं—

(१) स्पर्श व्यंजन। क ख ग, घ ङ
च छ, ज, झ ञ
ट ठ ड ढ, ण
त थ, द, ध, न
प फ ब भ, म

(२) अन्तस्थ व्यंजन। य र ल, व।

(३) ऊष्म व्यंजन। श ष स, ह।

उच्चारण के स्थान के अनुसार व्यंजनों के निम्नलिखित भेद हैं—

(१) कण्ठ्य—क, ख ग घ ङ ह।
(२) तालव्य—च छ ज झ ञ, य श।
(३) मूर्धन्य—ट ठ ड ढ ण र ष।
(४) दन्त्य—त थ द ध, न ल स।
(५) ओष्ठ्य—प फ ब भ म।
(६) अनुनासिक—ङ ञ ण न म।
(७) दन्तोष्ठ्य—व।

उच्चारण के नाद या श्वास के अनुसार व्यंजनों के दो मुख्य भेद हैं—घोष तथा अघोष।

घोष—*जिन व्यंजनों के उच्चारण करते समय नाद का उपयोग होता* है उन्हें घोष व्यंजन कहते हैं। जैसे—ग घ, ङ ज झ ञ ड ढ, ण द ध न ब भ म, य, र ल व ह।

अघोष—जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास का उपयोग होता है वे अघोष व्यंजन कहलाते हैं। जैसे—क ख च, छ ट ठ त थ, प फ श, ष, स।

अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की भाँति हिन्दी व्यंजनों की एक विशेषता यह है कि स्पर्श व्यंजनों में कुछ ऐसे व्यंजन हैं जिनमें ह की हल्की सी ध्वनि उच्चारण में सुनाई देती है। इसीलिए वे महाप्राण भी कहलाते हैं। जैसे—ख, घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ।

दूसरी विशेषता यह है कि व्यंजनों में ऐसे व्यंजन हैं जो मूर्धा से उच्चारित होते हैं। जैसे—ट ठ ड ढ ण ष। इनके उच्चारण में जिह्वा का स्पर्श मूर्धा भाग से होता है।

व्यजन सयोजन

हिन्दी मे व्यजनो का सयोजन भी होता है। जसे—बच्चा झण्डा, गूजना बागा रास्ता, सब्जी, जिल्द आदि। बोलचाल म व्यजना का सयोजन कभी कभी इस तरह से उच्चारित किया जाता है जसे उनमे कोई सयाजन न हो। इस प्रकार क उच्चारणो में कुछ व्यजनो क बीच ह्रस्व अ का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

बफ	बरफ
माग	मारग
रत्न	रतन
धम	धरम
कम	करम

द्वित्व व्यजन

हिन्दी म द्वित्व व्यजनो का भी प्रयोग होता है। इनका प्रयोग किसी भी शब्द के प्रारम्भ म नही किया जाता मध्य या अन्त म कही भी हो सकता है। जैसे—अन्न पटट चित्त वल्लभ आदि।

व्यजना के द्वित्व के कारण शब्द अपने से मिलते जुलते शब्द से भिन्न हो जाते हैं। जसे —पता और पत्ता, लता और लत्ता।

उच्चारण करते समय कुछ शब्दो मे द्वित्व व्यजना की-सी ध्वनि प्रतीत हुआ करती है यद्यपि वे वास्तव म द्वित्व व्यजन नहीं होते है। जैसे छीनना का छीन्ना, बनना का बन्ना और रोककर को रोक्कर की भाति कभी-कभी उच्चारित किया जाता है। उपरोक्त शब्द व्यजनो के द्वित्वाभास के उदाहरण समझे जाने चाहिएँ।

अक्षर

हिन्दी मे ह्रस्व तथा दीघ अक्षर होते है। ह्रस्व अक्षर व होते है जिनम अ, इ, उ, अँ इत्यादि ह्रस्व स्वर होते हैं या व अक्षर ह्रस्व गिने जाते है जिनमे व्यजन के साथ ह्रस्व स्वर मिले होते है। जसे—उ छ ल ना प व न।

दीघ अक्षर वे हैं जिनम आ ई ऊ ए, ऐ ओ औ आदि दीघ स्वर होते है या दीघ अक्षरो म उनकी परिगणना होती है जिनम व्यजन क साथ दीघ स्वर मिले होते हैं। जैसे—आ शा का ऊ दा आ ज्ञा।

हिन्दी में शब्दो म अक्षर की सीमा स्वर उसके अन्त्य स्वर तक होती

है नथा इस प्रकार उसका वह परवर्ती अक्षर से पथक करती है। जसे—जा ना। ग या स्यादि।

हिन्दी म असयुक्त व्यजन एक स्वतन्त्र एव पथक अक्षर मान जाते है। जसे—नि क ट ना, बा ल ना ब ह ल ना।

यदि शब्द म द्वित्व व्यजन होता ह तो उसस पूववर्ती अक्षर की सीमा उस अक्षर के अन्त्य स्वर तक होती है। जसे—प ट्टा अ न्न भ ट्टा।

स्वराघात

शब्दो के उच्चारण म किसी स्वर पर विशेष बल लगाना है। इस बल लगाने की क्रिया को स्वराघात कहते है।

प्रत्यक हिन्दी शब्द म जिसम एक स अधिक अक्षर होते है अपना स्वराघात होता है। हिन्दी म स्वराघात का स्थान स्थायी नही होता अर्थात अनेकाक्षरी शब्दो म वह शब्द के आरम्भ म मध्य म तथा अन्त म किसी भी भाग पर हो सकता है। जसे—सालन सम्हाला जल्दी।

शब्द विकार म स्वराघात अपरिवतनशील रहता है अर्थात शब्द के अविकारी रूप म जिस भाग या अक्षर पर स्वराघात होता है उसके विभिन्न रूपो मे भी उसी भाग या अक्षर पर स्वराघात होता है। जसे—मज—मेज—मेजो। जाना—जाकर—जाऊ।

किसी प्रत्यय के आगम स स्वराघात का स्थान बदल सकता है। जसे—बढना—बढाव। मछ्छ—मछवा।

हिन्दी म स्वराघात का स्थान ह्रस्व तथा दीघ अक्षरो की सख्या तथा स्थिति पर निभर करता है। शब्द म प्राय किसी एक अक्षर पर स्वराघात होता है।

स्वराघात सम्बन्धी कुछ सामान्य नियम नीचे दिये जाते ह—

(१) जिन शब्द म केवल ह्रस्व अक्षर और अन्त म असयुक्त व्यजन होते हैं उनम अन्तिम असयुक्त व्यजन के पूर्वाक्षर पर स्वराघात होता है। जसे—सडक नमक।

( ) जिन शब्दो म द्वित्व या सयुक्त व्यजन होते है उनम स्वराघात उन व्यजनो से पहले वाले अक्षर पर होता है। जसे—दिल्ली दिल्ली।

( ) यदि किसी शब्द म दो या तीन अक्षर हैं और उनम से कोई अक्षर दीघ है तथा अन्य ह्रस्व है तो स्वराघात दीर्घाक्षर पर

होता है। जैसे—घड़ी, पसरी खिड़की करना, पढ़ा, कर्ता, पलना, किया, लिखा करा, बनाकर।

(४) यदि शब्द में दो या दो से अधिक अक्षर होते हैं और उनमें दो या दो से अधिक दीर्घ अक्षर होते हैं तो अंतिम से पूर्वाक्षर पर स्वराघात होता है। जैसे—किराया आसानी मिचलाना, खटखटाना।

(५) यदि शब्द में चार या उससे अधिक अक्षर हैं और उसमें अंतिम अक्षर दीर्घ है तथा उसमें पूर्व का अक्षर ह्रस्व है तो स्वराघात उस ह्रस्व अक्षर से पहले अक्षर पर होता है। जैसे—कचहरी, सुनहरा, परखना पहुँचना समझना।

(६) यदि शब्द में केवल ह्रस्व अक्षर हैं तो स्वराघात होता है उपान्त्य अक्षर पर। जैसे—पटसन दुल्हिन अचकन।

(७) उन शब्दों में जो द्विरुक्तियों से बने होते हैं स्वराघात होता है अन्तिम दीर्घाक्षर पर। जैसे—सरसरी, बुलबुला, गुदगुदा।

(८) 'नहीं' निपात तथा सार्वनामिक क्रियाविशेषण में स्वराघात होता है शब्द के द्वितीय अक्षर पर। जैसे—नहीं यहाँ वहाँ, कहीं।

(९) समास वाले शब्दों में स्वराघात या तो ठीक उन्हीं भागों पर होता है जिनमें असमस्त रूप में होता है या बहुधा उनमें अन्तिम दीर्घ अक्षर पर प्रबल स्वराघात होता है और समासवाले शब्द के पूर्व भाग पर हल्का सा स्वराघात। जैसे—मा बाप कूड़ा कचरा, चाल ढाल, नौकर-चाकर, गुसलखाना दवाफरोश।

(१०) यदि शब्द प्रत्यय जुड़कर बनते हैं तथा उन प्रत्ययों में अपना स्वराघात है तब प्रत्ययों का वही स्वराघात प्राय प्रत्ययसहित समग्र शब्द का होता है। ऐसे शब्द में मूल शब्द का स्वराघात गौण होता है। जैसे—गाड़ी वाला, लकड़हारा रफूगर।

लिपि

व चिह्न, जो वाग् ध्वनियों को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं उन्हें वर्ण या अक्षर भी कहते हैं। जैसे—अ, ग थ श।

वर्णों या अक्षरों के समूह को वर्णमाला या लिपि कहते हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त लिपि का नाम 'देवनागरी' या नागरी है। हिन्दी लिपि के प्रत्येक वर्ण को पृथक बनाने के लिए उस वर्ण के पीछे 'कार' लगाया,

जाता है। जसे—अकार इकार उकार ककार मकार।

हिंदी वणमाला में वर्णों का क्रम उनकी ध्वनियों के उच्चारण के स्थान के अनुसार है। तदनुसार वणमाला म सवप्रथम व ग्यारह वण आते है जो स्वरो की ध्वनियों के चिह्न हैं। उनके बाद आते हैं व २५ वण जिनमें प्रत्यक पाच का एक वग है और जो स्पश यजनो की ध्वनियों के चिह्न हैं। तदनन्तर आते हैं चार वग जो अतस्थ यजनो की ध्वनियों के चिह्न हैं। इनके बाद आते हैं ऊष्म यजनो की ध्वनियो के चिह्न।

इस प्रकार वतमान हिंदी वणमाला म ४४ स्वतत्र वण या अक्षर हैं।

स्वरों की ध्वनियों को व्यक्त करने वाले वर्ण—

अ	उ	ऐ
आ	ऊ	ओ
इ	ऋ	औ
ई	ए	

अन्य रूप म लिखे जाने वाले कुछ स्वर —

अ आ ओ औ।

यजनों की ध्वनियों को व्यक्त करने वाले वण—

क वग— क ख ग घ ङ
च वग— च छ ज (झ) झ ञ
ट वग— ट ठ ड, ढ, ण (ण)
त वग— त थ द ध न
प वग— प फ ब भ म
य र ल व।
श ष स ह।

उपरोक्त वर्णों के अतिरिक्त हिंदी वणमाला म प्रयुक्त होते है निम्न वण भी—ड ढ क ख ग ज फ। हिंदीइतर भाषाओं स आई ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इन वर्णों का उपयोग किया जाता है। ये वण स्वतत्र नही होते है तथा हिंदी के शब्दकोशो म इन वणो वाले शब्दो का स्वतत्र रूप स उल्लेख नही किया गया है अपितु शब्दकोशो म वणक्रमानुसार ड ढ, क ख ग, ज फ वर्णों वाले शब्दो के साथ व दे दिये जाते हैं। जसे—कतरा—कतरा। कफ—कफ।

क्ष—क्ष तथा ज्ञ सयुक्त अक्षर कभी कभी पथक वण समझे जाते हैं, किन्तु वास्तव म वे पथक वण नहीं है। व वणमाला के क्रमश क वग तथा ज

वग के अन्तगत ही है। इमीलिए हिन्दी के शब्दकोशों में क्ष=क्ष तथा त्र वाले शब्दों को वणक्रमानुसार क तथा 'ज वर्णों वाले शब्दों के साथ दिया जाता है। 'कम को छोड़ करके क से बने सयुक्ताक्षरों वाले शब्दों के बाद क्ष का क्रम आता है। 'ज से बने सयुक्ताक्षरों से पहले त्र' वाले शब्द शब्दकोशों में दिये जाते हैं। जैसे—क्विनाईन के बाद क्षत्रिय जसे शब्द और 'ज्यों से पूर्व त्रेय जैसे शब्द।

हिंदी वर्णमाला में श्र तथा त्र समेत कुल मिलाकर नौ अतिरिक्त वर्ण या अक्षर है। शेष सात अक्षर है—ड़ ढ़ क़ ख़, ग़, ज़ फ़।

प्रतिरिक्त चिह्न

हिन्दी लिपि में वर्णों के साथ साथ निम्नलिखित कुछ अतिरिक्त चिह्नों का प्रयोग किया जाता है—

(१) स्वर के चिह्न अर्थात् मात्राएँ। इनका प्रयोग उन स्वरों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो व्यजनों से जुड़कर ही प्रयुक्त होते हैं। स्वरों के अधिकाश चिह्न स्वर वर्णों के खण्डित रूप चिह्न होते हैं। जैसे—

आ का खण्डित रूप चिह्न है	—ा
ई का खण्डित रूप चिह्न है	—ी
इ का खण्डित रूप चिह्न है	—ि
उ का खण्डित रूप चिह्न है	—ु
ऊ का खण्डित रूप चिह्न है	—ू
ऋ का खण्डित रूप चिह्न है	—ृ
ए का खण्डित रूप चिह्न है	—े
ऐ का खण्डित रूप चिह्न है	—ै
ओ का खण्डित रूप चिह्न है	—ो
औ का खण्डित रूप चिह्न है	—ौ

जैसे—गा गि गी, गु गू गृ, गे, गै गो गौ।

स्वर वर्ण केवल तब प्रयुक्त होते हैं जब उनसे व्यक्त ध्वनियाँ शब्द के आरम्भ में या स्वरों के पश्चात ही होती है। जैसे—आम मऊ, मुआवजा।

(२) गिरारखा के ऊपर दिये जाने वाला अधचन्द्र चिह्न ॅ। इसका उपयोग अंग्रेजी से आये या अंग्रेजी के शब्दों के आ स्वर को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे—डाक्टर ऑफिस।

( ) अनुनासिक या चन्द्रबिन्दु चिह्न ँ। यह चिह्न यह सकेत करता है कि स्वर अनुनासिक है। जैसे—आँगना मँगना। परन्तु वतमान हिंदी में स्वर

की अनुनासिकता को व्यक्त करने वाले चन्द्रबिन्दु के स्थान पर केवल अनुस्वार बिन्दु भी लिखने की प्रथा है। जैसे—पाच जाए।

(४) हलन्त चिह्न । इसका प्रयोग किया जाता है व्यंजन वर्णों में ह्रस्व 'अ' के लोप का निर्देश के लिए। जैसे—क न प।

(५) *अनुस्वार बिन्दु चिह्न । इसका प्रयोग किया जाता है—

(क) वर्गों के पंचम वर्ण के स्थान पर। जैसे—गंगा चंचल कंठ संत कंप।

(ख) स्वर की अनुनासिकता दिखाने के लिए। यह प्राय तब प्रयुक्त होता है जब स्वर इस चिह्न से व्यक्त किया जाता है जो शिरोरेखा के ऊपर होता है या स्वर वर्ण में शिरोरेखा के ऊपर कोई चिह्न होता है।

जैसे—खींचना भैंस मैं नेताओं।

( ) विसर्ग चिह्न । इसका प्रयोग किया जाता है कतिपय संस्कृत शब्दों में तथा उपसर्गों में उच्छ्वास को व्यक्त करने के लिए। विसर्ग का उच्चारण प्राय ह की भांति होता है। जैसे—अत निःशुल्क पुनःस्थापित।

विसर्ग का प्रयोग कतिपय हिन्दी शब्दों में भी ह् के स्थान पर किया जाता है। जैसे छह के स्थान पर छः भी लिखा जाता है।

संयुक्त अक्षर

हिन्दी वर्णमाला के प्रत्येक हलन्त रहित व्यंजन अक्षर एवं वर्ण में ह्रस्व अ मिला हुआ रहता है। जैसे—क प स म। इसलिए व्यंजन अक्षरों के जिन संयोजनों में ह्रस्व अ नहीं है उनको लिपि द्वारा प्रकट करने के लिए संयुक्त अक्षर प्रयुक्त होते हैं।

सब व्यंजन अक्षरों में कुछ स्थायी सामान्य अंग होते हैं—अर्थात उनमें पड़ी रेखाएं तथा खड़ी रेखाएं होती हैं जो मानो अक्षर का मस्तिष्क होता है। पड़ी रेखा खण्डित भी सकती है जैसे ध थ भ द ट ह। परन्तु प्रत्येक व्यंजन अक्षर का अपना विशेष चिह्न होता है। यह विशेष चिह्न व्यंजन अक्षर का वह भाग है जो उसमें तब भी बना रहता है जब व्यंजन अक्षर में वे पड़ी रेखाएँ तथा खड़ी रेखाएं नहीं है जो सारे व्यंजन अक्षरों के लिए सामान्य है। जैसे

* हिन्दी शब्दकोशों में वे शब्द, जिनमें अनुनासिक या अनुस्वार चिह्न हैं, प्राय दूसरे शब्दों से पहले दिए जाते हैं। जैसे—'झाऊ' से पहले 'झांसा' शब्द दिया जाता है और 'गुच्छ' से पहले 'गुंबद'।

'ग' अक्षर का विशेष चिह्न 'ग' है और 'ज' का विशेष चिह्न है 'ज'।
'क्षास' शब्द लिया जाता है और 'गुच्छ' मे पहल 'गु च्छ'।

हिंदी म तीन व्यजन अक्षरा क सयोजन से बने सयुक्ताक्षर प्रयोग म बहुत कम आत है।

अधिकतर सयुक्त अक्षर दो व्यजन अक्षरा क सयोजन स बनत है।

सयुक्त अक्षर लिपि का दृष्टि स या तो खडा रेखाओ वाले होन है या प्राय पडी रेखाओ वाल। खडी रेखाओ वाली आकृति क सयुक्त अक्षर म प्रथम व्यजन अक्षर अखण्डित रूप म लिए जाते है और अतिम व्यजन अक्षर का विशेष चिह्न उनके नीचे जुडता है। जसे—ट्ट क्क द्व।

पडी रेखाओ वाले सयुक्त अक्षर मे अखण्डित रूप मे अतिम व्यजन अक्षर लिया जाता है। उसके पूर्व जुडता है प्रथम व्यजन अक्षर का विशेष चिह्न। जसे—ग्+न=ग्न। प+य=प्य।

कुछ सयुक्त अक्षर खडी रेखाओ वाले तथा पडी रेखाओ वाले दोनों ही हो सकते है। जैसे—'क्त' तथा क्त। ल्ल तथा ल्ल। श्व तथा श्व।

क्ष यद्यपि क+ष के सयोजन स तथा ज्ञ ज्+ञ क सयोजन स बने सयुक्त अक्षर है। किन्तु व प्राय स्वतन्त्र अक्षर मान जाते हैं।

सयुक्त अक्षरा म र अक्षर काफी परिवर्तित आकृति क साथ लिखा जाता है। प्रथम व्यजन अक्षर क साथ सयोजन म र आधी रेखा क रूप म व्यजन अक्षर क निचले भाग म जोडकर लिखा जाता है। जसे—क+र=क्र। ज+र=ज्र। द+र=द्र। प+र=प्र। व+र=व्र।

परवर्ती व्यजन अक्षर के साथ सयोजन म र रेफ क चिह्न ( ) क रूप मे अकित होता है जो अक्षर के ऊपर लिखा जाता है। जसे र+व=र्व। र+य=र्य।

परवर्ती व्यजन अक्षर के साथ कोई दीर्घमात्रा चिह्न होता है तो उस दीर्घमात्रा चिह्न क रूप के अनुसार रेफ चिह्न व्यजन क अक्षर क ऊपर नहीं अपितु दीर्घमात्रा चिह्न क ऊपर या पश्चात लिखा जाता है। जसे—र+पा=र्पा। र+मा=र्मा।

इसी तरह ट ठ ड ढ अक्षरा क साथ उन सयुक्त अक्षरा म र व्यजन अक्षर ' चिह्न के रूप म अकित होता है। यह ' चिह्न उक्त व्यजन अक्षरा के नीचे जोडकर लिखा जाता है। जसे—ट+र=ट्र। ड+र=ड्र।

ङ, ञ, ण, न म य पाँच अनुनासिक व्यजन अक्षर सयुक्त अक्षर क रूप म अपने वर्ग क व्यजन अक्षरा क साथ दो मिलाकर लिखे जाते है जसे

ङ+ख=ङ्ख। ञ+ज=ञ्ज। ण+ठ=ण्ठ न+द=न्द। म+ब=म्ब।

वर्तमान हिन्दी में उक्त पाँच अनुनासिक व्यंजन अक्षरों के स्थान पर प्रायः अनुस्वार चिह्न की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे—अंक कुंजी कंठ हिंदी खंबा।

बहुधा प्रयुक्त होने वाले संयुक्त अक्षरों की सूची

क+क=क्क क्क क+ख=क्ख क+त=क्त क्त क+म=क्म क+य=क्य क्य क+र=क्र क+ल=क्ल क्ल क+व=क्व क्व क+ष=क्ष क्ष क+ष+म=क्ष्म क+स=क्स।

ख+ल=ख्ल ख+य=ख्य ख+र=ख्र ग+ग=ग्ग।

ग+द=ग्द। ग+ध=ग्ध ग+न=ग्न ग+म=ग्म ग+य=ग्य ग+र=ग्र ग+ल=ग्ल

घ+न=घ्न घ+य=घ्य घ+र=घ्र ङ+क=ङ्क ङ+ख=ङ्ख ङ+ग=ङ्ग ङ+घ=ङ्घ।

च+च=च्च च्च च+छ=च्छ च+य=च्य।

छ+र=छ्र।

ज+ज=ज्ज ज+झ=ज्झ ज+ञ=ज्ञ ज+म=ज्म ज+य=ज्य ज+र=ज्र ज+व=ज्व।

ट+ट=ट्ट ट+ठ=ट्ठ ट+य=ट्य ट+र=ट्र।

ठ+य=ठ्य ठ+र=ठ्र।

ड+ग=ड्ग ड+ड=ड्ड ड+य=ड्य ड+र=ड्र।

ढ+य=ढ्य ढ+र=ढ्र।

ण+ट=ण्ट ण+ठ=ण्ठ ण+ड=ण्ड ण+ढ=ण्ढ ण+ण=ण्ण ण+य=ण्य।

त+क=त्क त+त=त्त त्त त+त+व=त्त्व त+थ=त्थ त+न=त्न त्न त+प=त्प त+य=त्य त+म=त्म त+र=त्र त्र त+स=त्स त+स+न=त्स्न त+स+य=त्स्य।

थ+य=थ्य थ+र=थ्र थ+व=थ्व।

द+ग=द्ग द+द=द्द द+ध=द्ध द+न=द्न द+भ=द्भ द+म=द्म द+य=द्य द+र=द्र द+व=द्व।

ध+न=ध्न ध+म=ध्म ध+य=ध्य ध+र=ध्र ध+व=ध्व।

न+त=न्त न+थ=न्थ न+द=न्द न+द+र=न्द्र, न+ध=न्ध न+ध+य=न्ध्य न्+न=न्न न्न न+म=न्म न+य=न्य, न+र=न्र न+व=न्व न+स=न्स न+ह=न्ह।

प+त=प्त प्त, प+न=प्न प्न प+प=प्प, प+य=प्य प+म=प्म, प्+र=प्र प+ल=प्ल प्ल, प+स=प्स।

फ+न=फ्न, फ+य=फ्य फ+र=फ्र।

ब+ज=ब्ज ब+द=ब्द ब+ध=ब्ध ब+न=ब्न ब+ब=ब्ब ब्+भ=ब्भ ब+य=ब्य ब+र=ब्र।

भ्+न=भ्न भ+य=भ्य भ+र=भ्र।

म+न=म्न म्+प=म्प, म+फ=म्फ म+ब=म्ब, म+भ=म्भ म्+म=म्म म+य=म्य म+र=म्र म+ल=म्ल, म+ह=म्ह।

य+य=य्य।

र+क=र्क र+द=र्द र्+य=र्य।

ल+क=ल्क, ल+द=ल्द ल+प=ल्प ल+ल=ल्ल ल+व=ल्व।

व+य=व्य व+व=व्व व+र=व्र।

श+क=श्क, श+च=श्च, श्च, श+न=श्न श्न श+य=श्य, श्य श+र=श्र, श+ल=श्ल, श+व=श्व, श्व।

ष्+क=ष्क, ष+ट=ष्ट ष+ट+र=ष्ट्र, ष्+ठ=ष्ठ ष+ण=ष्ण ष+प=ष्प ष+म=ष्म ष+य=ष्य, ष+व=ष्व।

स+क=स्क स+ख=स्ख, स+ट=स्ट स+त=स्त स्+त+र=स्त्र, स्त्र स+थ=स्थ, स+थ+य=स्थ्य, स+न=स्न, स्+प=स्प स्+फ=स्फ, स+ब=स्ब स+भ=स्भ, स्+य=स्य, स+र=स्र, स+ल=स्ल स+व=स्व, स+स=स्स।

ह+न=ह्न, ह+म=ह्म ह्+य=ह्य, ह+र=ह्र, ह्+ल=ह्ल, ह+व=ह्व।

२

शब्द-विचार तथा पद-रचना

हिंदी भाषा भारोपीय परिवार के भारतीय भाषा समूह की भाषा है। हिंदी भाषा पद रचना के अनुसार विश्लेषणात्मक प्रकार की भाषाओं में गिनी जाती है क्योंकि उसमें अधिकतर क्रिया शब्दों के रूप सामान्य कृदन्तों तथा विभिन्न सहायक क्रियाओं के रूपों के संयोगों से बनते हैं और वाक्य के अंगों के सम्बन्ध विभक्ति चिह्नों द्वारा सूचित होते हैं। ये विभक्ति चिह्न नामिक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं।

हिंदी भाषा का गठन विशुद्ध विश्लेषणात्मक गठन नहीं है। अधिकतर विश्लेषणात्मक रूपों के साथ साथ हिंदी में संश्लेषण के अंश भी विद्यमान हैं। वे अन्य भाषा के विकास के विभिन्न कालों के द्योतक हैं। हिंदी में क्रियाविशेषणों को छोड़कर सब प्रधान शब्द भेदों में संश्लेषण पाया जाता है। जैसे—लड़का लड़के लड़की बड़ा बड़ी बड़े पाँचवाँ पाँचवीं पाँचवें हम हमें जाना जाऊँ जाऊँगा जाऊँगी जायेंगे।

संश्लेषण के अंश लिंग तथा वचन में, का विभक्ति चिह्न तथा सा निपात के विकार में भी पाये जाते हैं। जैसे—पिता का घर, पिता की पुस्तक, पिता के पत्र, बहुत सा कागज, बहुत सी किताबें, बहुत से समाचारपत्र।

शब्द भेद

अपने आधारभूत अर्थों और व्याकरण सम्बन्धी रूपों के अनुसार हिंदी भाषा के सारे शब्द, शब्दावली व व्याकरण सम्बन्धी श्रेणियों में विभाजित हो जाते हैं जो शब्द भेद कहलाते हैं। हर एक शब्द भेद जिसका शब्दावली या व्याकरण सम्बन्धी निश्चित अर्थ है उसमें निश्चित पदरचना विषयक स्वरूपों और शब्द निर्माण सम्बन्धी रूपों की विशेषता होती है और वाक्य में वह अपनी भूमिका अदा करता है।

हिंदी में हमारे मत के अनुसार तीन प्रकार के शब्द भेद हैं—प्रधान शब्द भेद, सहायक शब्द भेद और विस्मयादिबोधक शब्द भेद।

प्रधान शब्द भेद वाक्य के विभिन्न अंग होते हैं जो वस्तुओं को, उनकी विशेषताओं, उनकी संख्या, उनके व्यापारों और अवस्थाओं तथा उन व्यापारों और अवस्थाओं की विशेषताओं को बताते हैं। अर्थात ये शब्द भेद वस्तुस्थिति को उसकी वस्तुओं व्यापारों और विशेषताओं में प्रतिबिम्बित कर देते हैं। प्रधान शब्द भेदों में निम्न का समावेश होता है—संज्ञा विशेषण संख्या क्रिया और क्रियाविशेषण। प्रधान शब्द भेदों में सर्वनाम भी आते हैं यद्यपि वे वस्तुओं और उनकी विशेषताओं को नहीं बताते हैं। वे तो केवल उन वस्तुओं का निर्देश करते हैं।

सहायक शब्द भेदों में विभक्ति चिह्न, संयोजक शब्दों और निपातों का समावेश होता है। सहायक शब्द भेद वाक्य के स्वतन्त्र अंग नहीं होते हैं। वे शब्दों और वाक्यों के बीच विभिन्न सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं अथवा किन्हीं शब्दों या पूरे वाक्यों के भावार्थ सूचित करते हैं।

विस्मयादिबोधक शब्द भेद प्रधान शब्द भेद और सहायक शब्द भेद से भिन्न श्रेणी का होता है। प्रधान शब्द भेदों से विस्मयादिबोधक शब्द भेद की भिन्नता इसमें है कि विस्मयादिबोधक वस्तुओं और उनकी विशेषताओं को नहीं बताते। सहायक शब्द भेदों से वे इसलिए भिन्न हैं कि वे शब्दों के बीच सम्बन्धों को नहीं प्रकट करते और न उन शब्दों का भावार्थ व्यक्त करते हैं। विस्मयादिबोधक शब्द केवल मानसिक भावों को व्यक्त करते हैं। विस्मयादिबोधक शब्द-भेद प्रधान शब्द भेद और सहायक शब्द भेद से इस दृष्टि से भी भिन्न है कि वाक्य में विस्मयादिबोधक शब्दों का कोई व्याकरण विषयक सम्बन्ध नहीं होता।

हिन्दी भाषा में प्रत्येक शब्द भेद की अपनी अपनी शब्दावली, पदरचना व वाक्यरचना-सम्बन्धी विशेषताएँ होती हैं।

संज्ञा का शब्द भेद व्यापक रूप में वस्तुओं का निर्देश करता है। हिन्दी भाषा में संज्ञा के वचन, लिंग और कारक होते हैं। वाक्य में संज्ञाएँ सामान्य तथा असामान्य रूप कारकों में प्रयुक्त होती हैं। सामान्य कारक एकवचन का रूप संज्ञा के सब कारकों रूपों के निर्माण करने के लिए आधारभूत रूप है। असामान्य कारक प्रायः विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होता है। वाक्य में संज्ञाएँ उद्देश्य और कर्म के रूप में व्यवहृत होती हैं हालाँकि वे दूसरे कार्य भी कर सकती हैं अर्थात विधेय का अंग, विशेषण तथा क्रियाविशेषण भी हो सकती हैं।

विशेषण वस्तु के गुण आदि विशेषताओं को बताता है। उसके दो कारक होते हैं—सामान्य कारक और असामान्य कारक। विकारी विशेषण के वचन लिंग तथा तुलनावस्था होते हैं। वाक्य में इस प्रकार के शब्द गुणनिर्देशक

तथा विधेयक के अंग के रूप में प्रयुक्त होते हैं। वाक्य के दूसरे अंगों में उनका प्रयोग उद्देश्य, कर्म आदि के रूप में कम होता है।

संख्या वस्तुओं के परिणाम तथा उनके क्रम को बताती है। संख्या के निम्नलिखित अनेक भेद होते हैं—गणनावाचक, क्रमवाचक, आवृत्तिवाचक और समुदायवाचक।

गणनावाचक संख्या तथा समुदायवाचक संख्या अविकारी होती हैं। क्रमवाचक संख्या के वचन, लिंग तथा कारक होते हैं। उनके रूप आकारान्त विशेषणों की तरह बनते हैं। आवृत्तिवाचक संख्या विकारी या अविकारी दोनों ही हो सकती है। वाक्य में कोई भी संख्या प्रधानतः गुणनिर्देशक के रूप में व्यवहृत होती है यद्यपि उसका उपयोग विधेयक के अंग या उद्देश्य के रूप में भी हो सकता है।

सर्वनाम संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी भाषा में सर्वनाम मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं— **संज्ञा सर्वनाम** (मैं, तू, हम आदि) '**विशेषण सर्वनाम**' (ऐसा, जैसा, कैसा आदि) और '**संख्या सर्वनाम**' (इतना, उतना, कितना आदि)। वाक्य में ये तीन प्रकार के सर्वनाम वही कार्य करते हैं जो संज्ञा, विशेषण तथा संख्या किया करते हैं। कुछ सर्वनाम विकारी होते हैं और कुछ अविकारी होते हैं।

संज्ञा सर्वनाम के तीन कारक होते हैं—सामान्य कारक, असामान्य कारक और कर्म कारक। उदाहरण के लिए— मैं, मुझ, मुझे। कर्म कारक के साथ कोई भी विभक्ति चिह्न प्रयुक्त नहीं होता। विशेषण सर्वनाम तथा संख्या सर्वनाम विकारी विशेषण तथा क्रमवाचक संख्या की तरह रूप बदला करते हैं।

क्रिया का शब्द भेद व्यापार या अवस्था को व्यक्त करता है। क्रिया के पुरुष, वचन, काल, प्रकार और वाच्य होते हैं। वाक्य में क्रिया प्रायः विधेय के रूप में प्रयुक्त होती है। वाक्य में अन्य कार्य क्रिया के दूसरे रूप अर्थात् सामान्य रूप, कृदन्त रूप, पूर्वकालिक कृदन्त रूप आदि किया करते हैं। क्रिया के व्यापार की पूर्णता और अपूर्णता, आकस्मिकता, दीर्घकालिकता आदि व्यक्त करने वाले क्रिया के विभिन्न रूपों के कारण भाषा में स्पष्टता आती है।

क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता को या अन्य क्रियाविशेषण की विशेषता को बताता है। जैसे—खूब लिखना, जल्दी चलना, बहुत आहिस्ते, अति शीघ्र इत्यादि। हिन्दी में क्रियाविशेषण अविकारी होते हैं।

विभक्ति चिह्न हिन्दी भाषा में वाक्य में शब्दों के सम्बन्ध प्रकट करते हैं और वस्तुओं में या वस्तु और क्रिया के व्यापार या अवस्था में विस्तार, काल

कारण आदि विषयक सम्बन्ध को दर्शाते हैं। को विभक्ति चिह्न को छोड करके बाकी सब विभक्ति चिह्न अविकारी होते हैं। विभक्ति चिह्न का स्वतन्त्र अंग नहीं हो सकता है। वह वाक्य के स्वतन्त्र अंगों में सम्बन्ध का साधन होता है और उनकी एक दूसरे की अधीनता को बनाता है।

संयोजक संयोजक शब्दसमुदायों और वाक्यों को जोड़ते हैं। विभक्ति-चिह्नों की तरह ये वाक्य के स्वतन्त्र अंग नहीं होते हैं। ये संयोजक शब्द अविकारी होते हैं।

निपात निपात पूरे वाक्य को तथा वाक्यान्तर्गत शब्दों को विभिन्न भावार्थ प्रदान करता है। सा को छोड़कर बाकी सब निपात अविकारी होते हैं। निपात वाक्य का स्वतन्त्र अंग नहीं होता है।

विस्मयादिबोधक शब्द जैसा कि लेख के प्रारम्भ में प्रतिपादित किया गया है कि ये न तो स्वतन्त्र शब्द भेद के अन्तर्गत आते हैं और न सहायक शब्द भेद के अन्तर्गत। ये वाक्य से पृथक होते हैं।

हिन्दी भाषा में विभिन्न शब्द भेद एक दूसरे से पृथक नहीं होते हैं प्रत्युत वे एक-दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। शब्द भेद अर्थात् शब्द वर्गीकरण की सीमाएँ बहुत अस्थायी होती हैं। अक्सर ऐसा होता है कि एक प्रकार के शब्द भेद का समावेश दूसरे में हो जाता है या एक शब्द भेद के शब्द दूसरे शब्द भेद का कार्य कर रहे होते हैं। उदाहरणार्थ बहुत सी संज्ञाएँ और शब्द-समुदाय क्रियाविशेषण हो जाते हैं और अविकारी बन जाते हैं मानो उन्होंने एक रूप धारण कर लिया है। जैसे कि, 'सुबह' 'रोज' 'दबे पाँव' 'दिन चढ़े' 'इस प्रकार' 'किसी-न-किसी तरह' इत्यादि।

हिन्दी में विभिन्न शब्द भेदों का संज्ञीकरण बहुत व्यापक रूप में होता है। हिंदी में विशेषणों, कृदन्तों और क्रिया के सामान्य रूपों का संज्ञीकरण प्रमुख रूप से होता है। जैसे धनी, कहा, मानने, जाने के लिए, इत्यादि। आम तौर पर हिन्दी में संज्ञाओं और विशेषणों के बीच अन्तर बड़ा सूक्ष्म सा है। वाक्य से पृथक इस प्रकार के शब्दों के बारे में यह बताना आसान नहीं होता है कि ये संज्ञासूचक शब्द हैं या विशेषणसूचक शब्द। जैसे साम्राज्यवादी, वृद्ध जवान आदि।

इस प्रकार के शब्दों का अर्थ केवल किसी वाक्य से ही स्पष्ट होता है।

कृदन्तों से विशेषण बनने के उदाहरण प्रायः दृष्टि में आते हैं। इस प्रक्रिया में विशेषणों के रूप में कृदन्तों का उपयोग सहायक होता है। विशेषणों में कृदन्तों की पूर्ण परिणति तब होती है जब किसी कृदन्त का अर्थ उस क्रिया के

अर्थ में भिन्न सा हो जाता है, जिस क्रिया में वह बना है। जैसे 'लिखना-पढ़ना लिखा पढ़ा' इत्यादि।

विशेषणों और गुणवाचक क्रियाविशेषणों में भी अन्तर बड़ा सूक्ष्म-सा है। प्रायः ऐसे विशेषण जो गुण या विशेषता सूचक होते हैं, क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे कि खूब अच्छा बुरा, सीधा, इत्यादि।

किसी भी शब्द का वर्गीकरण अर्थात भेद किसी निश्चित शब्द भेद द्वारा बताना केवल वाक्य पर निर्भर करता है। इसमें शब्द की पदरचना व वाक्य रचना सम्बन्धी विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं और उस एक शब्द का अर्थ प्रकट हो जाता है। जैसे वह अच्छा आदमी है, वह अच्छा पढ़ता है।

३

प्रधान शब्द-भेद

संज्ञा

हिंदी मे संज्ञा के शब्द भेद सम्बंधी अपने वाक्य रचना व पदरचना विषयक कई स्वरूप चिह्न है। वाक्य रचना विषयक स्वरूप सूचक चिह्नों मे मुख्यत वाक्य म निम्नलिखित रूपो मे प्रयुक्त होने का संज्ञाओ का सामर्थ्य है -

१ उद्देश्य के रूप म जैसे, उसका **लड़का** स्कूल म पढता है।

२ विधेयक के नामिक अंग के रूप म जैसे, वह **अध्यापक** है।

३ गुण निर्देशक के रूप म जैसे **बाप का** घर।

४ समानाधिकरण के रूप म जैसे **हिंदुस्तान** समाचार पत्र।

५ प्रधान कर्म के रूप म जैसे, यह **पुस्तक** उसने मेरे लिए खरीदी है।

६ अप्रधान कर्म के रूप म जैसे मैंने अपने **मित्र को** चिट्ठी लिखी थी।

७ विशेषता बोधकों के रूप म

(क) समय विशेषणाबोधक के रूप मे। जैसे दिन म, सांझ को गर्मियो म। कभी कभी समय विशेषणबोधक के रूप म संज्ञाएँ विभक्ति चिह्नो के विना भी प्रयुक्त होता है। जैसे सुबह सायम, रात।

(ख) स्थान विशेषणाबोधक के रूप म। जैसे, घर के ऊपर नगर में, मेज के नीचे।

गतिबोधक क्रियाओ के साथ प्रयुक्त होते समय संज्ञाएँ क्रिया की दिशा निर्दिष्ट कर देती हैं। जैसे, वह बम्बई जाता है।

(ग) प्रकार विशेषणाबोधक के रूप म जैसे जोर से, अच्छी तरह उसकी मानिंद।

८ परिमाण व भार निर्देशक के रूप म जैसे, चार टन लोहा। आठ मीटर कपडा। पांच किलोमीटर दूर।

इस प्रकार दिशा म केवल संज्ञाएँ ही काम कर सकती है।

अन्य शब्द भेदो का विशेष करके विशेषण तथा क्रिया के साथ संज्ञा का प्रयोग भी संज्ञा का वाक्य रचनाविषयक स्वरूप सूचक चिह्न होता है।

विकारी विशेषण के लिंग, वचन, और कारक रूप संज्ञा के लिंग, वचन

और कारक के अनुसार होते हैं और क्रियाओं के रूप केवल लिंग और वचन में संज्ञा के अनुसार होते हैं।

उदाहरणार्थ छोटा लड़का छोटा लड़का छोटे लड़के छोटी लड़कियाँ छोटे लड़के को छोटा लड़का खेलता है छोटी लड़की सलती है छोटी लड़कियाँ खलती हैं।

कई अवसरों पर संज्ञा का बाह्य रूप नहीं बदलता है किन्तु विशेषण या क्रिया के रूप संज्ञा के वचन निर्दिष्ट कर देते हैं। जैसे अच्छा आदमी। यह आदमी कम काम करता है। वे आदमी बोलते हैं।

संज्ञा का एक और स्वरूप चिह्न यह होता है कि वह क्रिया विशेषण के साथ प्रयुक्त नहीं होता है। संज्ञा शब्द सर्वनामों क्रिया के सामान्य रूपों तथा कृदन्तों की भाँति विभक्तियों के साथ प्रयुक्त होते हैं जो विभिन्न प्रकार के कर्म विस्तार कारण आदि सम्बन्धों का अभिव्यक्त करते हैं।

ऊपर दिये गये संज्ञा के वाक्य रचना विषयक स्वरूप चिह्नों में सबसे प्रमुख स्थान उद्देश्य और कर्म के रूप में उसके प्रयोग का है क्योंकि इन वाक्य-रचना विषयक स्थितियों में संज्ञा शब्द प्रायः मूर्त पदार्थों तथा उनमें निहित सब लक्षणों को सूचित करते हैं।

हिंदी में क्योंकि अन्य शब्द भेद पदार्थ का भाव व्यक्त करने के सामर्थ्य वाले नहीं होते अतः वे इस प्रकार के वाक्य रचना विषयक कार्य नहीं करते हैं।

हिन्दी में भावार्थ और इससे सम्बन्धित व्याकरण विषयक विशेषताओं की दृष्टि से संज्ञाएँ जातिवाचक तथा व्यक्तिवाचक होती हैं। जातिवाचक संज्ञाएँ एक ही प्रकार के व्यक्तियों वस्तुओं आदि का बोध कराती हैं तथा हिन्दी में प्रमुख होती हैं। जातिवाचक संज्ञाओं में गिने जाते हैं—

(क) सम्बन्धियों व्यवसायों पदों कार्यों आदि के नाम। जैसे भाई बढ़ई मन्त्री अध्यापक।

(ख) पशुओं पक्षियों मत्स्यों कीट पतंगों के नाम। जैसे घोड़ा कौआ ग्राह मक्खी तितली।

(ग) वस्तुओं के नाम। जैसे घड़ी पुस्तक मेज।

(घ) पौधों धातुओं खनिजों के नाम। जैसे नीम चाँदी कोयला।

(ङ) प्राकृतिक घटनाओं के नाम। जैसे वर्षा आँधी, बिजली जाड़ा।

(च) सामाजिक घटनाओं के नाम। जैसे राज्य क्रान्ति युद्ध निर्वाचन।

(छ) सामाजिक व राजनीतिक सिद्धान्तों के नाम। जैसे मार्क्सवाद समाजवाद द्वैतवाद भौतिकवाद।

(ज) गुणों के नाम। जैसे वीरता, ईमानदारी, लम्बाई।

(च) व्यापारों तथा अवस्थाओं के नाम। जैसे बुनाई, पढाई, बीमारी नींद।

(ज) भावावेगों के नाम। जैसे हर्ष शोक स्नेह, घृणा, रोष।

जातिवाचक संज्ञाओं में समूहवाचक संज्ञाएँ भी परिगणित होती है। समूहवाचक संज्ञाएँ वस्तुओं के समूह को समग्रता के रूप में एकवचन या बहुवचन में व्यक्त करती है। जैसे परिवार, भीड झुण्ड।

बहुवचन में वस्तुओं का समूह व्यक्त करने वाले समूहवाचक संज्ञा शब्द प्राय लोग' 'जन' 'गण' 'मण्डल' आवली,' 'वृन्द आदि जैसे जातिवाचक शब्दों के साथ व्यवहृत होते हैं। ये शब्द जातिवाचक संज्ञाओं तथा संज्ञाओं के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले विशेषणों के साथ जुडकर इस्तमाल किये जाते है। संज्ञाओं तथा विशेषणों के साथ जुडकर उक्त संज्ञाएँ अपना अर्थ खो देती हैं तथा बहुवचन में वस्तुओं के समूह का ही बोध कराती है। बहुधा ये शब्द अपने पूर्ववर्ती शब्द के साथ मिलकर समग्र शब्द का नया अर्थ ध्वनित किया करते हैं। जैसे मजदूर लोग गरीब लोग, भक्त जन, विद्यार्थीगण, मन्त्रीमण्डल ग्रन्थावली, बालवृन्द।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ किसी एक ही वस्तु या व्यक्ति का बोध कराती हैं। वे जातिवाचक संज्ञाओं की तुलना में कम हैं। इन संज्ञाओं में परिगणित होते हैं—

(क) व्यक्तियों के निज नाम। जैसे राम, गोपाल धर्मचन्द्र।

(ख) दिशाओं के नाम। जैसे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम।

(ग) देशों के नाम। जैसे भारत, रूस फ्रान्स।

(घ) जातियों के नाम। जैसे भारतीय, रूसी, अंग्रेज।

(ङ) समुद्रों के नाम। जैसे काला सागर, प्रशान्त महासागर।

(च) नदियों के नाम। जैसे गंगा, सिन्धु, वोल्गा।

(छ) पर्वतों के नाम। जैसे हिमालय विन्ध्याचल।

(ज) नगरों, चौकों तथा सडकों के नाम। जैसे दिल्ली, चाँदनी चौक जनपथ।

(झ) पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम। जैसे गोदान', 'ऋग्वेद', साप्ताहिक धर्मयुग।

(ञ) ऐतिहासिक घटनाओं के नाम। जैसे अक्तूबर क्रान्ति, मई दिवस स्वतन्त्रता दिवस।

(ट) दिनो तथा मासो के नाम। जैसे सोमवार चैत्र जनवरी।

(ठ) उत्सवो के नाम। जैसे दीपावली रक्षाबंधन।

जातिवाचक तथा व्यक्तिवाचक दोनो ही संज्ञाओं में प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक वस्तुओं का समावेश होता है। प्राणीवाचक तथा अप्राणीवाचक संज्ञा शब्दों की व्याकरण विषयक भिन्नता प्रधान कर्म के कार्य में सामान्य कारक के रूप में प्रयुक्त होते समय प्रकट होती है।

अप्राणीवाचक संज्ञा शब्द विशेषण के साथ प्रयुक्त होते हुए भी प्रधान कर्म के कार्य में सामान्य कारक के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे मैं यह किताब पढता हूँ। जबकि प्राणीवाचक संज्ञा शब्द विशेषण के बिना प्रयुक्त होते हुए भी प्रधान कर्म के कार्य में सामान्य कारक के रूप में प्रायः प्रयुक्त नहीं होते। जैसे मैं लडका को देखता हूँ।

हिंदी में संज्ञा शब्द इस बात के अनुसार कि वे ऐसी वस्तुओं को निर्दिष्ट करते हैं जो गिनी जा सकती हैं या नहीं गिनी जा सकती हैं **गणनीय** तथा **अगणनीय** संज्ञा शब्दों में विभाजित होते हैं। गणनीय संज्ञा शब्दों में मूर्त संज्ञाएँ आ जाती हैं। वे गिनी जाती हैं और गणनावाचक संख्याओं के साथ प्रयुक्त होती हैं। उनका व्याकरण विषयक विशेषता यह है कि उनके वचन बदलते हैं। जैसे मेज़-मेज़ें। लडका-लडके। पाँच लडकियाँ। अगणनीय संज्ञाओं में पदार्थवाचक तथा भाववाचक संज्ञा शब्द गिने जाते हैं।

पदार्थवाचक संज्ञा शब्द प्रकट करते हैं पदार्थों को। जैसे लोहा पत्थर, लकड़ी चना।

भाववाचक संज्ञा शब्द व्यक्त करते हैं—

(क) भावना। जैसे प्रेम मित्रता शत्रुता।

(ख) गुण। जैसे दृढता दुर्बलता।

(ग) व्यापार। जैसे दृढीकरण पढाई।

(घ) अवस्था। जैसे लडकपन जवानी बुढापा।

(ङ) अन्य अमूर्त भावना। जैसे मिठास बडप्पन रोष क्षोभ, व्यंग्य।

व्याकरण की दृष्टि से पदार्थवाचक तथा भाववाचक संज्ञा शब्दों की विशेषता यह है कि उनका एकवचन होता है और वे गणनावाचक संख्याओं के साथ प्रयुक्त नहीं होते हैं। बहुवचन में कुछ पदार्थवाचक तथा भाववाचक संज्ञा शब्दों का प्रयोग उनके स्पष्टीकरण पर निर्भर करता है। पदार्थवाचक संज्ञा शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं जब वे उस पदार्थ के विभिन्न प्रकार का अभि

व्यक्त करते हैं। जैसे तेज शराबें मीठी शराबें। भाववाचक संज्ञा शब्द भी तब बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं जब उनकी अमूर्तता के सूचक अर्थ कम हो जाते हैं। जैसे स्वतन्त्रता—जनवादी स्वतन्त्रताएं, शक्ति—शान्ति की शक्तियाँ, जनतन्त्र—जनता के जनतंत्र, गहराई—समुद्र की गहराइयाँ।

लिंग

आधुनिक हिन्दी में लिंग संज्ञाओं के वस्तु-सम्बन्धी अर्थ की अभिव्यक्ति का आधारभूत साधन होता है और संज्ञा की खास विशेषता है। यदि विकारी विशेषण, क्रमवाचक संख्या, कृदन्त और काल के रूप में अन्वय के अनुसार लिंग ग्रहण कर लेते हैं तो संज्ञा का लिंग संज्ञा में निहित लाक्षणिक गुण होता है। हिन्दी भाषा की संज्ञाओं के दो लिंग होते हैं, एक पुल्लिंग और दूसरा स्त्रीलिंग। जैसे (१) पुल्लिंग—बाप, भाई, बेटा, घर, पेड़। (२) स्त्रीलिंग—माता, बहन, बेटी, पुस्तक, छत।

हिन्दी भाषा में लिंगों की अभिव्यक्ति प्रधानतया वाक्यों में होती है—

(क) उन विकारी विशेषणों और स्वामित्ववाचक सर्वनामों के रूपों से जो संज्ञा से अन्वय करते हैं। जैसे (१) यह बड़ा बाग है। (२) वह मेरा घर है। उक्त दो वाक्यों में 'बड़ा' विशेषण और 'मेरा' सम्बन्धवाचक सर्वनाम के रूप निर्देश करते हैं कि संज्ञाएँ 'बाग' और 'घर' पुल्लिंगवाची हैं। (१) यहाँ एक बड़ी नदी है। (२) यह मेरी किताब है। इन दो वाक्यों में 'बड़ा' विशेषण और 'मेरा' स्वामित्ववाचक सर्वनाम के रूप से ही पता चलता है कि संज्ञाएँ 'नदी' और 'किताब' स्त्रीलिंगवाची हैं।

(ख) क्रिया के रूप से। जैसे (१) पक्षी उड़ता है। (२) नदी बहती है। इन दो वाक्यों में 'पक्षी' संज्ञा शब्द पुल्लिंग है और 'नदी' संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग है। यह 'उड़ना' और 'बहना' क्रियाओं वाले विधेयों में समाविष्ट सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्तों से सूचित होता है।

(ग) संज्ञाओं के बहुवचन रूपों से। जैसे (१) इस कमरे में दो दरवाजे हैं। (२) उस कमरे में दो खिड़कियाँ हैं। इन दो वाक्यों में 'दरवाजा' संज्ञा शब्द पुल्लिंग है और 'खिड़की' संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग है, क्योंकि ए असामान्य कारक वाले प्रत्यय बहुवचन में सिर्फ पुल्लिंगवाची संज्ञाओं के अन्त में लगा करते हैं। इसी

तरह 'इया असामान्य वाचक वाले प्रत्यय बहुवचन मे केवल इकारान्त स्त्रीलिंग सनाओ क अन्त म लगा करत है ।

इसके अलावा हिन्दी भाषा म सना शब्दा का लिंग उनके अपन अथ से या पुल्लिग और स्त्रीलिंगवाची सनाआ के प्रत्यया स निर्धारित किया जा सकता है । अथ के अनुसार सना शब्दा के लिंग का भेद केवल पुल्लिंगवाची और स्त्रीलिंगवाचा मनुष्य प्राणिया और मनुष्यतर प्राणिया म होता है । जसे (पुल्लिग) राजेन्द्र गोपाल पुरुष बल आदि । (स्त्रीलिंग) गगा गाय आदि ।

इस प्रकार हिन्दी म मनुष्य प्राणीवाची और मनुष्येतर प्राणीवाची सनाआ म लिंगभेद मनुष्य या पशु के लिंग के अनुसार हाना है—यदि इन सनाओ का लिंग उनके अपन अथ विषयक भाव से सम्बन्धित होता है ।

अप्राणीवाची सना शब्दा म ऐसा अथ विषयक विशेषताएँ बिल्कुल नही हैं जिनमे लिंग निर्दिष्ट हो सके । अर्थात इस किस्म क सज्ञा शब्दो के लिंग शब्द के अथ पर निभर नही होत हैं । जसे मेज सना शब्द स्त्रीलिंग है 'एतराज' सना शब्द पुल्लिग है । कुर्सी सना शब्द स्त्रीलिंग है और 'मोती' सना शब्द पुल्लिग है ।

सज्ञा शब्दों के लिंगों का वर्गीकरण

(क) सना शब्दा के अपन अर्थों क अनुसार लिंग के निर्धारण म निम्न नियमितताएँ होती है—

य शब्द पुल्लिगवाची होत है—

(१) पुरुषवाची नाम । जसे पति पुरुष आदमी चाचा बेटा आदि ।

(२) कई नर जानवरो के नाम । जस भसा, साड, घोडा, बकरा आदि ।

(३) धातुआ खनिजों और मणि प्रस्तरा क नाम । जसे सोना, लोहा ताम्बा कोयला हीरा लाल आदि । इसम अपवाद है—चादी ।

(४) अनेक द्रव या तरल पदार्था के नाम । जैसे तेल दूध पानी, शर्बत मद्य आदि ।

(५) अनेक वक्षा के नाम । जस सागवान देवदार चीड, पीपल आम आदि । इसम अपवाद है—इमली ।

(६) अनेक फसलो क नाम । जस गेहूँ धान मटर मक्का, जौ, बाजरा चावल आदि । इसम अपवाद है—ज्वार और अनेक दालें ।

(७) आकाश के ज्योति पिण्डों के नाम। जैसे सूर्य चाँद, मंगल बुध, शनि, सोम आदि।

(८) पर्वतों और देशों के नाम। जैसे हिमालय विंध्य, भारत, पाकिस्तान, चीन आदि।

(९) महीनों और दिनों के भारतीय नाम। जैसे चैत्र वैसाख, ज्येष्ठ, रविवार सोमवार आदि।

(१०) शरीर के अनेक अंगों के नाम। जैसे सिर, गाल कान, होंठ मुँह हाथ पैर आदि।

(११) पहनने की अनेक वस्तुओं के नाम। जैसे जूता कुर्ता, घाघरा जाँघिया पाजामा, कोट आदि।

(१२) भाववाचक संज्ञाओं वाले शब्द। जैसे प्रेम क्रोध आनन्द, दुःख आदि।

इस प्रकार के शब्द स्त्रीलिंगवाची होते हैं—

(१) नारीवाची नाम। जैसे स्त्री महिला, बहन भाभी बेटी इत्यादि।

(२) अनेक मादा जानवरों के नाम। जैसे गाय, भेड़, भैंस, बकरी, बिल्ली आदि।

(३) नदियों के नाम। जैसे गंगा, यमुना कावेरी, कृष्णा इरावती। इसमें अपवाद है ऐसे शब्द जिनके साथ 'नद' शब्द का प्रयोग होता है। जैसे सिन्धु ब्रह्मपुत्र शोण आदि।

(४) अनेक मसालों और भोज्य पदार्थों के नाम। जैसे लौंग कस्तूरी, मिर्च, राई, खिचड़ी, रोटी खीर इत्यादि।

(५) शरीर के अनेक अंगों के नाम। जैसे आँख नाक जबान, टाँग, ठोड़ी, गर्दन छाती अँगुली, पिंडली नाड़ी इत्यादि।

(६) पहनने की अनेक वस्तुओं के नाम। जैसे टोपी, कमीज धोती, चादर, पगड़ी, साड़ी, मेखला पतलून, बनियान, जुराब इत्यादि।

(७) अनेक रोगों के नाम। जैसे खाज दाद, चेचक, खाँसी, गुहेरी आदि।

(८) भाषाओं के नाम। जैसे हिंदी, रूसी, मराठी अंग्रेजी, फारसी अरबी इत्यादि।

(ख) व्याकरणात्मक गठन के अनुसार संज्ञा शब्दों का लिंगभेद निम्न लिखित प्रकार का होता है—

य पुल्लिगवाची होने है—

(१) सब सना शब्द जो पुरुषवाचक प्रत्ययों द्वारा बने होते हैं। जैसे कमाऊ कर्ता कलाकार गवैया, तैराक दूकानवाला लड़ाकू, लुटेरा, लोहार सहायक इत्यादि।

(२) जो विभक्ति चिह्न रहित सना शब्द अथवा आकारान्त (संस्कृत, फारसी और अरबी भाषाओ के तत्सम शब्दो को छोडकर) सना शब्द हो। जैसे घर पेड घडा कपडा घाघरा आदि।

(३) जिन सना शब्दो के अंत मे औं आता हो। जैसे कुआँ धुआँ इत्यादि।

(४) भाववाचक सना शब्द जिनके अन्त मे आन आव त्व पन प्रत्यय लगते हो। जैसे लम्बान चढाव बनाव महत्व बचपन आदि।

(५) अनेक सना शब्द जिनके अंत मे उ ऊ और 'व' आते हैं। जैसे मधु आलू कचालू भाव आदि।

(६) ऐसे भाववाची सज्ञा शब्द जिनके अंत मे ना प्रत्यय आता है और जो क्रिया के सामान्य रूप होते हुए सज्ञा शब्दो के अर्थ मे प्रयुक्त होते हैं। जैसे करना गाना लिखना पढना बोलना हसना इत्यादि।

(७) ऐसे सना शब्द जिनके अंत मे न त्र य प्रत्यय आते है। जैसे गमन शस्त्र वस्त्र अस्त्र राज्य नृत्य भृत्य सत्य इत्यादि।

(८) सामाजिक और राजनीतिक प्रकार के ऐसे सना शब्द जिनके अन्त मे वाद शब्द लगा होता है। जैसे—समाजवाद साम्यवाद पूँजीवाद साम्राज्य वाद इत्यादि।

(९) फारसी भाषा से लिये गए ऐसे शब्द जिनके अंत मे हिन्दी मे 'आ' आता है। जैसे—पर्दा गुस्सा किस्सा रास्ता चश्मा आदि।

निम्न प्रकार के शब्द स्त्रीलिंगवाची होते है—

(१) अनेक सना शब्द जिनके अंत मे ह्रस्व 'इ' होता है (और जो पुरुष के अर्थसूचक नही होते हैं)। जैसे रात्रि हानि बुद्धि मति गति प्रति (बहुवचन मे प्रतियाँ) इत्यादि।

(२) भाववाचक सना शब्द जो ई या आई प्रत्ययो द्वारा बने हैं। जैसे बुराई भलाई चलाई लम्बाई पढाई लिखाई इत्यादि।

(३) अधिकतर ईकारान्त सज्ञा शब्द। जैसे कुर्सी घडी स्याही, मिट्टी रोटी चिट्ठी रोटी टोपी इत्यादि। इसमे अपवाद हैं—पानी दही, मोती, घी।

(४) आकारान्त संस्कृत तत्सम शब्द (पुरुष अथसूचक संज्ञा शब्दों को छोड़कर)। जैसे कृपा, भाषा, इच्छा, सभा, आज्ञा, सेना, निन्दा, चिकित्सा आदि।

(५) भाववाचक संज्ञा शब्द जिनके अन्त में ता आता है। जैसे मित्रता, सुन्दरता, स्वतन्त्रता, दासता इत्यादि।

(६) भाववाचक संज्ञा शब्द जिनके अन्त में ट वट और हट आता है। जैसे आहट रुकावट, सजावट लिखावट, बुलाहट घबराहट इत्यादि।

(७) हिन्दी के अनेक संज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'त' आता है। जैसे रात लात, बात, जात, छत, भीत, रीत पत, रत इत्यादि।

(८) अरबी से लिये गए अनेक ऐसे संज्ञा शब्द जिनके अन्त में त आता है। जैसे दावत, गलत, तबियत, इज्जत हुकूमत इत्यादि।

(९) अनेक संज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'स' आता है। जैसे मिठास प्यास, सास, बास इत्यादि।

(१०) क्रियाओं से बने संज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'न' आता है। जैसे रहन, जलन सूजन उलझन इत्यादि।

(११) कुछ संज्ञा शब्द जिनके अन्त में दीर्घ 'ऊ' आता है। जैसे दारू, लू इत्यादि।

(१२) 'इया' प्रत्ययान्त शब्द। जैसे खटिया, डिबिया, इत्यादि।

(१३) क्रिया की धातुएँ जो संज्ञा शब्द की तरह प्रयुक्त होती है। जैसे मार, जीत हार, पहचान, समझ आदि।

(१४) अनेक संज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'ख' आता है। जैसे, ईख, भूख, राख काख, कोख, साख इत्यादि।

(१५) फारसी में लिये गए संज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'इश' आता है। जैसे वारिश, साजिश, परवरिश इत्यादि।

(१६) अरबी से लिये गए आकारान्त शब्द। जैसे हवा, दवा, सजा, दुआ इत्यादि।

(१७) अरबी और फारसी में आये हुए शब्द जिनके अन्त में 'ह' आता है। जैसे सुबह, तरह, राह आह सलाह आदि।

प्राणीवाचक संज्ञा शब्दों में लिंग-भेद

(क) मनुष्यवाची पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का भेद अभिव्यक्त होता है

(१) भिन्न अर्थ एवं तात्पर्य के अलग अलग शब्दों द्वारा। जैसे

माँ बाप, माता पिता, बहन भाई, स्त्री पुरुष, औरत मर्द वधू वर इत्यादि।

(२) एक शब्द की रचना के विभिन्न रूपों से। जैसे वृद्ध वृद्धा सुत-सुता महाशय महाशया, पुत्र-पुत्री लड़का-लड़की, चाचा चाची मामा मामी बालक बालिका, पाठक-पाठिका इत्यादि।

(ख) जिन संज्ञा-शब्दों में लोगों के पेशा, धंधा, जाति सामाजिक और सार्वजनिक प्रतिष्ठा के पद या स्थिति का पता चलता है, उनमें लिंग भेद की निम्न से अभिव्यक्ति होती है

(१) पुल्लिंग वाले संज्ञा-शब्दों के साथ स्त्रीवाची शब्दों के संयोजन से। जैसे कवि—स्त्री कवि या महिला कवि। डाक्टर—स्त्री डाक्टर, महिला डाक्टर। मजदूर—औरत मजदूर, महिला मजदूर।

(२) शब्द रचना के विभिन्न रूपों से। जैसे जुलाहा (पु०) जुलाहिन (स्त्री०) धोबी धोबिन, छात्र छात्रा विद्यार्थी विद्यार्थिनी अभिनेता-अभिनेत्री कवि कवयित्री लेखक-लेखिका अध्यापक अध्यापिका पण्डा पण्डाइन, नौकर नौकरानी, अध्यक्ष-अध्यक्षा, सदस्य सदस्या इत्यादि।

शब्द रचना के उक्त रूप अनेक संज्ञा शब्दों में न केवल एक ही पेशे या *जाति के अन्तर्गत लिंगभेद को प्रकट करते हैं बल्कि उनके पारिवारिक सम्बन्ध* को भी बताते हैं। जैसे तेली-तेलिन (तेली की पत्नी), माली मालिन (माली की पत्नी), नाई नाइन (नाई की पत्नी), ठाकुर ठकुरानी (ठाकुर की पत्नी) सेठ-सेठानी (सेठ की पत्नी), जेठ जेठानी (जेठ की पत्नी)।

पशुओं और पक्षियों में लिंगभेद

यह लिंगभेद शब्दों अथवा शब्द रचना से इस प्रकार अभिव्यक्त होता है:

(क) *अलग अलग शब्दों से। जैसे गाय—स्त्रीलिंग और सांड—* पुल्लिंग।

(ख) शब्द रचना के विभिन्न रूपों से। जैसे बंदर (पु०)—बंदरी (स्त्री०), घोड़ा (पु०)—घोड़ी (स्त्री०), बकरा (पु०)—बकरी (स्त्री०), भेड़ (स्त्री०)—भेड़ा (पु०) भैंस (स्त्री०)—भैंसा (पु०) बाघ (पु०)—बाघिन

(स्त्री०), ऊट (पु०)—ऊटनी (स्त्री०), रीछ (पु०)—रीछनी (स्त्री०), मुर्गा (पु०)—मुर्गी (स्त्री०), मोर (पु०)—मोरनी (स्त्री०)।

पशुओ, पक्षियों और कृमि पतिंगों के अधिकतर संज्ञा शब्दों में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए जुडवा नाम नहीं हैं। उनमें से कोई केवल पुल्लिंगवाची होते हैं और दूसरे केवल स्त्रीलिंगवाची होते हैं। जैसे पुल्लिंगवाची निम्न ये शब्द हैं भेडिया, चीता, भालू पक्षी, उल्लू कौवा, खटमल आदि। स्त्रीलिंग-वाची निम्न शब्द हैं लोमडी, चिडिया, चील, कोयल, मक्खी, तितली आदि।

उक्त संज्ञा शब्दों का लिंगभेद प्राय सम्बन्धित संज्ञा शब्दों के साथ नर और मादा जैसे शब्दों के संयोजन से सहज ही अभिव्यक्त होता है। जैसे नर भेडिया—मादा भेडिया।

संज्ञा शब्दो के लिंग में अनियमितता

हिन्दी भाषा में कई कारणों से संज्ञा शब्दों के लिंग में अनियमितता दृष्टिगोचर होती है। कुछ संज्ञा शब्दों के लिंग प्राय अर्थ पर निर्भर नहीं करते और उनके संज्ञा शब्द उभयलिंगी होते हैं। यथा वसर, वायु आदि।

किन्हीं संज्ञा शब्दों के लिंग में अनियमितताएँ पर्यायवाची संज्ञा शब्दों के प्रभाव के परिणाम हैं। जैसे स्त्रीलिंगवाची 'लेखनी' शब्द के प्रभाव से उसका पर्यायवाची शब्द 'कलम' का स्त्रीलिंग में भी प्रयोग होता है। स्त्रीलिंगवाची 'भाँति' शब्द और पुल्लिंगवाची 'प्रकार' शब्द के प्रभाव से 'तर्ज' शब्द कभी स्त्रीलिंग में और कभी पुल्लिंग में व्यवहृत होता है। स्त्रीलिंगवाची 'सडक' शब्द और पुल्लिंगवाची 'मार्ग' शब्द के प्रभाव से ही दोनों लिंगों में 'बाट' शब्द का प्रयोग होता है। पुल्लिंगवाची 'प्रकार' शब्द के असर से स्त्रीलिंग वाची किस्म शब्द कभी कभी पुल्लिंग में भी बोला जाता है।

कभी लिंग में अनियमितताएँ किन्हीं संज्ञा शब्दों के भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयोग के कारण होती हैं। जैसे चन्द्रमा के अर्थ में 'चाँद' शब्द पुल्लिंग है, पर सिर के ऊपर के भाग के अर्थ में प्रयुक्त यही 'चाँद' शब्द स्त्रीलिंग में आता है। 'तारा' शब्द स्त्री के नाम के अर्थ में स्त्रीलिंग है पर नक्षत्र के अर्थ में पुल्लिंग है। लिंग में अनियमितताएँ इस कारण भी होती हैं कि कुछ पुरुष वाचक संज्ञा शब्दों में लिंगभेद नहीं होता है। ये संज्ञा शब्द प्राय पुल्लिंगवाची होते हैं, पर जब वे स्त्री का अर्थ देते हैं तब वे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे पुल्लिंगवाची 'यतीम', 'शागिर्द', 'मित्र' आदि शब्द स्त्री के प्रसंग में बोले जाते हैं।

अन्य भाषाओ से गृहीत शब्दो का लिंगभेद

हिन्दी भाषा म अन्य भाषाओं स अनगिनत शब्द आए हैं। विशेषकर बहुत शब्द सस्कृत से तत्सम या तदभव रूप म आए है। इसी तरह फारसी तथा अंग्रेजी से भी पर्याप्त सख्या म शब्द लिये गए हैं। फारसी के जरिये हिन्दी म अरबी शब्द भी आए।

पुल्लिगवाची और स्त्रीलिंगवाची सस्कृत शब्दो का लिंग प्राय सस्कृत के लिंग क अनुसार ही बना रहा। नीचे हम इस स्पष्ट करने के लिए तालिका देत हैं

शब्द	सस्कृत मे लिग	हिन्दी मे लिग
नियम	पुल्लिग	पुल्लिग
खण्ड	पुल्लिग	पुल्लिग
माया	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
इच्छा	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
रीति	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग

सस्कृत के नपुसक लिंगवाची शब्द हिन्दी म प्राय पुल्लिगवाची हो गए हैं। जसे

शब्द	सस्कृत मे लिंग	हिन्दी मे लिंग
दासत्व	नपुसक लिंग	पुल्लिग
रत्न	"	"
साहित्य	"	"
नत्य	"	"

किन्तु सस्कृत के कुछ सना शब्द विभिन्न कारणो स हिन्दी म अपना सस्कृत भाषानुसारी लिंग नही रख सके। जस

शब्द	सस्कृत में लिंग	हिन्दी मे लिंग
अग्नि	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
आत्मा	पुल्लिग	स्त्रीलिग
आयु	नपु सक लिंग	स्त्रीलिंग
जय	नपु सक लिंग	स्त्रीलिंग
देवता	स्त्रीलिग	पुल्लिग
देह	पुल्लिग और नपु सक लिंग	स्त्रीलिग
पुस्तक	नपुसक लिंग	स्त्रीलिग

वस्तु	नपुसक लिंग	स्त्रीलिंग
व्यक्ति	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
शपथ	नपुसक लिंग	स्त्रीलिंग

क्योंकि फारसी म लिंगभेद नही होता है अत फारसी शब्द हिंदी के दो लिंगो म से कोई एक लिंग ग्रहण कर लेत है। प्राय हिंदी भाषा म व अपने पर्यायवाची शब्द के सदृश लिंग ग्रहण कर लेते है। जैसे 'शब' शब्द रात शब्द के अनुकरण म स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त होने लगा। इसी तरह निम्न शब्द हिंदी मे अपने हिंदी पर्यायवाचियो के अनुसार लिंग मे प्रयुक्त होने लग। जैसे 'याद'—'धारणा' के कारण शम—'लज्जा के कारण जमीन'—भूमि' के कारण, और 'जबान — जिह्वा के कारण स्त्रीलिंग म बोले जान लग। इसी तरह 'खच शब्द—व्यय' के कारण पुल्लिंग मे हो गया है। अरबी शब्द प्राय हिन्दी म अपना लिंग नही बदलत है। जैसे हिदायत हिफाजत हालत, हुकूमत आदि स्त्रीलिंगवाची है। शक पक आदि पुल्लिंगवाची हैं।

हिंदी मे पर्यायवाची सज्ञा शब्दा के प्रभाव के कारण अरबी शब्दा मे भी लिंग सम्बन्धी अनियमितताएँ कभी कभी होती हैं। जस 'कलम' शब्द अरबी म पुल्लिंगवाची होता है, लेकिन हिन्दी में उसके पर्यायवाची 'लेखनी शब्द के प्रभाव से स्त्रीलिंग मे भी प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार स्त्रीलिंगवाची 'किस्म' शब्द हिंदी के पुल्लिंगवाची प्रकार शब्द से प्रभावित होकर पुल्लिंग म भी व्यवहृत होता है।

अंग्रेजी भाषा मे भी शब्दा के रूप स लिंगभेद प्रगट नही होता है। इसलिए अंग्रेजी शब्द हिन्दी म या तो सम्बन्धित हिंदी पर्यायवाची शब्द का लिंग ग्रहण कर लेते हैं या फिर अपन रूप के अनुसार लिंग स्वीकार कर लेते हैं। जस निम्न अंग्रेजी सज्ञा शब्दा ने हिंदी म पर्यायवाची शब्दा क लिंग ग्रहण कर लिए हैं

हिंदी शब्द	अंग्रेजी शब्द
जूता—पुल्लिंगवाची	बूट—पुल्लिंगवाची
दीया— ,,	लम्प— ,,
अक— ,,	नम्बर— ,,
दक्षिणा—स्त्रीलिंगवाची	फीस—स्त्रीलिंगवाची
सभा— ,,	मीटिंग— ,,

आकारान्त अंग्रेजी शब्द हिन्दी में पुल्लिंगवाची हो गए हैं। जैसे सोडा, डेल्टा कमरा आदि। अंग्रेजी संज्ञा शब्द जो हिन्दी में ईकारान्त हो गए हैं वे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे कम्पनी कमेटी चिमनी म्युनिसिपल्टी आदि।

अनेक अंग्रेजी संज्ञा शब्द हिन्दी में या तो पुल्लिंगवाची हो गए हैं (जैसे टिकट, नोट आदि) या स्त्रीलिंगवाची हो गए हैं (जैसे कांग्रेस कौंसिल, रिपोर्ट, अपील आदि)।

कई अंग्रेजी संज्ञा शब्द हिन्दी में दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे फिल्म कलाम टूनामेंट आदि।

वचन तथा कारक

हिन्दी में रूप परिवर्तन की दृष्टि से संज्ञा की विशेषता वचन और कारक में होती है। वचन और कारक के अनुसार संज्ञाओं का रूप परिवर्तन उनका प्रमुख पदरचना विषयक स्वरूप चिह्न होता है।

नीचे हम यह देखेंगे कि संज्ञाओं का रूप परिवर्तन वचन के अनुसार किस तरह होता है। संज्ञाओं के बहुवचन का निर्माण अमुक संज्ञा के एक वचन वाले लिंग और अन्त्य प्रत्ययों के अनुसार होता है किन्तु हिन्दी में सभी संज्ञाओं का वचन परिवर्तन नहीं होता है। कुछ ऐसी संज्ञाएँ हैं जो केवल एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं। इनमें निम्नलिखित हैं

१ अधिकांश पदार्थवाचक संज्ञा शब्द। जैसे चांदी सोना चाय दूध आटा आदि।

२ भाववाचक संज्ञा शब्द जो गुण विशेषता अवस्था व्यापार आदि धर्मों का निर्देश करते हैं। जैसे लम्बाई चौड़ाई मिठास दृढ़ता जवानी, पढ़ाई आदि।

हिन्दी में ऐसी संज्ञाएँ भी हैं जो भाववाचक अर्थ में केवल एकवचन में प्रयुक्त होती हैं परन्तु मूर्त रूपसूचक अर्थ में या गुण की अभिव्यक्ति में उनका बहुवचन भी प्रयुक्त होता है। जैसे

कविता	कविताएं
बीमारी	(छूत की) बीमारियां

३ अधिकांश व्यक्तिवाचक संज्ञाएं। जैसे दिल्ली ताजमहल कृष्ण आदि।

४ कुछ संज्ञाएँ जब समूहवाचक अर्थ में प्रयुक्त होती हैं (रुपया माल,

सामान, ताश आदि)। जैसे (१) कई लाख रुपया इस निर्माण कार्य में खर्च हो चुका है। (२) भारत में सोवियत संघ से कई तरह का माल आता है।

दूसरी ओर कुछ संज्ञाओं का केवल एकवचन होता है। उनमें निम्नलिखित का समावेश होता है

१ समूह विषयक वे संज्ञाएँ जो लोग गण, जन, वृन्द आदि शब्दों के साथ संयोजन से बनती हैं। जैसे किसान लोग, छात्रगण, स्त्रीजन, बालकवृन्द।

२ प्राण, दर्शन, होश तथा इस प्रकार की अन्य संज्ञाएँ (यद्यपि अर्थ के अनुसार उनका एकवचन में प्रयोग होना चाहिए)। जैसे (१) उसने मेरे प्राण बचाए। (२) बहुत दिनों से आपके दर्शन नहीं हुए। (३) उसके होश उड़ गए।

३ कुछ युग्म शब्द समुदाय, जब वे एक सी वस्तुओं के समूह का संकेत करते हैं। इस किस्म के शब्द समुदायों का प्रथम भाग एकवचन में तथा द्वितीय भाग बहुवचन में प्रयुक्त होता है। जैसे गाय भैंस, भेड़ बकरियाँ।

४ ऐसे संज्ञा शब्द जो समय की अवधियों तथा ऋतुओं का निर्देश करते हैं। जैसे छुट्टियाँ, गर्मियाँ, गर्मियों में जाड़ों में।

उपर्युक्त प्रकार के संज्ञा शब्द एकवचन में भी प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे छुट्टी, गर्मी, जाड़ा।

हिन्दी में संज्ञाओं का बहुवचन निम्नलिखित नियमों के अनुसार बनता है

(क) आकारान्त और आकारान्त को छोड़कर सब प्रकार की पुल्लिंग व्यंजनान्त व स्वरान्त संज्ञाओं का बहुवचन में रूप अपरिवर्तित रहता है। जैसे

एकवचन	बहुवचन
बाप	बाप
घर	घर
भाई	भाई
पति	पति
मालू	मालू
प्रस्ताव	प्रस्ताव

(ख) आकारान्त पुल्लिग सज्ञाओ म बहुवचन म आ के स्थान पर ऐ हो जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
बेटा	बेटे
कारखाना	कारखाने
गतका	गतके
मेला	मेले

संस्कृत फारसी और अरबी भाषाओ स हिंदी म आए पुल्लिग आकारान्त शब्द तथा सम्बन्धसूचक आकारान्त शब्द उक्त नियम के अपवाद हैं। जस

एकवचन	बहुवचन
आका	आका
खुदा	खुदा
दरिया	दरिया
नेता	नेता
राजा	राजा
पिता	पिता
चाचा	चाचा
मामा	मामा
दादा	दादा

पूर्वोक्त प्रकार की सज्ञाओ का वचन प्रसग म ही पता चलता है।

(ग) आकारान्त पुल्लिग वाले सज्ञा शब्दो म आ के स्थान पर एँ हो जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
कुआ	कुए
धुआँ	धुए
रोआ	रोए

(घ) इकारान्त स्त्रीलिंग वाले सज्ञा शब्द म इ के साथ या जुड जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
रीति	रीतियाँ

तिथि	तिथियाँ
पक्ति	पक्तियाँ

(ङ) ईकारान्त स्त्रीलिंग वाले सना शब्दो म ई' के साथ 'या जुड जाता है। या' जुडते वक्त दीघ ई लघु हो जाता है। जैसे

एकवचन	बहुवचन
बेटी	बेटिया
लडकी	लडकिया
नदी	नदिया
खिडकी	खिडकिया

(च) 'इया' जिन स्त्रीलिंग वाले सना-शब्दो के अन्त म होता है उनका अन्तिम आ' बहुवचन म अनुनासिक हो जाता है। जमे

एकवचन	बहुवचन
चिडिया	चिडियाँ
बुढिया	बुढियाँ
पुडिया	पुडियाँ
डिबिया	डिबियाँ

(छ) 'इ, ई और 'इया जिन स्त्रीलिंग शब्दो के अन्त म आता है उन्ह छोडकर अन्य सब व्यजनान्त व स्वरान्त सना शब्दो म 'एँ या 'यें लग जाता है। ऊकारान्त स्त्रीलिंग सना शब्दो के बहुवचन मे दीघ 'ऊ लघु उ हो जाता है। जैसे

एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ
यात्रा	यात्राएँ
सेना	सेनाएँ
वस्तु	वस्तुएँ
बहन	बहनें
पुस्तक	पुस्तकें
बहू	बहुएँ
लू	लुएँ
जोरू	जोरुएँ

हिन्दी भाषा म सनाएँ अपने लिंग और प्रत्ययान्तो के अनुसार वाक्यो म अपने रूप बदलती हैं।

कारक नामिक शब्दों का वह रूप होता है जो शब्द समुदाय में तथा वाक्य में अन्य शब्दों के प्रति नामिक शब्दों के सम्बन्ध व्यक्त करता है। वाक्य के किसी अंग के रूप में नामिक शब्द का प्रयोग सदा किसी न किसी कारक के रूप में होता है।

हमारे मतानुसार हिन्दी के संज्ञा शब्दों के तीन कारक होते हैं—सामान्य कारक (डायरेक्ट केस) असामान्य कारक (इनडायरक्ट केस) तथा सम्बोधन कारक।

सामान्य कारक के विशेष प्रत्यय नहीं होते हैं जो वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ संज्ञा शब्द का सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। ये सम्बन्ध वाक्य में केवल संज्ञा शब्द के स्थान से पता चलते हैं।

हिन्दी में सामान्य कारक **असामान्य कारक** के विपरीत होता है। असामान्य कारक कम विशेषताबोधक तथा गुणनिर्देशक विषयक सम्बन्धों को व्यक्त करता होता है।

हिन्दी में असामान्य कारक प्रायः स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त नहीं होता है। वह लगभग सदा किसी न किसी विभक्ति चिह्न के साथ व्यवहृत होता है जो असामान्य कारक के व्यापक अर्थ को सीमित तथा मूर्त बना देता है। जैसे लड़के का लड़के को लड़के पर आदि। परन्तु किसी न किसी विभक्ति चिह्न के साथ संज्ञा का प्रयोग कारक रूप नहीं है क्योंकि विभक्ति चिह्न कारक प्रत्यय नहीं हैं वे स्वतन्त्र रूप से वाक्य में अन्य शब्दों के साथ संज्ञा के सम्बन्धों को निर्दिष्ट नहीं करते हैं। ये सम्बन्ध असामान्य कारक के विभक्ति चिह्न के संयोजन से ही निर्दिष्ट होते हैं।

हिन्दी में ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिनमें असामान्य कारक विभक्ति चिह्न के बिना प्रयुक्त होते हैं। ऐसा होता है कि कुछ विशेषताबोधक शब्द समुदायों में क्रियानामिक समुदायों में गतिबोधक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होते समय और असामान्य कारक में संज्ञाओं का दूसरे शब्द भेदों में (क्रियाविशेषणों और विभक्ति चिह्नों में) संक्रमण होते समय। जैसे इस समय पिछले साल भूखों मरना अपनी आंखों देखना नाकों चने चबवाना अपने घरों जाना सवेरे दिनों दिन *खुद हाथों के सामने।*

सम्बोधन कारक संज्ञा का ऐसा रूप है जिसके द्वारा किसी को पुकारना या चेताना सूचित होता है।

कारकों का निर्माण

सामान्य कारक

सामान्य कारक एकवचन का रूप संज्ञा के उस रूप से मिलता है जो शब्दकोश में दिया गया होता है। सामान्य कारक बहुवचन के रूप संज्ञा के वही बहुवचन रूप हैं जिनका रूप विश्लेषण किया जा चुका है।

असामान्य कारक

संज्ञा का असामान्य कारक एकवचन निम्नलिखित नियमों के अनुसार बनता है

(क) पुल्लिंग आकारान्त और आँकारान्त संज्ञाओं में असामान्य कारक के एकवचन में आ तथा आँ के स्थान पर ए और एँ हो जाते हैं। अर्थात् एकवचन में इस प्रकार की संज्ञाओं के सामान्य कारक रूप बहुवचन में संज्ञाओं के सामान्य कारक रूप से मिलते-जुलते हैं। जैसे

एकवचन

सामान्य कारक	असामान्य कारक
लड़का	लड़के
कमरा	कमरे
कुआँ	कुएँ

(ख) एकवचन वाले असामान्य कारक का रूप एकवचन वाले सामान्य कारक के रूप से निम्न प्रकार के संज्ञा शब्दों में मिलता-जुलता होता है

(१) सारे स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों तथा पुल्लिंग संज्ञा-शब्दों में (आकारान्त तथा आँकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों को छोड़कर) जैसे

सामान्य कारक	असामान्य कारक
बहन	बहन
लड़की	लड़की
माया	माया
दुनिया	दुनिया
घर	घर

(२) आकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों में जो हिन्दी में संस्कृत, फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी से आए हैं। जैसे

सामान्य कारक	असामान्य कारक
राजा	राजा
खुदा	खुदा
सोडा	सोडा

(३) पुल्लिंग संज्ञा शब्दों में जो पारिवारिक सम्बन्ध का संकेत करते हैं। जैसे

सामान्य कारक	असामान्य कारक
दादा	दादा
नाना	नाना
मामा	मामा

दोनों लिंगों वाले संज्ञा-शब्दों का बहुवचन असामान्य कारक रूप 'ओं' प्रत्यय द्वारा बनता है। यह प्रत्यय या तो संज्ञा के मूल रूप के साथ जुड़ जाता है या संज्ञा के बहुवचन सामान्य कारक रूप के प्रत्यय के स्थान पर आ जाता है। ईकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों में बहुवचन असामान्य कारक में प्रयुक्त होने समय 'ओं' प्रत्यय से पहले 'य' वर्ण का आगम हो जाता है तथा अंतिम दीर्घ 'ई' लघु 'इ' में बदल जाता है। 'ओं' प्रत्यय से पूर्व पुल्लिंग संज्ञा शब्दों का 'ऊ' भी लघु 'उ' में बदल जाता है। जैसे

एकवचन सामान्य कारक	बहुवचन सामान्य कारक	बहुवचन असामान्य कारक
अध्यापक	अध्यापक	अध्यापकों
भाई	भाई	भाइयों
विद्यार्थी	विद्यार्थी	विद्यार्थियों
पिता	पिता	पिताओं
बेटा	बेटा	बेटों
कुआँ	कुएँ	कुओं
बहन	बहनें	बहनों
बेटी	बेटियाँ	बेटियों
चिड़िया	चिड़िया	चिड़ियों
बहू	बहुएँ	बहुओं
डाकू	डाकू	डाकुओं

सम्बोधन कारक

आकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों को छोड़कर सारे संज्ञा-शब्दों का एक

वचन सम्बोधन कारक रूप एकवचन सामा य कारक रूप स मिलता जुलता है। जस

एकवचन

सामा य कारक	सम्बोधन कारक
माई	माई !
बेटी	बेटी !
बहन	बहन !
दादा	दादा !
राजा	राजा !

आकारान्त पुल्लिग सज्ञा शब्द (उन सज्ञा शब्दो को छोडकर जो पारिवारिक सम्बन्ध व्यक्त करते है या दूसरी भाषाओ से आए है) एकवचन सम्बोधन कारक म या तो अपरिवर्तित रहत ह या आ क स्थान पर ए हो जाता है। जस

एकवचन

सामा य कारक	सम्बोधन कारक
लडका	लडका ! लडके !
बेटा	बेटा ! बेटे !
बच्चा	बच्चा ! बच्चे !

सज्ञा लिगो क सज्ञा शब्दो का बहुवचन सम्बोधन कारक 'ओ प्रत्यय द्वारा बनता है। ओ प्रत्यय या तो सीधे सज्ञा क मूल रूप म जुड जाता है या बहुवचन सामा य कारक क अन्त्यप्रत्यय क स्थान पर आ जाता है। बहुवचन सम्बन्ध कारक बनते समय इकारात सज्ञा शब्दो म ओ प्रत्यय स पहले 'य वर्ण आ जाता है और दीर्घ ई ह्रस्व इ' बन जाती है। ओ प्रत्यय स पहले पुल्लिगवाची सज्ञा-शब्दो का अन्तिम ऊ' भी ह्रस्व हो जाता है। जैसे

सामा य कारक (एकवचन)	सामा य कारक (बहुवचन)	सम्बोधन कारक (बहुवचन)
अध्यापक	अध्यापक	अध्यापको !
विद्यार्थी	विद्यार्थी	विद्यार्थियो !
पिता	पिता	पिताओ !
बेटा	बेटे	बेटो !

बहन	बहनें	बहनो !
बेटी	बेटियां	बेटियो !
डाकू	डाकू	डाकुओ !

सम्बोधन कारक म सज्ञा शब्दो स पहले प्राय य विस्मयादिबोधक शब्द प्रयुक्त होत हैं—ह ओ ए अजी, र (पु०) अरे (पु०) री (स्त्री०), अरी (स्त्री०)। जसे ओ लडक ! तू कहा जाता है ?

व्यक्तिवाचक सज्ञा शब्द प्राय अपने मूल सज्ञा रूप म ही प्रयुक्त होत हैं अथात उनक कोई कारक सम्बन्धी प्रत्यय नही होते हैं।

सामान्य तथा असामान्य कारक मे सज्ञा शब्दो का प्रयोग

सामान्य कारक म सज्ञा शब्दो का प्रयोग होता है—

(क) उद्देश्य के रूप म। जसे बहन पुस्तक पढती है।

(ख) विभिन्न विधेया के नामिक अगा क रूप म। जैस (१) मरा मित्र अध्यापक बन गया है। (२) भगत लोग उसे पीर मानत थे। (३) जिन लोगा न इस राजनीतिक पतरेबाजी कहा था जब यह सहायता हिन्दुस्तान की सरकार को बाँटने क लिए द दी गई तो उनके मुह स बोल भी न फूटा।

(ग) प्रधान कम के रूप म। जसे वह उठी और दरवाजा अन्दर स बन्द किया।

(घ) परिमाण व भार निर्देशक के रूप म। जसे स्टेशन पर तीन टन गेहूँ पडा है।

(ङ) समानाधिकरण क रूप मे। जैस डाक्टर साहब अभी नही आय।

असामान्य कारक म सज्ञा शब्दो का प्रयोग निश्चित विभक्ति चिह्न पर निभर करता है।

असामान्य कारक का विभक्ति चिह्न सहित सज्ञा शब्द प्राय गुण निर्देशक का काय करता है तथा सम्बन्ध का अथ दता है। जस—उसन मुझे मित्र का घर दिखाया।

असामान्य कारक म को विभक्ति चिह्न सहित सज्ञा शब्द प्रधान कम या अप्रधान कम का काय करता है तथा कम या सम्प्रदान का अथ सूचित करता है। जैस (प्रधान कम) उसने मोहिनी को बुलाकर पूछा क्या री जितेन के बारे म तुझे कुछ मालूम है ?'

अप्राणीवाचक सज्ञा शब्द प्राय प्रधान कम क रूप म सामान्य कारक

में प्रयुक्त होते हैं। जैसे देर तक अखबार वह दृष्टि के सामने लिये रहा।

अप्राणीवाचक संज्ञा शब्द 'को' सहित असामान्य कारक में प्रधान कर्म के रूप में तब प्रयुक्त होते हैं जब प्रधान कर्म पर जोर दिया जाता है या दुविधा को दूर करना होता है। जैसे (१) उसने अपने मुँह को छिपाया और धीमे धीमे सिसक उठी। (२) नदी के उस पार में घरों को देखता हूँ। अगर इस अंतिम वाक्य में 'को' न होता तो प्रधान कर्म का रूप घर होता और उससे यह संदेह हो सकता था कि शायद एक ही घर देखा जा रहा है क्योंकि एकवचन और बहुवचन दोनों में ही घर यह रूप होता है।

प्राणीवाचक संज्ञा शब्द प्रधान कर्म के रूप में प्राय 'को' सहित असामान्य कारक में प्रयुक्त होते हैं। जैसे किसी अपने पुराने सहपाठी सहाय को वह ध्यान में नहीं ला पाती थी (अप्रधान कर्म)। दैनिक व्यायाम मनुष्य के शरीर को बल देता है।

अप्रधान कर्म के रूप में सम्प्रदान का अर्थ के लिए, के वास्ते के हेतु, के निमित्त', के पास' यहाँ तक कि को विभक्ति चिह्न सहित भी *असामान्य कारक में संज्ञा शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।* जैसे—केन्द्र ने अकालपीड़ितों के लिए सहायता भेजी है। (२) करीम ने राम के हेतु अपना हिस्सा छोड़ दिया। (३) *मातृभूमि की सेवा के निमित्त वह अपना* सर्वस्व दे रहा है। (४) मैं भाई के पास चिट्ठी भेज रहा हूँ। (५) *नगर सहायता समिति का केन्द्र आजमगढ़ शहर और आसपास के क्षेत्रों में बाढ़-पीड़ितों की मदद करता है।*

असामान्य कारक में से, को, 'द्वारा, के द्वारा', के जरिये', 'की ओर से' तथा 'की तरफ से विभक्ति चिह्नों सहित संज्ञा शब्द करण का बोध कराते है तथा वाक्य में अप्रधान कर्म का कार्य करते हैं।

करण के अर्थ में उपरोक्त विभक्ति चिह्नों सहित असामान्य कारक के संज्ञा शब्दों का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(१) 'से विभक्ति चिह्न के साथ अधोलिखित प्रयोग।

(क) प्रेरणार्थक क्रियाओं के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए। जैसे आपने यह कोट किस दर्जी से सिलवाया है?

(ख) कर्मवाच्य वाक्यों में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए। जैसे राम से यह घर रचा गया है।

(ग) उन कर्तृवाच्य वाक्यों में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए जिनमें विधेय अकर्मक क्रिया वाले होते हैं। जैसे ओला

बहन	बहनें	बहनो !
बेटी	बेटियां	बेटियो !
डाकू	डाकू	डाकुओ !

सम्बोधन कारक म सना श न स पह प्राय ये विस्मयादिबोधक श द प्रयुक्त होत है—ह आ ए अजी र (पु०) अरे (पु०) री (स्त्री०), अरी (स्त्री०)। जैसे ओ लडके ! तू कहा जाता है ?

व्यक्तिवाचक सना शब्द प्राय अपन मूल सना रूप म ही प्रयुक्त होत है अथात उनके कोई कारक सम्ब धी प्र यय नही होते है।

सामा य तथा असामा य कारक मे सज्ञा शब्दा का प्रयोग

सामा य कारक म सना श दा का प्रयोग होता है—

(क) उद्देश्य क रूप म। जसे बहन पुस्तक पढती है।

(ख) विभिन्न विधेया क नामिक अगा क रूप म। जैस (१) मेरा मित्र *अध्यापक बन गया है।* (२) *भगत लोग उसे पीर मानते थे।* (३) जिन लोगा न इसे राजनानिक पतरेबाजी कहा था, जब यह सहायता हिन्दुस्तान की सरकार को बाटने क लिए दे दी गई तो उनके मुह से बोल भी न फूटा।

(ग) प्रधान कम के रूप म। जस वह उठी और दरवाजा अदर से ब द किया।

(घ) परिमाण व भार निर्देशक क रूप म। जस स्टेशन पर तीन टन गेहूँ पडा है।

(ङ) समानाधिकरण के रूप म। जस डाक्टर साहब अभी नही आय।

असामा य कारक म सना श दा का प्रयोग निश्चित विभक्ति चिह्न पर निभर करता है।

असामा य कारक का विभक्ति चिह्न सहित सना श द प्राय गुण निर्देशक का काय करता है तथा सम्ब ध का अथ देता है। जसे—उसने मुझे मित्र का घर दिखाया।

असामा य कारक म 'को' विभक्ति चिह्न सहित सना श द प्रधान कम या अप्रधान कम का काय करता है तथा कम या सम्प्रदान का अथ सूचित करता है। जस (प्रधान कम) उसने मोहिनी को बुलाकर पूछा क्या री, जितेन के बारे म तुझे कुछ मालूम है ?"

अप्राणीवाचक सना श द प्राय प्रधान कम क रूप म सामा य कारक

मे प्रयुक्त होने है। जैसे दर तक अखबार वह दृष्टि के सामन लिये रहा।

अप्राणीवाचक सना शब्द 'का' सहित असामान्य कारक म प्रधान कम के रूप म तब प्रयुक्त होत है जब प्रधान कम पर जोर दिया जाता है या दुविधा को दूर करना होता है। जैस (१) उसन अपने मुह को छिपाया और धीमे धीमे सिसक उठा। (२) नदी के उस पार मैं घरो को देखता हू। अगर इस अतिम वाक्य मे को न होना तो प्रधान कम का रूप घर' होता और उससे यह सदेह हो सकता था कि शायद एक ही घर देखा जा रहा है क्योकि एकवचन और बहुवचन दोनो म ही घर' यह रूप होता है।

प्राणीवाचक सना शब्द प्रधान कम के रूप म प्राय 'को' सहित असामान्य कारक म प्रयुक्त होन है। जैस किन्ही अपन पुराने सहपाठी सहाय को वह ध्यान म नही ला पाती थी (अप्रधान कम)। दैनिक व्यायाम मनुष्य के शरीर को बल दता है।

अप्रधान कम क रूप म सम्प्रदान का अथ के लिए के वास्त' के हतु 'क निमित्त क पास यहा तक कि का विभक्ति चिह्न सहित भी असामान्य कारक म सना शब्दो द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जसे—केन्द्र न अकालपीडितो क लिए सहायता भेजी है। (२) करीम न राम के हतु अपना हिस्सा छोड दिया। (३) मातृ भूमि की सवा के निमित्त वह अपना सवस्व दे रहा है। (४) म भाई के पास चिट्ठी भेज रहा हूँ। (५) नगर सहायता समिति का केन्द्र आजमगढ शहर और आसपास के क्षत्रो म बाढ-पीडितो की मदद करता है।

असामान्य कारक म स' का' द्वारा क द्वारा क जरिय, 'का ओर स' तथा 'का तरफ मे विभक्ति चिह्न सहित सनाशब्द करण का बोध' कराते है तथा वाक्य म अप्रधान कम का काय करत हैं।

करण क अथ म उपरोक्त विभक्ति चिह्न सहित असामान्य कारक क सनाशब्दो का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(१) 'स विभक्ति चिह्न के साथ अधोलिखित प्रयोग।

(क) प्रेरणायक क्रियाओ क व्यापार क कता को व्यक्त करन क लिए। जैस आपन यह कोट किस दर्जी से सिलवाया है ?

(ख) कमवाच्य वाक्यो म क्रिया के व्यापार क कता को व्यक्त करन क लिए। जैस राम से यह घर रखा गया है।

(ग) उन कतृ वाच्य वाक्यो म क्रिया क व्यापार क कता को व्यक्त करन के लिए जिनम विधेय अकमक क्रिया वाले होते हैं। जैसे उन्हो

की कड़ाफड़ मार से झामाभूमी गाँव मुखरित हो उठा ।

(घ) कर्तृवाच्य वाक्या म साधन का व्यक्त करने क लिए। जस विद्यार्थी तख्त पर खड़िया से लिखता है ।

(ङ) कमवाच्य वाक्या म साधन को व्यक्त करने के लिए। जस त" का कुआँ खुद जाने पर तल पम्प से निकाला जाता है ।

(२) 'का विभक्ति चिह्न क साथ प्रयाग। सकमक भूतकालिक कृदन्ता क कर्ता का व्यक्त करने के लिए। जसे हमार शिक्षक की लिखी हुई पुस्तक है ।

(३) द्वारा क द्वारा तथा के जरिय विभक्ति चिह्ना के साथ प्रयोग ।

(क) प्ररणायक क्रियाओ क व्यापार क कर्ता का व्यक्त करन क लिए। जस यह पत्र वहन द्वारा (के द्वारा) (क जरिये) लिखाओ ।

(ख) कमवाच्य वाक्या म क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करन क लिए। जस दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा द्वारा दक्षिण भारत म हिन्दी का अधिक प्रचार करन का निश्चय किया गया है ।

(ग) उन कर्तृवाच्य वाक्यो म व्यापार के कर्ता को व्यक्त करन क लिए जिनम विधेय अकमक क्रिया वा" होत है। जस मक्खियों के जरिये (द्वारा) हैजा दस्त आदि बीमारियाँ फैलती है ।

(घ) कर्तृवाच्य वाक्या म साधन का व्यक्त करने के लिए। जस व हवाई जहाज द्वारा (के जरिये) मास्को गय ।

(ङ) कमवाच्य वाक्या म साधन को व्यक्त करने के लिए। जस (१) सैकडो हजारा एकड ऊसर जमीन को जहाँ पानी का नामोनिशान तक न था समुचित सिंचाई द्वारा हरा भरा बना दिया गया है। (१) मिट्टी का तल मशीनों के जरिये साफ किया जाता है।

(४) का ओर स तथा की तरफ से विभक्ति चिह्ना के साथ प्रयाग—

(क) कमवाच्य वाक्या म क्रिया क व्यापार क कर्ता का व्यक्त करन के लिए। जैसे (१) इस नगर की स्थानीय शाखा की ओर से पन्द्रह अगस्त की स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। (२) गुलाम बनाया गई यूरोपीय कौमों की तरफ से हिटलर क विरुद्ध भारी सघष छेडा गया था ।

(ख) कर्तृवाच्य वाक्या म क्रिया के व्यापार क कर्ता को व्यक्त करन क

लिए। जैसे (१) सहायता समिति की ओर से जिले में तीन केन्द्र बनाकर काम हो रहे हैं। (२) फिरोज़ाबाद के मजदूरों की तरफ से सात नवम्बर को एक आम सभा हुई।

असामान्य कारक में 'पर', 'का', 'में', 'की बनिस्वत' विभक्ति चिह्नों तथा 'के बारे में', 'के विषय में', 'के सम्बन्ध में' विभक्तिचिह्नवाचक शब्द-समुदायों सहित संज्ञा शब्द अधिकरण का बोध व्यक्त करते हैं। वाक्य में ये संज्ञा-शब्द अप्रधान कर्म का काम किया करते हैं।

अधिकरण के अर्थ में उपरोक्त विभक्ति चिह्नों तथा विभक्ति चिह्न वाचक शब्द समुदायों सहित असामान्य कारक के संज्ञा शब्दों का निम्नलिखित प्रयोग होता है

(१) पर विभक्ति चिह्न के साथ प्रयोग—

(क) जिसके विषय में बात है उसे व्यक्त करने के लिए। जैसे किसानों के संघर्ष पर शानदार फिल्म 'ज़माना बदल गया है'।

(ख) क्रिया के व्यापार या अवस्था का स्थान व्यक्त करने के लिए। जैसे (व्यापार) सिपाही तट पर उतरने लगे। (अवस्था) किताब इस मेज़ पर रखी है।

(ग) जिसके ऊपर किसी का कोई व्यापार होता है उस व्यक्ति या वस्तु को व्यक्त करने के लिए। जैसे बहुत अरसे से साम्राज्यवादी एशिया में अपने लिए नई तिजारती मण्डियाँ ढूंढ रहे थे और एशिया के देशों पर अपनी लालची निगाह जमाये बैठे थे।

(२) का विभक्ति चिह्न के साथ प्रयोग—

(क) जिसके विषय में बात है उसे व्यक्त करने के लिए। जैसे (१) वे दोनों चुप हो गए और बैठे भविष्य के सुनहरे सपने देखने लगे। (२) हर महीने उसे मंगनी के बाप के एक-दो पत्र आ जाते थे जिनमें उसकी आने वाली शादी की चर्चा होती थी।

(३) 'में' विभक्ति चिह्न के साथ प्रयोग—

(क) क्रिया के व्यापार का स्थान या समय व्यक्त करने के लिए। जैसे (स्थान) उस समय रवी घर में नहीं था, वह वाटिका में फूल तोड़ रहा था। (समय) मार्च के अन्त में लेखकों का सम्मेलन होने वाला है।

(ख) परिधान को दिखाने के लिए। जैसे अब तो गरमी लगती है। पिताजी भी आज केवल कमीज़ और धोती में काम पर गये हैं।

(४) जिस व्यक्ति या वस्तु पर बात हो रही है उसे व्यक्त करने के लिए 'के बारे में', 'के विषय में', 'के सम्बन्ध में' विभक्तिवाचक शब्द समुदायों तथा 'की निस्बत' आदि विभक्ति चिह्न के साथ प्रयोग। जैसे (१) जितेन के बारे में तुझे कुछ मालूम है। (२) ताजमहल की सुन्दरता के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। (३) इस आदमी की निस्बत में कुछ नहीं जानता।

संज्ञा शब्दों की पुनरुक्तियाँ

हिन्दी में शब्दों पर बल देने का सबसे प्रचलित साधन है शब्दों की पुनरुक्ति अर्थात् उन्हें दोहराना। यह हिन्दी भाषा की उल्लेखनीय विशेषता है। शब्दों की पुनरुक्तियाँ साहित्य तथा बोलचाल दोनों में ही व्यवहृत होती है।

शब्दों की पुनरुक्ति वाले शब्दों का भाव अधिक स्पष्ट एवं जोरदार हो जाता है। प्रसंग के अनुसार उनसे पूर्णता, अखण्डता, बहुवचन तथा विभाजन का निर्देश होता है। हिन्दी में योजक अव्ययों तथा निपात अव्ययों को छोड़कर बाकी सब शब्द भेदों में पुनरुक्तियाँ व्यवहृत होती है।

हिन्दी में संज्ञाओं की तीन प्रकार की पुनरुक्तियाँ होती हैं—

(१) पूर्ण पुनरुक्ति (२) अपूर्ण पुनरुक्ति और (३) समानार्थक पुनरुक्ति।

पूर्ण पुनरुक्ति कहते हैं ऐसी आवृत्ति को जिसमें किसी एक संज्ञा शब्द की आवृत्ति होती है। जैसे अब्बा, अब्बा! मुझे भी अपने साथ लो।

हिन्दी में उक्त प्रकार की पुनरुक्तियाँ निम्न अर्थों में व्यवहृत होती है—

(क) सम्बोधन को अधिक सशक्त बनाने के लिए। जैसे रमेश रमेश! इधर आओ।

(ख) बहुवचन पूर्णता तथा विभाजन को व्यक्त करने के लिए। जैसे देश-देश बार बार स्थान-स्थान समय समय।

ऊपर वर्णित पुनरुक्तियों के साथ साथ हिन्दी में संज्ञाओं की ऐसी पूर्ण पुनरुक्तियों का प्रयोग बहुत व्यापक रूप से होता जिनमें संज्ञाओं के मध्य में फारसी से आया ब उपसर्ग हो और सा निपात तथा 'का' और पर विभक्ति चिह्नों का आगम होता है।

पर विभक्ति चिह्न संज्ञाओं के मध्य में या संज्ञाओं की पुनरुक्ति के पश्चात् प्रयुक्त होता है।

ब उपसर्ग तथा पर विभक्ति चिह्न वाली संज्ञाओं की पूर्ण पुनरुक्तियाँ

सामान्यता तथा आवृत्ति का प्रकट करती है। वे प्राय विभाजन अर्थ वाली होती हैं। जैसे रोजनरोज साल्वसाल दिन पर दिन कदम पर कदम, कदम-कदम पर, समय समय पर।

ही निपात वाली सज्ञाओ की पूर्ण पुनरुक्तिया प्रसगानुसार या तो विभाजनसूचक होती हैं या पुनरुक्ति म प्रयुक्त सज्ञा पर जोर द रही होती है। जसे बात ही बात पानी ही पानी, रत ही रत विजय ही विजय।

'सा निपात वाली सज्ञाओ की पूर्ण पुनरुक्तिपरक आवृत्तिया सामान्यता और समानता का भाव प्रकट करती हैं। जैसे घर सा घर मित्र सा मित्र, गली सी गली।

'का (के की) विभक्तिचिह्न वाली सज्ञाओ की पूर्ण पुनरुक्तिया निम्न भाव प्रकट करती है

(क) पूर्णता और सज्ञाओ को अधिक सशक्त बनाना यदि पुनरुक्ति म 'का (की, के) विभक्तिचिह्न के पश्चात प्रयुक्त सज्ञा सामान्य कारक म है। जस माल का माल घर का घर, पानी का पानी पल्टन की पल्टन झुण्ड के झुण्ड। इन सबम का, 'का , 'क' विभक्ति चिह्नो का प्रयोग पूर्णता के लिए व्यवहृत हुआ है।

(ख) विभाजन या सज्ञाओ को अधिक सशक्त बनाना यदि पुनरुक्ति म 'का' (की के) विभक्तिचिह्न के पश्चात प्रयुक्त सज्ञा असामान्य कारक म विभक्तिचिह्न के साथ या उसके बिना व्यवहृत है। जैसे साल के साल महीने के महीने, बात की बात म दम के दम म।

अपूर्ण पुनरुक्ति कहत हैं ऐसी आवृत्ति को जिसम आवृत्ति का पूर्व या उत्तर भाग स्वय प्रयुक्त नही होता है, किन्तु उत्तर भाग म जुडकर इस प्रकार म आवत्त होता है जो आवृत्ति के पूर्व या उत्तर भाग को सशक्त बना देता है। जस अदला बदला अडोस पडोस। उक्त प्रकार की पुनरुक्तिया म पहला भाग स्वय प्रयुक्त नही होता है वह केवल आवृत्ति के उत्तर भाग को अधिक सशक्त बनाता है यद्यपि उसका भी स्वतन्त्र अर्थ नही होता है।

निम्नलिखित अपूर्ण पुनरुक्तिया म उत्तर भाग स्वतन्त्र एव पृथक प्रयुक्त नही होता है। जैसे छूतछात, पूछताछ धूमधाम।

अपूर्ण पुनरुक्तिपरक सज्ञाओ की आवृत्तिया ऐसी भी समझी जाती हैं जिनम पूर्व भाग म प्रथम व्यजना के स्थान पर 'म 'व तथा 'स व्यजन प्रयुक्त होत हैं। इस प्रकार की पुनरुक्तिया सज्ञा को अधिक सशक्त बनान के अलावा

उनका बहुवचन भी प्रकट करती है। जैसे मिठाई सिठाई, खाना वाना रोटी वोटी, पानी वानी झूठ मूठ।

समानार्थक पुनरुक्ति कहते है एसी आवृत्ति को जिसमे प्रत्येक भाग का अपना अर्थ होता है और पुनरुक्ति के बिना भी वह भाग प्रयुक्त हो सकता है। समानार्थक पुनरुक्तिया हिन्दी मे बहुत अधिक प्रचलित है। वे या तो अपने भागो के अर्थों को सशक्त बनाती है या समूह का भाव व्यक्त करती हैं। जैसे रग-ढग (रग और ढग), आदर सम्मान (आदर और सम्मान) कूडा-कचरा (कूडा और कचरा) नौकर चाकर (नौकर और चाकर)।

सज्ञाओ की समानार्थक पुनरुक्तियो मे निम्न शब्द आ सकते हैं

(क) सस्कृत तत्समो के दो समान शब्द। जैसे सम्बन्ध-सम्पर्क (सम्बन्ध और सम्पर्क) धन सम्पत्ति (धन और सम्पत्ति) आचार-व्यवहार (आचार और व्यवहार)।

(ख) अरबी और फारसी के दो समान शब्द। जैसे शोर गुल (शोर और गुल) खता कसूर (खता और कसूर) कौल-करार (कौल और करार), साज सामान (साज और सामान)।

(ग) हिन्दी के दो समान शब्द। जैसे ओढना बिछौना (ओढना और बिछौना), आन मान (आन और मान) सुध बुध (सुध और बुध)।

(घ) हिन्दी की क्रिया की दो धातुएँ जो समान शब्दो के अर्थ मे प्रयुक्त होती है। जैसे मार-पीट (मारना और पीटना) चीर फाड (चीरना और फाडना) चीख पुकार (चीखना और पुकारना)।

(ङ) हिन्दी शब्द और सस्कृत तत्सम शब्द। जैसे सोच विचार (सोच और विचार) जड मूल (जड और मूल)।

(च) अरबी फारसी शब्द और सस्कृत तत्सम या हिन्दी शब्द। जैसे सर सपाटा (सर और सपाटा), चीज वस्तु (चीज और वस्तु) शादी विवाह (शादी और विवाह) आब-पानी (पानी और आब) किस्सा-कहानी (किस्सा और कहानी)।

(छ) सस्कृत तत्सम शब्द या हिन्दी शब्द और अरबी या फारसी शब्द। जैसे सेवा चाकरी (सेवा और चाकरी) धन दौलत (धन और दौलत) बाल बच्चे (बाल और बच्चे), भाई बिरादर (भाई और बिरादर)।

वाक्य मे सज्ञाओ की पुनरुक्तिया प्रयुक्त होती है—

(क) उद्देश्य के रूप मे। जैसे उन्होने सोचा था कि सब जगह उनकी

विजय-ही विजय होगी। उसके पास न धन दौलत है न महल अटारियां न नौकर-चाकर हैं।

(ख) कर्म के रूप में। जैसे पाई-पाई मुझे पसीने के बल कमानी होती है।

(ग) गुणनिर्देश के रूप में। जैसे इस घटना में देश-देश की आम जनता का दिल अपार उत्साह से भरा है।

(घ) विधेयक के अंग के रूप में। जैसे ये लड़के-लड़कियां उसके बाल-बच्चे हैं।

(ङ) विभिन्न प्रकार के विशेषणाबोधकों के रूप में। जैसे (१) मोहेनजोदारो में जगह-जगह पक्के हौज भी मिलते हैं। (२) मैंने उसका घर घर तलाश किया। (३) इस सम्मेलन के लिए विश्व के कोने-कोने से प्रतिनिधि आये हैं। (४) समय-समय वह भारत आता है। (५) बात-ही-बात में झगड़ने लगते हैं। (६) बात-की-बात में हवाई जहाज दृष्टि से ओझल हो गया।

संज्ञा शब्दों की निश्चितता तथा अनिश्चितता की अभिव्यक्ति

(१) हिंदी में व्यक्ति या वस्तु की अनिश्चितता 'एक' संख्यावाचक शब्द तथा 'कोई', 'कुछ', 'कतिपय', 'कई', 'चन्द', आदि अनिश्चयवाचक सर्वनामों द्वारा व्यक्त की जाती है।

(क) संख्यावाचक शब्द 'एक' का प्रयोग एकवचन में अनिश्चितता सूचित करने के लिए होता है। जैसे (१) तुम्हारे यहाँ एक आदमी आया है। (२) यहाँ एक लड़का है।

(ख) 'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम एकवचन या बहुवचन दोनों में ही अनिश्चितता का सूचक है। जैसे (१) कोई औरत आपकी प्रतीक्षा कर रही है। (२) वहाँ कोई मजदूर है।

(ग) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम गणनीय तथा अगणनीय संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है। गणनीय संज्ञा-शब्दों के साथ प्रयोग में 'कुछ' सर्वनाम का अर्थ होता है 'कई' या 'थोड़ा'। जैसे (१) मेज पर कुछ पुस्तकें पड़ी हैं। (२) मेरे पास कुछ रुपये हैं।

अगणनीय संज्ञा शब्दों के साथ प्रयोग में 'कुछ' सर्वनाम का अर्थ होता है 'थोड़ा-सा'। जैसे कृपया कुछ पानी लाइए।

(घ) 'कई', 'कतिपय', 'चन्द', आदि अनिश्चयवाचक सर्वनाम बहु-

वचन म अनिश्चितता व्यक्त करन के लिए प्रयुक्त होत हैं। जैसे कई विद्यार्थी अपन अध्यापको स मिलन गये।

(२) हिन्दी म सज्ञा शब्दो की निश्चितता व्यक्त होती है—

(क) यह वह निर्देशवाचक सवनामो तथा सब हर प्रत्येक आदि निश्चयवाचक सवनामो द्वारा। जैसे (१) यह आदमी मेरा शिक्षक है। (२) वह किताब उसकी नहीं है। (३) आज सब विद्यार्थी श्रेणी म उपस्थित है।

(ख) स्वामित्ववाचक सवनाम द्वारा। जस मरी कापी कहाँ है?

(ग) का' विभक्तिचिह्न सहित सज्ञा शब्द या क्रियाविशेषण द्वारा। जस (१) रमेश का बाप डाक्टर है। (२) मुझे आज का समाचार पत्र नहीं मिला है।

(घ) क्रमवाचक सख्या शब्द द्वारा। जसे वह तीसरी मजिल पर रहते हैं।

सज्ञा शब्द निश्चितता या अनिश्चितता के सूचक शब्दो के बिना तब प्रयुक्त होते है जब कोई बात किसी निश्चित वस्तु के बारे म नहीं अपितु एक सी वस्तुओ म से किसी एक के विषय म कही जाती है अथवा किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु के बारे म कोई चर्चा होती है और व्यक्ति या वस्तु की निश्चितता प्रसग स पता चलती है। जैसे (१) क्या इस कमरे म कुर्सी है? (२) वह पानी भरने गई। (३) तुम्हारे घर मे चीज गई तुम्ह देनी पडेगी।

उपयुक्त तीसरे उदाहरण म प्रसग है गायब हुई कण्ठमाला का।

४

विशेषण

विशेषण ऐसा शब्द भेद है जो वस्तु के गुण, दोष आदि विशेषताओं को बताता है और संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे अच्छा आदमी चौड़ी मेज, खराब दरवाजा, महत्वपूर्ण समस्या औद्योगिक विकास।

हिंदी में विशेषण शब्द संज्ञाओं की निम्नलिखित विशेषताओं को सूचित करते हैं—

रंग—जैसे लाल, पीला नीला भूरा काला।

परिमाण—जैसे चौड़ा ऊँचा, नीचा, लम्बा, बड़ा छोटा आदि।

आकार—जैसे गोल टेढ़ा, नुकीला चौकोर आदि।

गुण—जैसे नया, पुराना, मजबूत, चतुर आदि।

अवस्था—रोगी, बूढ़ा, गीला, सूखा आदि।

पदार्थ—ऊनी, सूती, फौलादी, कागजी रेतीला इत्यादि।

व्यवसाय—व्यापारी, औद्योगिक आदि।

स्थान—पड़ोसी नजदीकी, दूर, दूरवर्ती।

समय—आगामी अगला पिछला।

दिशा—पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी दक्षिणी आदि।

अपने अर्थो और व्याकरण-सम्बन्धी विशेषताओं के अनुसार हिन्दी में सारे विशेषण दो भागों में बटते हैं—गुणवाचक विशेषण और सम्बन्धवाचक विशेषण। गुणवाचक विशेषण वस्तु का गुण या विशेषता दूसरी वस्तु के प्रति निरपेक्ष भाव में बताते हैं। ये गुण या विशेषता वस्तु में अधिक या न्यून परिमाण में हो सकते हैं अतएव अन्य विशेष निश्चित शब्दों से उनका निर्देश किया जा सकता है। जैसे

सुंदर—अधिक सुंदर, कम सुंदर बहुत सुंदर।

मजबूत—ज्यादा मजबूत कम मजबूत, बहुत मजबूत।

गुणवाचक विशेषण वस्तुओं के उन गुणों तथा विशेषताओं को व्यक्त

करते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से इन्द्रियों से अनुभूत होते हैं। जैसे

(क) बाह्य भौतिक विशेषताएं—

रंग—लाल सफेद हरा पीला आदि।

तापमान—गरम ठण्डा आदि।

समय—पिछला अगला आदि।

स्वाद—मीठा खट्टा नमकीन आदि।

भार—हल्का भारी वजनी आदि।

आयु—जवान अधेड़ बूढ़ा आदि।

(ख) लोगों और पशुओं की शारीरिक विशेषताएँ—

जैसे अंधा लंगड़ा मजबूत बन्दर कमजोर बीमार तन्दुरुस्त आदि।

(ग) आदमी के चरित्र व बुद्धि-सम्बन्धी विशेषताएँ—जैसे उदार लालची बुद्धिमान शुद्ध बहादुर चालाक आदि।

(घ) वस्तु की मूल्यांकनपरक विशेषताएं—जैसे आवश्यक महत्त्वपूर्ण लाभदायक हानिकारक उचित गलत आदि। वाक्य में गुणवाचक विशेषणों का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(१) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे इन शब्दों में कड़वा सत्य था।

(२) विधेयक के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) शब्द मामूली थे मगर उनका मतलब मामूली न था। (२) इन कपड़ों में वह बहुत सुन्दर दिखाई देती था।

सम्बन्धवाचक विशेषण वस्तु की विशेषता अन्य वस्तु के सम्बन्ध में बताता है। इस प्रकार के विशेषण संज्ञा शब्दों क्रियाविशेषणों तथा क्रियाओं से बने होते हैं।

जैसे शान्तिमय (शान्ति संज्ञा से) भीतरी (भीतर क्रियाविशेषण से) सुना (सुनना क्रिया से)।

सम्बन्धवाचक विशेषणों से अभिव्यक्त विशेषताएं वस्तु में निहित होती हैं। ये विशेषताएँ न कम और न अधिक हो सकती हैं। उनकी अभिव्यक्ति न्यूनाधिक परिमाण में नहीं हो सकती है क्योंकि सम्बन्धवाचक विशेषण वस्तु की अपरिवर्तनीय विशेषताओं को बताता है।

हिन्दी में सम्बन्धवाचक विशेषण सूचित करते हैं—

(क) वस्तु का लक्ष्य। जैसे फौजी जहाज (फौजी विशेषण फौज संज्ञा से बना है) व्यापारी वर्ग (व्यापारी विशेषण व्यापार संज्ञा से बना है)।

(ख) किसी दश म सम्बन्ध या जाति। जस रूसी (रूस' व्यक्ति वाचक सना स बना है) भारतीय (भारत व्यक्तिवाचक सना स बना है)।

(ग) वस्तु का स्थान या समय स सम्बन्ध। जैसे पहाडी रास्ता (पहाडी विशेषण 'पहाड सना स बना है)। साप्ताहिक पत्र (साप्ताहिक विशेषण 'सप्ताह सना स बना ह)।

(घ) वह पदाथ जिसस कोई वस्तु बनी है। जस फौलादी छुरी (फौलादी विशेषण 'फौलाद पदाथवाचक सना स बना है) रशमी कपडा (रेशमी विशेषण रेशम पदाथवाचक सज्ञा से बना है)।

(ङ) सम्बन्धवाचक विशेषण उन भाववाचक शब्दो स भी सम्बन्ध व्यक्त करत हैं जो व्यापक रूप स विज्ञान तकनीकी और *सामाजिक जीवन क क्षत्र म व्यवहृत होत हैं।* जैसे वैज्ञानिक (भाववाचक सज्ञा विज्ञान स बना है) रासायनिक (भाववाचक सना 'रसायन स) राजनीतिक (भाववाचक सज्ञा राजनीति स), सामाजिक (भाववाचक सज्ञा समाज स)।

वाक्य म सम्बन्धवाचक विशेषणो का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(क) गुणनिर्देशक क रूप म। जस लेनिन इतना मुझे जरूर उम्मीद है कि अगर कोई दूसरा सिपाही इस खत को पढेगा तो मरन वाल का फौजी वर्दी की बाइ तरफ की जब म जरूर डाल दगा।

(ख) विधेय के नामिक अग क रूप म। जसे यह एक एस गाव की बात है जहाँ की आबादी क्रान्ति से पहल बिल्कुल निरक्षर थी।

स्मरण रह कुछ पारिभाषिक सम्बन्धवाचक विशेषण नामिक विधयक म बहुत कम प्रयुक्त होत हैं। जस भौगोलिक, भौगर्भिक प्राविधिक इत्यादि।

विशेषण विकार

शब्द विकार की विवेचनाओ क अनुसार हिन्दी म विशेषण दो वर्गों म बँटत है—विकारी विशेषण और अविकारी विशेषण। विकारी विशेषण का सना से मल (अन्वय) होता है। अविकारी विशेषण का सना स कोइ मल नहीं होता है। सना स मल होत हुए प्रथम वग क विशेषण लिंग, वचन तथा कारक म रूप बदलत है परन्तु इस प्रकार के विशेषणो के लिंग वचन तथा कारकों

वे रूप स्वतन्त्र नहा होत है। व सना स विशेषण का सम्बन्ध व्यक्त करते हैं तथा उस सना के लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार होत हैं जिसस किसी विशेषण का मल होता है। द्वितीय वग के विशेषण अपने रूप म नहीं बदलते है। विकारी विशेषणो म आकारात तथा आकारान्त विशेषण परिगणित होत है। जस अच्छा, बडा चौडा दाया बाया दम्बा आदि।

सामान्य कारक म विकारी विशेषण के निम्नलिखित अन्त्य प्रत्यय होते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिग)	आ आं	ए ए (यें)
(स्त्रीलिंग)	ई इ	ई इ

इस प्रकार सामान्य कारक म विकारी विशेषणा का वचन म सना स मल केवल पुल्लिग रूप म व्यक्त होता है। स्त्रीलिंग म एकवचन तथा बहुवचन मे अन्त्य प्रत्यय एक जस होत हैं।

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिग)	अच्छा लडका	अच्छे लडके
"	दाया हाथ	दायें हाथ
(स्त्रीलिग)	अच्छी लडकी	अच्छी लडकियाँ
	दाइ आँख	दाइ आँखें

असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक मे भी विकारी विशेषणो के अन्त्य प्रत्यय एक जस होते है। दोना वचनो के पुल्लिग असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक में विकारी विशेषणा के अन्त्य प्रत्यय ए तथा ए है जो बहुवचन सामान्य कारक के अन्त्य प्रत्ययो म मिलते जुलत हैं। असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक म विकारी विशेषणो के निम्नलिखित अन्त्य प्रत्यय होत है —

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिग)	ए ए	ए ए
(स्त्रीलिंग)	ई इ	ई इ जसे
(पुल्लिग)	प्यारे बेटे को	प्यारे बेटो को
,	अरे प्यारे बेटे !	अरे प्यारे बेटो !
(स्त्रीलिग)	प्यारी बेटी को	प्यारी बेटियों को
	अरी प्यारी बेटी !	अरी प्यारी बेटियो !

जसा कि ऊपर दिये गए उदाहरणो स दीखता है कारक म विशेषणा का सनाओ म मेल केवल पुल्लिग में होता है।

यदि विकारी विशेषण दो या दो से अधिक विभिन्न लिंग वाली संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होता है तो उनके लिंग और वचन निकटवर्ती संज्ञा के अनुसार होते हैं। जैसे छोटे लड़के-लड़कियाँ।

अविकारी विशेषणों में आकारान्त तथा आकारान्त विशेषणों को छोड़कर अन्य सब स्वरान्त तथा व्यंजनान्त विशेषण आ जाते हैं। इन वर्ग के विशेषणों का संज्ञाओं से कोई भेद नहीं होता है। कारक में केवल संज्ञा के रूप बदलते हैं तथा उनसे सम्बन्धित विशेषण के रूप नहीं बदलते हैं।

सामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	बुद्धिमान लड़का	बुद्धिमान लड़के
"	धनी आदमी	धनी आदमी
(स्त्रीलिंग)	बुद्धिमान लड़की	बुद्धिमान लड़कियाँ

असामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	बुद्धिमान लड़के	बुद्धिमान लड़कों
"	धनी आदमी	धनी आदमियों
(स्त्रीलिंग)	बुद्धिमान लड़की	बुद्धिमान लड़कियों

सम्बोधन कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	बुद्धिमान लड़के !	बुद्धिमान लड़को !
"	धनी आदमी !	धनी आदमियो !
(स्त्रीलिंग)	बुद्धिमान लड़की !	बुद्धिमान लड़कियो !

अविकारी विशेषणों में कुछ ऐसे आकारान्त विशेषणों का भी परिगणन होता है जो हिन्दी में अरबी और फारसी से आये हैं। जैसे उम्दा, ताजा, जुदा, ज्यादा, रवाना, शर्मिन्दा इत्यादि।

अविकारी विशेषणों में हम हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत स्त्रीलिंग विशेषणों का भी समावेश कर सकते हैं। इस प्रकार के विशेषण हिन्दी में अपना रूप नहीं बदलते हैं। उनका उपयोग केवल स्त्रीलिंगवाची संज्ञाओं के साथ किया जाता है परन्तु उनका लिंग दूसरे विकारी विशेषणों की भाँति संज्ञा के लिंग के

अनुसार नहीं होता है बल्कि पुल्लिंगवाची विशेषणों के साथ "ई" प्रत्ययों द्वारा बनता है। जैसे शांतिकारिणी ('शांतिकारी' विशेषण से बना है), शक्तिशालिनी ('शक्तिशाली' विशेषण से बना है), इत्यादि।

तुलना

हिंदी में तुलना की दृष्टि से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं— मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

मूलावस्था में विशेषण वस्तु को अन्य वस्तुओं से निरपेक्ष भाव से सीधे निर्दिष्ट करते हैं। इस अवस्था में एक वस्तु की दूसरी वस्तु से गुण या दोष की मात्रा में तुलना नहीं की जाती है। इसलिए मूलावस्था में विशेषण की तुलना स्पष्ट रूप से नहीं प्रतीत हुआ करती है। मूलावस्था वाले विशेषण प्रायः शब्द-कोश में दिया होता है। जैसे अच्छा, बुरा, मजबूत।

उत्तरावस्था में दो वस्तुओं की तुलना करके उनमें से एक वस्तु के गुण या दोष अधिक बतलाए जाते हैं। जैसे लोहा लकड़ी से कड़ा है।

उत्तमावस्था में किसी वस्तु को सबसे अधिक गुणशाली या दोषी बताया जाता है। *जैसे वह हमारी कक्षा में सबसे अच्छा विद्यार्थी है।*

हिंदी में केवल गुणवाचक विशेषणों की तुलना अवस्था होती है क्योंकि ये विशेषण वस्तुओं के उन गुणों या दोषों को व्यक्त करते हैं जो वस्तुओं में *अधिक या न्यून मात्रा में होते हैं। सम्बन्धवाचक विशेषण ऐसी विशेषताओं को* बताते हैं जो अधिक या न्यून मात्रा में नहीं हो सकता है। इसलिए उनकी तुलनावस्थाएँ नहीं होती हैं। परन्तु हिन्दी में ऐसे गुणवाचक विशेषण भी होते हैं जिनकी तुलनावस्थाएँ नहीं होती हैं। इनमें निम्नलिखित का परिगणन है—

(क) अधिकांश नकारात्मक विशेषण। जैसे अभिन्न, अक्षम्य, अप्रिय आदि।

(ख) ऐसे विशेषण जिनके द्वारा व्यक्त गुण या दोष की तुलना नहीं की जा सकती। जैसे अंधा, बहरा, नंगा, अतिरिक्त आदि।

तुलनावस्थाओं की अभिव्यक्ति

हिंदी में तुलनावस्थाएँ व्यक्त करने के लिए गुणवाचक विशेषणों के अपने पदरचना विषयक रूप नहीं होते हैं। इसलिए तुलनावस्थाओं की प्रतीति विशेष वाक्यरचना विषयक शब्द समुदायों से होती है। इन विशेषणों के कुछ *अपवाद होते हैं जो संस्कृत या फारसी से हिन्दी में आए हैं। इस प्रकार के*

विशेषणा की तुलनावस्थाएँ हिन्दी मे उक्त विशेषणा के साथ प्रयुक्त प्रत्ययो के द्वारा व्यक्त की जाती हैं।

उत्तरावस्था हिन्दी मे निश्चित वाक्यरचना द्वारा निर्दिष्ट होती है जिसमे तुलना की जाने वाली वस्तु उद्देश्य होती है मूलावस्था मे प्रयुक्त विशेषण विधेयक का अग होता है और सज्ञा शब्द या सवनाम जिससे दूसरी वस्तु की तुलना की जाती है किसी निश्चित विभक्ति चिह्न के साथ असामान्य कारक मे होता है। उत्तरावस्था मे निम्नलिखित विभक्ति चिह्नो का प्रयोग होता है—

(क) से। जैसे (i) यह सेब शहद से मीठा है। (ii) मेरा भाई उससे बडा है।

(ख) म, म से। जसे इन घरो म (मे से) हमारा घर ऊँचा है।

(ग) की अपक्षा की तुलना मे के मुकाबले, की बनिस्बत। जमे (i) सस्कृत की अपेक्षा हिन्दी सरल है। (ii) उसकी तुलना म मेरा भाई बलवान है। (iii) यह किताब उस किताब के मुकाबले दिलचस्प है। (iv) गधे की बनिस्बत घोडा मजबूत है।

उत्तरावस्था 'के आगे' और 'के सामने' विभक्ति चिह्नो द्वारा भी व्यक्त की जा सकती है। जैसे वह मेरे आगे छोटा है। स्त्री पुरुष के सामने कमजोर होती है।

सस्कृत से आए विशेषणा की उत्तरावस्था तर प्रत्यय द्वारा भी प्रकट की जा सकती है। जसे उच्चतर श्रेष्ठतर हीनतर कोमलतर आदि।

उत्तमावस्था हिन्दी म निम्न प्रकार से अभिव्यक्त होती है।

(क) निर्देशक सवनाम 'सब' तथा विभक्ति चिह्न 'से' या 'म' के सयोजन द्वारा मूलावस्था मे प्रयुक्त विशेषण के साथ। जैसे (i) हमारे नगर म यह सबसे लम्बी सडक है। (ii) यह घडी सबसे अच्छी है।

(ख) 'स' या 'म' विभक्ति चिह्न द्वारा। इस दशा म निर्देशक सवनाम सब विभक्ति चिह्न 'स' या 'म' से पहले नही प्रयुक्त होता है, वह प्रयुक्त होता है उस सज्ञा से पहले जिसम तुलना की जाती है। इसम विशेषण मूलावस्था जैसे ही होते है। जैसे यह घर सब घरो से (मे) बडा है।

(ग) मे विभक्ति चिह्न के साथ विशेषण की आवृत्ति द्वारा। जैसे (i) बडे म बडा घर। (ii) अच्छी-से अच्छी पुस्तक।

सस्कृत स आए विशेषणा की उत्तमावस्था 'तम' प्रत्यय द्वारा भी प्रकट की जा सकती है। जस उच्चतम श्रेष्ठतम, हीनतम, कोमलतम आदि।

हिन्दी म विशेषणाओ की न्यून या अधिक मात्रा उन निम्नलिखित शब्दो

द्वारा व्यक्त की जा सकती है जो मूलावस्था वाले विशेषणों से जुड़ जाते हैं—अधिक, ज्यादा, कहीं, कम बहुत थोड़ा, जरा किंचित और (और भी), कुछ, बड़ा, काफी, बिल्कुल। जैसे अधिक बलवान ज्यादा मजबूत, कहीं अच्छा, कम चौड़ा बहुत ठंडा, थोड़ा लम्बा जरा ऊँचा और गम, और भी गम कुछ नग बड़ा सुन्दर, काफी लाभदायक बिल्कुल अनुचित।

विशेषणों का संज्ञाकरण

विशेषणों के संज्ञाकरण का अर्थ संज्ञाओं में विशेषण का संक्रमण है। हिन्दी में संज्ञा के शब्द भेद में केवल कुछ विशेषणों का पूर्ण संक्रमण हुआ है। ऐसे विशेषणों में 'बन्दी', कैदी आदि जैसे शब्द गिने जा सकते हैं। अधिकांश विशेषण संज्ञाओं के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषणों के अर्थ में। ये प्राय व्यक्तियों में निहित गुणों वाले विशेषणों से सम्बन्धित होते हैं। जैसे गरीब धनी, बेकार, बीमार जवान अंधा, बहरा आदि।

संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त होते समय इस प्रकार के विशेषण वस्तु की विशेषता को नहीं बल्कि स्वयं उस वस्तु का ही निर्देश करने लगते हैं। संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त विशेषण उनसे निर्दिष्ट वस्तु के अनुसार पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में व्यवहृत हो सकते हैं परन्तु प्राय वे पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं। स्त्रीलिंग में उनका तब प्रयोग होता है जब वे स्त्रीलिंगवाची व्यक्तियों का निर्देश करते हैं। जैसे अंधा (पुरुष) अंधी (स्त्री) बहरा (पुरुष) बहरी (स्त्री)।

संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त विशेषणों का रूपान्तर उनके सदृश लिंग और अन्त्य प्रत्यय वाली संज्ञाओं की भाँति होता है। विकारी विशेषणों का रूपान्तर लड़का बेटा आदि संज्ञा शब्दों की भाँति होता है। अविकारी विशेषणों का रूपान्तर किसान भाई, आदि संज्ञा शब्दों की भाँति होता है। जैसे

सामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	अंधा	अंधे
	जवान	जवान
,,	धनी	धनी

असामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिग)	अंधे	अंधो
,,	जवान	जवानो
,,	धनी	धनियो

सम्बोधन कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिग)	अंधे !	अंधो !
,,	जवान !	जवानो !
,,	धनी !	धनियो !

विशेषण की पुनरुक्ति

हिन्दी मे विशेषणो की पुनरुक्ति का बहुत प्रचलन है। इस तरह की पुनरुक्ति मे विशेषण अवधारणसूचक होता है। जैसे (१) छोटी छोटी लड़की। (२) लम्बे-लम्बे बाल।

विशेषणो की पुनरुक्तियाँ अवधारणपरक निम्नलिखित अर्थ व्यक्त करती है—

(क) भिन्नता। जैसे नये नये खेल।

(ख) एकजातीयता। जैसे बड़े बड़े लोग तथा छोटे छोटे बच्चे अपनी-अपनी जगह बैठे थे।

(ग) अतिशयता। जैसे मीठे मीठे अंगूर।

(घ) न्यूनता। जैसे खट्टे खट्टे नारंगी।

५

सख्या-शब्द

मख्या गस नब्द भद का कहत है जिसम एम श न का समावेश होता है जो अका तथा अका स सूचित मात्रा एव परिमाण को यक्त करत हैं।

हिन्दी म सख्या श द अपने गठन क अनुसार तीन प्रकार क होत हैं— सामान्य जटिल तथा सयुक्त।

सामान्य सख्या शब्द व कहलात है जा स्वतन्त्र मूल क हात है। इन सामान्य सख्या शब्दा म निम्नलिखित का परिगणन होता है—

(क) एक से दस' तक की सख्याए।
जसे एक दो तीन आदि।

(ख) दशका के नाम। जैसे दस बीस, तीस चालीस आदि।

(ग) सौ हजार लाख करोड अरब आदि।

जटिल सख्या-शब्द वे कहलाते हैं जो दो मूल वाल हात हैं। उनम समावश होता है पूर्व दशक सख्या शब्दों को छोडकर ग्यारह के बाद प्रारम्भ होने वाले प्रत्यक दशक के तमाम सख्या शब्दा का। जस चौदह इक्कीस बाईस तईस, चौबीस पच्चीस, छब्बीस सत्ताईस और अट्ठाईस। (इसी तरह फिर हर दशक म सौ तक)।

इस समय जटिल सख्या शब्दा क निर्माण क सामान्य सिद्धान्तो को निर्धारित करना आसान नहा है। कारण, उनम समाविष्ट अगो का अपना मूल रूप काफी रूपान्तरित हो चुका है। किन्तु प्रत्यक दशक के सख्या शब्दा म सयोजन का निम्न निश्चित क्रम है पहले आत हैं बदले हुए रूप म एक स नौ तक के सामान्य सख्या शब्द इसके पश्चात आत हैं प्राय बदल हुए रूप म दशकों के सख्या शब्द। जस चौबीस (चार का बदला रूप 'चौ बीस)। इकसठ (एक का बदला रूप 'इक साठ का बदला रूप 'सठ)।

नवासी तथा निन्यानव सख्या शब्दो को छोडकर उन्नीस उन्तीस उन्तालीस आदि शब्द सयोजन स नही बल्कि ऊन द्वारा बनत है। 'ऊन' का

यहाँ अर्थ होता है एक अंक कम। 'ऊन' इस अर्थ में दशकों के नाम के पूर्व जुड़ता है। जैसे उन्तीस, उनसठ, उनासी।

नवासी तथा निन्यानवे जटिल संख्या शब्द हैं। उनका निर्माण अन्य जटिल संख्या-शब्दों की भाँति हुआ है।

संयुक्त संख्या शब्द वे कहलाते हैं जिनमें दो या दो से अधिक (सामान्य या जटिल) संख्या शब्दों का समावेश होता है। हिन्दी में वे संख्या-शब्द होते हैं 'सौ' संख्या-शब्द के बाद। जैसे एकसौ एक दो सौ तीन सौ बीस चार-सौ उन्तालीस इत्यादि।

अपने अर्थों के अनुसार हिन्दी में संख्या शब्दों के दो मुख्य भेद हैं— गणनावाचक तथा क्रमवाचक। गणनावाचक संख्या शब्दों में निर्माण तथा उप-योग की दृष्टि से समुदायवाचक संख्या शब्दों का विशेष समावेश होता है। संख्या शब्दों की विशेष श्रेणी में आते हैं खण्डवाचक संख्या शब्द तथा मिश्रित संख्याओं के सूचक शब्द और शब्द समुदाय पृथक श्रेणी में आते हैं 'आवृत्तिवाचक संख्या शब्द तथा 'लगभग' मात्रा सूचक शब्द।

गणनावाचक संख्याएँ हिन्दी में गणनावाचक संख्या शब्द स्वतन्त्र रूप से या संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। संज्ञा शब्दों के साथ इनका प्रयोग सदा सामान्य-कारक में होता है और लिंग तथा वचन अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे पाँच आदमी, पाँच आदमियों के लिए। सात लड़कियाँ सात लड़कियों के लिए।

गणनावाचक संख्या शब्द एक अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कोई' के अर्थ में एकवचन में अनिश्चितता व्यक्त करने के लिए प्राय प्रयुक्त हुआ करता है। जैसे यहाँ एक आदमी आया था।

गणनावाचक संख्या शब्दों की पुनरुक्तियाँ विभाजकता का अर्थ दिया करती हैं। जैसे एक एक, दो-दो इत्यादि।

हजार, लाख, करोड़, अरब आदि जैसे गणनावाचक संख्या शब्द प्राय विशेष गणनक शब्द समझे जाते हैं और इस दशा में बीसी, सैकड़ा आदि गणनक शब्दों की भाँति 'ओं' प्रत्यय उनके अन्त में जुड़ता है जिससे अनिश्चयवाचक समुदायवाचक संख्या शब्द बन जाते हैं, जैसे बीसियों, हजारों लाखों, करोड़ों आदि।

एक से सौ तक के गणनावाचक संख्या शब्द

इकाई / दशक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	एक	दो	तीन	चार	पाँच	छः	सात	आठ	नौ	दस
२	ग्यारह	बारह	तेरह	चौदह	पन्द्रह	सोलह	सत्रह	अठारह	उन्नीस	बीस
३	इक्कीस	बाईस	तेईस	चौबीस	पच्चीस	छब्बीस	सत्ताईस	अठाईस	उनतीस	तीस
४	इकत्तीस	बत्तीस	तैंतीस	चौंतीस	पैंतीस	छत्तीस	सैंतीस	अड़तीस	उनतालीस	चालीस
५	इकतालीस	बयालीस	तितालीस	चवालीस	पैंतालीस	छियालीस	सैंतालीस	अड़तालीस	उनचास	पचास
६	इक्यावन	बावन	त्रेपन	चौवन	पचपन	छप्पन	सतावन	अठावन	उनसठ	साठ
७	इकसठ	बासठ	त्रेसठ	चौंसठ	पैंसठ	छियासठ	सड़सठ	अड़सठ	उनहत्तर	सत्तर
८	इकहत्तर	बहत्तर	तिहत्तर	चौहत्तर	पचहत्तर	छिहत्तर	सतहत्तर	अठहत्तर	उनासी	अस्सी
९	इक्यासी	बयासी	तिरासी	चौरासी	पचासी	छियासी	सतासी	अठासी	नवासी	नब्बे
१०	इक्यानवे	बानवे	तिरानवे	चौरानवे	पिचानवे	छियानवे	सतानवे	अठानवे	निन्यानवे	सौ

खण्डवाचक संख्या शब्द

हिन्दी में निम्नलिखित खण्डवाचक संख्याएँ पृथक् शब्दों से व्यक्त की जाती हैं। जैसे पाव, चौथ, चौथाई, तिहाई, आधा, पौन, पौना, पौने, सवा, डेढ़, ढाई, अढ़ाई, साढ़े।

शेष खण्डवाचक संख्याओं को व्यक्त करने के लिए हिन्दी में कोई पृथक् शब्द नहीं है।

व्याकरण-सम्बन्धी विशेषताओं की दृष्टि से हिन्दी में खण्डवाचक संख्या-शब्द एक जैसे नहीं हैं। तिहाई तथा 'चौथ' व 'चौथाई' संख्या शब्द वास्तव में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द होते हैं। ये खण्डवाचक संख्याओं को व्यक्त करते हैं। प्रायः एक, दो तथा तीन गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ प्रयोग में। जैसे एक तिहाई, दो तिहाई, एक चौथाई, दो चौथाई इत्यादि।

आधा तथा पौना खण्डवाचक संख्या शब्द अपने रूप के अनुसार विकारी विशेषण होते हैं। उनके लिंग, वचन तथा कारक रूप अपने विशेष्यों के अनुसार बदलते हैं। जैसे आधी दर्जन, आधा घण्टा, आधे घण्टे तक, पौना घण्टा, पौने

घण्टे म आदि। 'आधा' सख्या शब्द पुल्लिग सज्ञा शब्द की भाति प्रयुक्त हो सकता है। जसे आधे से कुछ अधिक। शेष खण्डवाचक सख्या शब्द अविकारी होते है। 'डेढ, 'ढाई' तथा 'अढाई खण्डवाचक सख्या शब्दा के साथ या सौ, 'हजार', 'लाख' 'करोड' आदि जसे गणनावाचक सख्या शब्दा के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे डेढ दिन, ढाई दिन, अढाई दिन, डेढ सौ, डढ हजार डेढ लाख, डेढ करोड, ढाई सौ और ढाई हजार, ढाइ लाख, ढाई करोड आदि। 'पौन 'सवा' 'साढे खण्डवाचक सख्या शब्द केवल गणनावाचक सख्या शब्दा के साथ प्रयुक्त होते है। उनमे 'साढे खण्डवाचक सख्या शब्द का प्रयोग गणनावाचक तीन सख्या शब्द से लेकर अगली सब गणनावाचक सख्याओ के साथ ही होता है।

'पौने', 'सवा, 'डेढ, 'ढाई, 'अढाई तथा 'साढे' खण्डवाचक सख्या शब्द समय बताने के लिए भी प्रयुक्त होते है। जैसे पौने दो बजे (१ ४५) सवा चार बजे (४ १५), डेढ बजे (१ ३०) ढाई बजे (२ ३०), साढे पाच बजे (५ ३०)।

भिन्न

हिंदी म तीन प्रकार की भिन्न होती है—**सरल भिन्न, दशमलव भिन्न तथा मिश्र भिन्न।**

सरल भिन्न तीन या चार शब्दा वाले शब्द समुदाय से व्यक्त की जाती है। इसम पहले वे सख्या शब्द होते है जो पूर्णाक होते हैं दूसरे सख्या शब्द भाज्य को सूचित करते है, तीसरा शब्द 'बटना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक कृदन्त 'बटा' होता है जो भाग करने का व्यापार सूचित करता है और चौथा सख्या शब्द भाजक को सूचित करता है। भिन्न म जब कोइ पूर्णाक होता है तब चार शब्दा का समुदाय उस भिन्न को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है अन्यथा तीन शब्दा का ही समुदाय प्रयुक्त होता है। जैसे (१) पाच पूर्णांक सात बटे आठ (=५$\frac{७}{८}$)। (२) चार बटे पाच (=$\frac{४}{५}$) पूर्णाक के स्थान पर सही शब्द का व्यवहार भी होता है।

दशमलव भिन्न इस तरह लिखी तथा पढी जाती है—जसे ०७ को पढगे शून्य दशमलव सात। ०७८ को पढेंगे शून्य दशमलव सात आठ। ३ ४३ को पढगे तीन दशमलव चार तीन।

मिश्र भिन्न वे हैं जिनम सरल भिन्न तथा दशमलव भिन्ना का

संयुक्त रूप से प्रयोग होता है। जैसे २$\frac{3}{7}$ + १ ७८। इस तरह की मिश्र भिन्न को पढ़ेंगे दो पूर्णांक तीन बटे पांच योग एक दशमलव सात आठ।

समुदायवाचक संख्या शब्द

समुदायवाचक संख्या शब्द वस्तुओं की मात्रा एक समूह के रूप में सूचित करते हैं। उनका निर्माण गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ ओं प्रत्यय के संयोजन से होता है। जैसे दोनों तीनों चारों इत्यादि।

आवृत्तिवाचक संख्या शब्द

आवृत्तिवाचक संख्या शब्दों का निर्माण गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ गुना प्रत्यय के संयोजन से होता है। दो तीन चार पांच सात आठ के मूल रूपों में 'गुना' प्रत्यय के संयोजन से परिवर्तन विकल्प से हो सकता है। जैसे दोगुना, या दुगुना। तीनगुना या तिगुना। चारगुना या चौगुना आदि।

आवृत्तिवाचक संख्या शब्दों का अपने विशेष्य के अनुसार लिंग वचन तथा कारक में रूप कभी बदलता है कभी नहीं बदलता है। जैसे पचगुनी वृद्धि। सातगुना विस्तार के लिए।

'लगभग' मात्रा की अभिव्यक्ति

हिंदी में लगभग मात्रा व्यक्त होती है—

(क) गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ लगभग करीब तथा तकरीबन शब्दों के प्रयोग से। जैसे लगभग पांच बजे। करीब दस रुपये। तकरीबन बीस आदमी।

(ख) गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ कोई अनिश्चयवाचक सर्वनाम के प्रयोग से। जैसे कोई तीस व्यक्ति।

(ग) गणनावाचक संख्या शब्दों के पश्चात एक संख्या शब्द के प्रयोग से। जैसे सात एक कापियां।

(घ) दो गणनावाचक संख्या शब्दों के एक साथ प्रयोग से। जैसे दो चार तीन चार आदमी चाहिए।

क्रमवाचक संख्या शब्द

'एक दो तीन चार तथा छ गणनावाचक संख्या शब्दों के क्रमवाचक रूप क्रमशः होते हैं पहला दूसरा तीसरा, 'चौथा तथा छठा'।

सौ ममेन शप क्रमवाचक सख्या शब्दो के पाछ वा प्रत्यय जोडने से। जैसे पाचवा सातवा दसवा पचासवां सौवा।

सयुक्त क्रमवाचक सख्या शब्दो का निर्माण सयुक्त गणनावाचक सख्या-शब्द के समुदाय के अन्तिम भाग के साथ 'वा' प्रत्यय जोडने से होता है। जैसे चार सौ बीसवा।

हिन्दी में क्रमवाचक सख्या शब्द अपने विशेष्य के अनुसार लिंग वचन तथा कारक में अपना रूप बदलते है। क्रमवाचक सख्या शब्दो का विकार विकारी विशेषणो की भाति होता है। जैसे चौथा लडका, चौथी लडकी चौथे लडके को चौथी लडकी को चौथे लडके, चौथी लडका। पाचवा दिन पाचवें दिन के लिए, पाचवी तिथि पाचवी तिथि का।

सयुक्त क्रमवाचक सख्या शब्दो में विकारी होता है अन्तिम शब्द। जैसे **दो सौ तीसवां** आदमी। **दो सौ तीसवें** आदमी का, **दो सौ तीसवां** स्त्री।

'दूसरा' क्रमवाचक सख्या शब्द अन्य शब्द के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है। जैसे उन लोगो के अलावा दूसरा आदमी भी यहा आया था।

वाक्य में क्रमवाचक सख्या शब्द प्राय गुणनिर्देशक होते है या विधेय के नामिक अग होते हैं। जैसे (१) वह उनका तीसरा बच्चा है। (२) हमारा गाडी का डिब्बा **दसवां** है।

सज्ञा शब्दो के साथ प्रयोग में क्रमवाचक सख्या शब्द वाक्य में विशेषताबोधकों का काय भी कर सकते हैं। जैसे सडक के दूसरी ओर मेरा मित्र खडा था। (२) वह बीसवी फरवरी को आयेगा।

हिन्दी में कभी-कभी सस्कृत के क्रमवाचक सख्या-शब्दो का प्रयोग होता है। जैसे प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पचम आदि।

सयुक्त रूप से प्रयोग होता है। जैसे २३/४+१.०८। इस तरह की मिश्र भिन्न को पढ़ेंगे दो पूर्णांक तीन बटे पाच योग एक दशमलव शून्य आठ।

समुदायवाचक सख्या शब्द

समुदायवाचक सख्या शब्द वस्तुओं की मात्रा एक समूह के रूप में सूचित करते हैं। उनका निर्माण गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ 'ओ' प्रत्यय के सयोजन से होता है। जैसे दोनों तीनों चारों इत्यादि।

आवृत्तिवाचक सख्या शब्द

आवृत्तिवाचक सख्या शब्दों का निर्माण गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ गुना प्रत्यय के सयोजन से होता है। दो तीन चार पाच सात आठ के मूल रूपों में गुना प्रत्यय के सयोजन से परिवर्तन विकल्प से हो सकता है। जैसे दोगुना या दुगुना। तीनगुना या तिगुना। चारगुना या चौगुना आदि।

आवृत्तिवाचक सख्या शब्दों का अपने विशेष्य के अनुसार लिंग वचन तथा कारक में रूप कभी बदलता है कभी नहीं बदलता है। जैसे पचगुनी वृद्धि। सातगुना विस्तार के लिए।

'लगभग' मात्रा की अभिव्यक्ति

हिंदी में 'लगभग' मात्रा व्यक्त होती है—

(क) गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ 'लगभग' 'करीब' तथा तकरीबन शब्दों के प्रयोग से। जैसे लगभग पाँच बजे। करीब दस रुपये। तकरीबन बीस आदमी।

(ख) गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ कोई अनिश्चयवाचक सर्वनाम के प्रयोग से। जैसे कोई तीस व्यक्ति।

(ग) गणनावाचक सख्या शब्दों के पश्चात् एक सख्या शब्द के प्रयोग से। जैसे सात एक कापियाँ।

(घ) दो गणनावाचक सख्या शब्दों के एक साथ प्रयोग से। जैसे दो चार तीन चार आदमी चाहिए।

क्रमवाचक सख्या शब्द

'एक' दो तीन चार तथा 'छ' गणनावाचक सख्या शब्दों के क्रमवाचक रूप क्रमश होते हैं पहला दूसरा तीसरा, 'चौथा तथा छठा।

'सौ' समेत शेष क्रमवाचक संख्या-शब्दों के पीछे 'वाँ' प्रत्यय जोड़ने से। जैसे पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ, पचासवाँ, सौवाँ।

संयुक्त क्रमवाचक संख्या शब्दों का निर्माण संयुक्त गणनावाचक संख्या शब्दों के समुदाय के अन्तिम भाग के साथ 'वाँ' प्रत्यय जोड़ने से होता है। जैसे चार सौ बीसवाँ।

हिन्दी में क्रमवाचक संख्या शब्द अपने विशेष्य के अनुसार लिंग, वचन तथा कारक में अपना रूप बदलते हैं। क्रमवाचक संख्या शब्दों का विकार विकारी विशेषणों की भाँति होता है। जैसे चौथा लड़का, चौथी लड़की, चौथे लड़के को, चौथी लड़की को, चौथे लड़के, चौथी लड़की। पाँचवाँ दिन, पाँचवें दिन के लिए, पाँचवीं तिथि, पाँचवीं तिथि को।

संयुक्त क्रमवाचक संख्या शब्दों में विकार होता है अन्तिम शब्द में। जैसे दो सौ तीसवाँ आदमी। दो सौ तीसवें आदमी का, दो सौ तीसवीं स्त्री।

'दूसरा' क्रमवाचक संख्या-शब्द 'अन्य' शब्द के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है। जैसे उन लोगों के अलावा दूसरा आदमी भी यहाँ आया था।

वाक्य में क्रमवाचक संख्या-शब्द प्राय गुणनिर्देशक होते हैं या विधेय के नामिक अंग होते हैं। जैसे (१) वह उनका तीसरा बच्चा है। (२) गाड़ी का डिब्बा दसवाँ है।

६

सर्वनाम

सवनाम एसे ग न हैं जो मना गदो विगेपणा तथा सरया गदा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। सना नब्दा विशपणा तथा सख्या शब्दा स सवनामा का यह भेद है कि वे वम्तुजो तथा उनकी विगेपताआ और निश्चित मात्राआ को साक्षात नही बतात है केवल उनका निर्देग करते हैं। सवनामा का अपना कोई स्थायी अथ नही हाना है वे उस ग द का अथ ग्रहण कर लेते है जिसक स्थान पर व प्रयुक्त होत हैं। इसलिए प्रसग स ही पता चलता है कि वया वस्तु विगपता या मात्रा अमुक सवनाम सूचित कर रहा है।

अपने अर्थों के अनुसार हिन्दी म सवनामा के निम्नलिखित भेद हैं—

(१) पुरुपवाचक सवनाम। जसे मैं तू यह वह तुम हम आप य वे।

(२) निर्देगवाचक। जसे यह, वह य व, एसा, वैसा इतना उतना।

(३) प्रश्नवाचक। जैसे क्या कौन कसा, कौन सा कितना।

(४) स्वामित्ववाचक। जसे मेरा तेरा हमारा तुम्हारा अपना।

(५) निजवाचक। जसे आप।

(६) सम्ब धवाचक। जस जो जैसा जितना।

(७) निश्चयवाचक। जस आप स्वय, खुद सब सारा तमाम समूचा हर, प्रति प्रत्यक।

(८) अनिश्चयवाचक। जस काई कुछ कई अनक चन्द, बाज।

हिन्दी म नकारात्मक सवनाम नहा ह। उनका काय करत हैं 'काई', तथा 'कुछ अनिश्चयवाचक सवनामा क साथ नहीं तथा न' निपाता के प्रयोग।

सर्वनामों का प्रयोग

पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनामों के तीन पुरुष होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष। उनके एकवचन तथा बहुवचन होते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम, आप
अन्य पुरुष	यह, वह	ये, वे

पुरुषवाचक सर्वनामों का अपना कोई स्थायी लिंग नहीं होता है। वे जिस शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उसी शब्द के अनुसार वाक्य में उनका लिंग निर्धारित होता है। सब पुरुषवाचक सर्वनाम वाक्य में स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होते हैं। वे उद्देश्य, कर्म तथा विधेय के नामिक अंग का कार्य करते हैं।

'मैं' सर्वनाम वक्ता अपने बारे में कोई बात व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया करता है।

'तू' सर्वनाम उस व्यक्ति को सूचित करता है जिसको सम्बोधन करके बात कही जाती है। 'तू' सर्वनाम का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है। वह प्रायः तब प्रयुक्त होता है जब किसी छोटे बच्चे को, बहुत घनिष्ठ व्यक्ति को, भगवान एवं अभीष्ट देवता को या अनादर भाव सूचित करने का सम्बोधन करके कुछ कहा जाता है।

'हम' सर्वनाम व्यक्तियों के ऐसे समूह को सूचित करता है जिसमें उत्तम पुरुष के वक्ता के साथ एक या एक से अधिक अन्य व्यक्ति भी होते हैं।

'तुम' सर्वनाम दो या दो से अधिक उन व्यक्तियों को सूचित करता है जिनको सम्बोधन करके बात कही जाती है। 'तुम' सर्वनाम सामान्य सम्बोधन में सबसे अधिक प्रयुक्त होता है। इस सर्वनाम का प्रयोग एक व्यक्ति को भी सम्बोधन करके कोई बात कहने में किया जाता है। 'तुम' का यह प्रयोग होता है प्रायः साथियों, घनिष्ठ मित्रों तथा सम्बन्धियों को सम्बोधन करके कुछ कहने में।

'आप' सर्वनाम मध्यम पुरुष का कार्य करते हुए विशेष आदरसूचक सम्बोधन में प्रयुक्त होता है। उसके साथ क्रिया का रूप बहुवचन अन्यपुरुष का प्रयुक्त होता है। जैसे आप कब जाते हैं?

'यह', 'वह', 'ये', 'वे' सर्वनाम उन व्यक्ति या वस्तु को सूचित करने

हैं जिसके बारे म बात हो रही होनी है। यह' तथा य' सवनाम निकटवर्ती व्यक्तिया या वस्तुओं को सूचित करते है। वह तथा 'वे' सवनाम दूरवर्ती या अनुपस्थित व्यक्तिया या वस्तु को सूचित करत है।

बहुवचन अथ म य' तथा वे के स्थान पर कभी-कभी यह तथा वह भी प्रयुक्त किये जात हैं। य व तथा यह वह' का प्रयोग प्राय अनेक व्यक्तिया के स्थान पर केवल एक व्यक्ति क लिए किया जाता है। इस तरह क प्रयोग म आदर का भाव सूचित होता है। अत क्रिया बहुवचन क्रिया प्रयुक्त होती है। जसे (१) यह (ये) यहा पढत हैं। (२) वह (व) शिक्षक हैं।

य 'व यह वह एक या अनक व्यक्तिया क लिए वाक्य म प्रयुक्त हुए है इसका प्रसग स पता लगता है।

एकवचन अन्यपुरुष के अथ म प्राय आप' सवनाम का प्रयोग होता है। एसे प्रयोग से उस व्यक्ति के प्रति आदर व्यक्त किया जाता है जिसक नाम का उल्लेख हो चुका है। जस आज सावजनिक सभा म मत्री महोदय न भाषण किया। भाषण म 'आपने जनता से शान्ति का सुदढ करन की अपील की।

निर्देशवाचक सवनाम

यह' तथा 'ये' निर्देशवाचक सवनाम निकटवर्ती व्यक्तिया या वस्तुओं को सूचित करते है। वह' तथा वे सवनाम दूरवर्ती तथा अनुपस्थित व्यक्तिया या वस्तुओं का सूचित करने क लिए प्रयुक्त होते ह। उनका अपना कोई लिंग नही होता है। जस यह लडका यह लडकी। य लडके ये लडकिया।

बहुवचन अथ म बहुधा य तथा व' के स्थान पर यह तथा वह का प्रयोग भी किया जाता है। जस यह (य) पुस्तकें हैं।

य तथा व सवनाम एक व्यक्ति क प्रति आदरसूचक भाव व्यक्त करन क लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

'ऐसा, वसा, 'इतना' तथा उतना' निर्देशवाचक सवनाम गुणनिर्देशक क रूप म या स्वतन्त्र रूप म भी प्रयुक्त होते हैं। जस एसा आदमी वसा आदमी इतना दूध ऐसा के लिए इतनो को।

एसा तथा वसा सवनाम गुणा का निर्देश करत हैं और इतना तथा उतना सवनाम मात्रा का। जस एसी पुस्तक। इतनी पुस्तकें।

एसा तथा इतना सवनाम निकटवर्ती व्यक्तियो या वस्तुआ का निर्देश करते है और वसा तथा उतना किन्ही दूरवर्ती एव अनुपस्थित व्यक्तिया या वस्तुआ का।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्नवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति या वस्तु, उनकी विशेषता या स्वामित्व या उनकी संख्या के विषय में प्रश्न व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है।

'क्या' तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम का लिंग नहीं होता है। सामान्य कारक में उनके बहुवचन रूप नहीं होते हैं। ये सर्वनाम किसी भी लिंग तथा वचन के संज्ञा शब्दों के साथ व्यवहृत हो सकते हैं। जैसे क्या पुस्तक ? क्या पुस्तकें ? कौन पुरुष ? कौन स्त्रियाँ ?

असामान्य कारक में उक्त प्रश्नवाचक सर्वनामों का वचन विशेष्य संज्ञा शब्दों के अनुसार होता है।

'क्या' सर्वनाम का प्रयोग स्वतन्त्र रूप में या संज्ञा शब्दों के साथ होता है। स्वतन्त्र प्रयोग में क्या सर्वनाम जानवरों तथा अप्राणीवाचक वस्तुओं का निर्देश करता है। संज्ञा शब्दों के साथ उसका प्राणीवाचक तथा अप्राणीवाचक दोनों के साथ प्रयोग होता है तथा वस्तु की विशेषता के बजाय वह सामान्यता का निर्देश करता है। जैसे (१) (प्रश्न) यह क्या है ? (उत्तर) यह कुत्ता है। (२) यह क्या पुस्तक है ? (३) यहाँ क्या आदमी है ?

कौन प्रश्नवाचक सर्वनाम प्रायः व्यक्तियों के विषय में प्रयुक्त होता है। यह सर्वनाम भी स्वतन्त्र रूप में या व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों के साथ व्यवहृत होता है। जैसे (१) (प्रश्न) यह कौन है ? (उत्तर) यह हमारा शिक्षक है। (२) आज कौन विद्यार्थी अनुपस्थित है ?

'कैसा' तथा 'कौनसा' प्रश्नवाचक सर्वनाम बहुधा संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। कैसा सर्वनाम वस्तु के गुण का बोध कराता है। 'कौन सा' सर्वनाम का प्रयोग तब होता है जब अनेक एक सी वस्तुओं में से किसी का निर्देश करना अभीष्ट होता है या जब उनके क्रम का पता लगाने की इच्छा होता है। जैसे (१) (प्रश्न) यह कैसी पेंसिल है ? (उत्तर) यह लाल पेंसिल है। (२) (प्रश्न) यह कौनसी किताब है ? (उ०) यह हिन्दी की किताब है। (३) तुम्हारे घर का नम्बर कौन सा है ?

कितना प्रश्नवाचक सर्वनाम स्वतन्त्र रूप में या संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (१) यह कितनों को मालूम है ? (२) कमरे में कितना मेजें है ?

साथ या स्वतन्त्र रूप म प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (i) सब लोग (ii) आज सब उपस्थित हैं।

शेष निश्चयवाचक सवनामो का प्रयोग सना-शब्दो के साथ होता है। आप स्वय खुद सवनाम सना शब्दो तथा पुरुषवाचक सवनामो के साथ प्रयुक्त होते हैं। 'तमाम समूचा सारा' 'हर प्रत्येक केवल सना शब्दो के साथ व्यवहृत होते हैं। गणनीय सना शब्द सब तथा तमाम सवनामो के साथ प्रयोग म बहुवचन म होता है जबकि हर प्रति, प्रत्येक सवनामो के साथ एकवचन मे। प्रति सवनाम प्राय क्रियाविशेषणार्थक शब्द समुदाय म प्रयुक्त होता है। जसे प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति।

तमाम समूचा, 'सारा हर प्रति प्रत्येक सवनाम अपने विशेष्य से पहले प्रयुक्त होते हैं। आप तथा स्वय सवनाम विशेष्य से पहले या पश्चात कहो भी प्रयुक्त हो सकते हैं। जसे मैं आप हम खुद खुद हम वे स्वय ये सब गवय।

अनिश्चयवाचक सवनाम

अनिश्चयवाचक सवनाम अज्ञात अनिश्चित व्यक्तियो तथा वस्तुओ और उनकी विशेषताओ का निर्देश करते हैं इसलिए उनके अथ स्पष्ट नही होते हैं।

अनिश्चयवाचक सवनामो का लिंग नही होता है। अनिश्चयवाचक सवनामो का प्रयोग या सना शब्दो के साथ होता है या स्वतन्त्र रूप म। वे सना विशेष्य से पूव प्रयुक्त होते है। कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम एकवचन म या बहुवचन अथ म प्रयुक्त हो सकते है किन्तु कई चन्द तथा बाज केवल बहुवचन अथ म प्रयुक्त होते हैं। कई चन्द तथा बाज केवल गणनीय सना शब्दो के साथ इस्तेमाल होते है। कुछ तथा कोई गणनीय तथा अगणनीय दोनो ही सज्ञा शब्दो के साथ व्यवहृत हो सकते है। गणनीय सना शब्द कुछ कई अनेक चन्द तथा 'बाज सवनामो के साथ सदा बहुवचन म प्रयुक्त होते है। जसे कुछ पुस्तकें कई (चन्द बाज) लडके।

सयुक्त सवनाम

सयुक्त सवनाम पृथक श्रेणी के सवनाम है। वस अपने अर्थों के अनुसार सयुक्त सवनामो को ऊपर वर्णित सवनामो के किसी न किसी भेद म समाविष्ट हो सकता है परतु सवनामो के सब भेदो से उनकी भिन्नता इसलिए है क्योकि

उनमे एक शब्द नही बल्कि एक से अधिक शब्द होते है। संयुक्त सर्वनाम स्वतंत्र रूप से या संज्ञा-शब्दों के साथ भी प्रयुक्त होते है। संयुक्त सर्वनामो का निर्माण होता है—

(क) जो सब हर सर्वनामो तथा 'और' विशेषण के साथ कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनामो के संयोजन से। जैसे जो कोई 'सब कोई', 'हर कोई', 'और कोई', कोई और जो कुछ' सब कुछ और कुछ' कुछ और।

(ख) कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनामो के साथ एक सख्यावाचक तथा भी निपात के संयोजन से। जैसे कोई एक, 'एक कोई' 'कोई भी कुछ एक, कुछ भी।

(ग) हर' निश्चयवाचक सर्वनाम के साथ एक सख्या शब्द के संयोजन से।

(घ) कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनामो की पुनरुक्तिया मे जिनके बीच 'न निपात होता है। जैसे कोई-न कोई, कुछ न-कुछ।

(ङ) कोई तथा 'कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनामो की पुनरुक्तिया से। जैसे कोई-कोई कुछ कुछ।

वाक्य मे सर्वनामो का कार्य

सर्वनाम ऐसा विशेष शब्द भेद है जिसका संज्ञा शब्दो विशेषणो और सख्या-शब्दो के साथ सम्बन्ध होता है। अपने विकारी रूपो, ऊपर वर्णितो मे सम्बन्धो तथा वाक्य मे अपने कार्यों के अनुसार हिन्दी मे सर्वनामो के निम्न-लिखित तीन प्रकार हैं—

'संज्ञा सर्वनाम, विशेषण सर्वनाम तथा 'सख्या सर्वनाम।

हिन्दी मे बहुधा एक ही सर्वनाम वाक्य मे अपने कार्य के अनुसार संज्ञा सर्वनाम या विशेषण सर्वनाम के रूप मे प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (i) कौन आया है? (ii) कौन आदमी आये हैं? (iii) ऐसा को घर मे न आने दो। (iv) ऐसा घर मुझे पसन्द है।

संज्ञा सर्वनाम वाक्य मे संज्ञा-शब्दो का निर्देश करते है। उनमे समाविष्ट हैं—

(क) सारे पुरुषवाचक सर्वनाम।

(ख) 'कौन तथा क्या प्रश्नवाचक सर्वनाम।

(ग) 'आप' निजवाचक सर्वनाम।
(घ) निजवाचक सर्वनाम के अर्थ में प्रयुक्त 'अपना' स्वामित्ववाचक सर्वनाम।
(ङ) जो सम्बन्धवाचक सर्वनाम।
(च) 'सब', 'हर' हर एक' प्रत्यक्ष निश्चयवाचक सर्वनाम।
(छ) 'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

कुछ सर्वनाम को छोड़कर सब संज्ञा सर्वनाम कारक में विकारी होते हैं। संज्ञा सर्वनामों का अपना कोई लिंग नहीं होता है। सामान्य कारक में एकवचन में बदलते हैं केवल उत्तम तथा मध्यम पुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम। असामान्य कारक में 'कोई' 'कुछ' तथा 'आप' सर्वनामों को छोड़कर सबके बहुवचन रूप होते हैं।

विशेषण सर्वनाम वाक्य में विशेषणों तथा क्रमवाचक संख्या-शब्दों का निर्देश करते हैं। विशेषणों की तरह वे वाक्य में प्रायः संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। उनमें परिगणित होते हैं—

(क) इतना तथा उतना सर्वनामों को छोड़कर शेष निर्देशवाचक सर्वनाम।
(ख) कितना सर्वनाम को छोड़कर अन्य प्रश्नवाचक सर्वनाम।
(ग) स्वामित्ववाचक सर्वनाम।
(घ) जितना' सर्वनाम को छोड़कर अन्य सम्बन्धवाचक सर्वनाम।
(ङ) निश्चयवाचक सर्वनाम।
(च) 'कोई' तथा 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

संयुक्त सर्वनाम संज्ञा सर्वनामों या विशेषण सर्वनामों की भांति वाक्य में प्रयुक्त हो सकते हैं।

संख्या सर्वनाम वाक्य में संख्या शब्दों का निर्देश करते हैं। गणनावाचक संख्या शब्दों की भांति वे वाक्य में उद्देश्य, कर्म तथा गुणनिर्देशक के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं।

संख्या सर्वनामों में परिगणित होते हैं —

(क) इतना तथा 'उतना' निर्देशवाचक सर्वनाम।
(ख) कितना प्रश्नवाचक सर्वनाम।
(ग) कई 'अनेक' चन्द तथा बाज अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

सर्वनामो का विकार

सज्ञा-सवनामो का विकार

सना सवनामा के विकार म भी वही नियम लागू होने है जो मनाओ के विकार मे लागू हाने है। तदनुसार सना सवनामा के सामाय कारक मे रूप विभक्तिचिह्ना के बिना होत हैं तथा असामाय कारक मे रूप विभक्ति चिह्नो के साथ प्रयुक्त हाने है। परतु मना सवनामा के विकार की कुछ निश्चित विशेपताएँ हैं—

(क) उनके मम्बोधन कारक होने हैं।

(ख) उनके सामाय कारक रूप सामाय कारक रूपा से बहुत भिन होा है।

(ग) कुछ सज्ञा सवनामा के विशेप बहुवचन असामाय कारक रूप होते हैं जो न विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होत हैं।

(घ) अधिकतर सना सवनामा का कम कारक होता है जिसम एक वचन मे 'ए कारकात प्रत्यय होता है तथा बहुवचन मे 'ए या 'ह कारकात प्रत्यय होते है। प्रयोग के अनुसार यह कम कारक को' विभक्तिचिह्न सहित असामाय कारक रूप के समान होता है।

इस प्रकार सम्बोधन कारक के अभाव क होन भी 'आप' मब', कोई' तथा कुछ सवनामा का छोडकर शेप सना सवनामा के तीन कारक होत हैं सामाय कारक, असामाय कारक और कम कारक।

सना-सवनामा का सामाय कारक रूप शब्दकोश म दिया गया रूप होना है।

असामाय कारक विभक्तिचिह्ना के साथ प्रयुक्त सवनामो का रूप होता है। मवनामा के असामाय कारक रूप का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होना है उनके अथ का निर्धारण उस विभक्तिचिह्न द्वारा होता है जिसके साथ व प्रयुक्त होत हैं।

कम कारक स्वतन्त्र रूप से विभक्तिचिह्ना के बिना प्रयुक्त हाते हैं। यह सम्प्रदान और कम का अथ देता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	उत्तम पुरुष		मध्यम पुरुष		अन्य पुरुष	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	मैं	हम	तू	तुम	यह वह	ये, वे
असामान्य कारक	मुझ	हम	तुझ	तुम	इस उस	इन उन
ने के साथ प्रयुक्त असामान्य कारक	मैं	हम	तुम	तुम	इस उस	इन्हों उन्हों
कर्म कारक	मुझे	हमें	तुझे	तुम्हें	इसे उसे	इन्हें, उन्हें

उपरोक्त तालिका में पता चलता है कि आप सर्वनाम के विकारी रूप नहीं होते हैं। हम तथा तुम उत्तम तथा मध्यम पुरुष वाले सर्वनामों के असामान्य कारक रूप उनके रूपों के समान होते हैं। ने के साथ प्रयुक्त उत्तम तथा मध्यमपुरुष वाले सर्वनामों के असामान्य कारक रूप भी सामान्य कारक के समान होते हैं। अन्य पुरुष वाले सर्वनाम यह तथा वह ये तथा वे ने के साथ विशेष असामान्य कारक रूप में प्रयुक्त होते हैं।

इसके अलावा उल्लेखनीय बात यह है कि दोनों वचनों के उत्तम तथा मध्यमपुरुष वाले पुरुषवाचक सर्वनामों का असामान्य कारक रूप उन जटिल विभक्तिचिह्नों के साथ प्रयुक्त नहीं होता है जिनका पूर्व भाग होता है के या 'की' विभक्तिचिह्न। उक्त पुरुषवाचक सर्वनामों के असामान्य कारक रूप के स्थान पर स्वामित्ववाचक सर्वनामों का प्रयोग होता है।

'क्या' तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन		बहुवचन	
सामान्य कारक	क्या	कौन	क्या	कौन
असामान्य कारक	किस	किस	किन	किन
ने के साथ प्रयुक्त असामान्य कारक	किस	किस	किन्हों	किन्हों
कर्म कारक	किसे	किसे	किन्हें	किन्हें

जैसा कि ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट है क्या तथा कौन सर्वनामों के विकारी रूप एक से होते हैं। बहुवचन में उनका विशेष असामान्य कारक रूप है जो केवल ने विभक्तिचिह्न के साथ प्रयुक्त होता है।

'आप' निजवाचक सर्वनाम

'आप' निजवाचक सर्वनाम का कर्म कारक नहीं होता है और उसका असामान्य कारक में रूप प्राय सामान्य कारक के रूप जैसा होता है। उदाहरणार्थ, आपका, आपसे, आपमें।

कभी-कभी 'आप' सर्वनाम का पुराना असामान्य कारक रूप 'आपस' प्रयुक्त होता है। इस पुराने रूप का प्रयोग केवल 'का' तथा 'में' विभक्तिचिह्नों के साथ होता है। जैसे आपस का, आपस में।

जैसा उल्लेख किया जा चुका है निजवाचक सर्वनाम के साथ बहुधा किसी भी विभक्तिचिह्न के साथ 'अपना' स्वामित्ववाचक सर्वनाम का असामान्य कारक कर रहा होता है। जैसे अपने का, अपने से, अपने में।

'आप' तथा 'अपना' सर्वनाम दोनों वचनों के अर्थों में प्रयुक्त होते हैं तथा वे दोनों लिंगों में तीनों पुरुषों में सम्बन्धित हो सकते हैं। 'आप' तथा 'अपना' के एक साथ प्रयोग में दोनों सर्वनाम अपने अर्थ की अतिशयता को प्रकट किया करते हैं। जैसे अपने आप का, अपने आप से।

जब 'अपना' सर्वनाम संज्ञा-सर्वनाम की भाँति प्रयुक्त होता है तब उसका विकार आकारान्त संज्ञा शब्दों के समान होता है।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	अपना	अपने
असामान्य कारक	अपने	अपनों
सम्बोधन कारक	अपना ! अपने !	अपनो !

'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	जो	जो
असामान्य कारक	जिस	जिन
'ने' के साथ प्रयुक्त		
असामान्य कारक	जिस	जिन्हों
कर्म कारक	जिसे	जिन्हें

अन्य पुरुष वाले सर्वनाम तथा 'क्या' और 'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनामों

की भाँति जो' सम्बन्धवाचक सवनाम का 'ने विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होने वाला विशेष असामान्य कारक रूप है।

निश्चयवाचक सवनाम

सज्ञा सवनाम के रूप म प्रयुक्त 'सब निश्चयवाचक सवनाम के दो कारक होते हैं—सामान्य कारक तथा असामान्य कारक। जैसे सब, सबों। परन्तु सब सवनाम विभक्तिचिह्नों के साथ सामान्य कारक के रूप म भी प्रयुक्त हो सकता है। जसे सबको, सबके साथ इत्यादि।

हर हर एक प्रत्यक निश्चयवाक सवनाम अविकारी होत हैं।

अनिश्चयवाचक सवनाम

सज्ञा सवनामो के रूप म प्रयुक्त कोई अनिश्चयवाचक सवनाम क असामान्य कारक का एकवचन तथा बहुवचन म एक ही रूप होता है। इसी रूप का उपयोग ने विभक्तिचिह्न के साथ भी होता है। जैसे सामान्य कारक है कोई और असामान्य कारक है किसी'। 'कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम अविकारी है।

विशेषण सवनाम का विकार

विशेषणो की भाँति विशेषण सवनाम विकार की विशेषताओ क अनुसार विकारी तथा अविकारी दो तरह के होत है। विकारी विशेषण सव नाम अपन विशेष्य सज्ञाशब्दो के अपने रूप बदलत हैं। अविकारी विशेषण सव नामों के रूप अपरिवर्तित रहते हैं। विकारी विशेषण सवनामो म समाविष्ट हैं निम्नलिखित सवनाम—

(क) 'यह वह, य वे ऐसा' तथा वसा निर्देशवाचक सवनाम।

(ख) 'क्या कौन कसा तथा कौन सा प्रश्नवाचक सवनाम।

(ग) मरा तरा हमारा तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनाम।

(घ) जो तथा जसा सम्बन्धवाचक सवनाम।

(ङ) समूचा तथा सारा निश्चयवाचक सवनाम।

(च) कोई अनिश्चयवाचक सवनाम।

अविकारी विशेषण सवनामो म समाविष्ट हैं निम्नलिखित—

(क) आप, स्वय, 'खुद 'सब तमाम', हर', 'प्रत्यक' निश्चय

वाचक सर्वनाम ।

(ख) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम ।

'यह', 'वह' 'ये', 'वे' तथा 'जो' विशेषण-सर्वनामों का कारक रूप अपने विशेष्यों के अनुसार बदलता है।

'ऐसा' 'कैसा', 'वैसा', 'कौन सा', 'मेरा' तथा 'तुम्हारा', 'हमारा', 'अपना' 'जैसा', 'समूचा', 'सारा' विशेषण सर्वनाम अपने विशेष्य संज्ञा शब्दों के अनुसार आकारान्त विकारी विशेषणों की भाँति लिंग, वचन तथा कारक में बदलते हैं। जैसे ऐसा लड़का ऐसे लड़के ऐसी लड़की ऐसी लड़कियाँ, ऐसे लड़के को, ऐसी लड़की को, मेरी पुस्तक, मेरी पुस्तक, मेरी पुस्तक में।

कोई विशेषण सर्वनाम अपने विशेष्य संज्ञा शब्द के अनुसार प्रायः कारक में बदलता है।

निर्देशवाचक सर्वनाम

'यह', 'वह' 'ये' तथा 'वे' निर्देशवाचक सर्वनामों के केवल दो कारक होते हैं—सामान्य कारक तथा असामान्य कारक।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	यह	ये
	वह	वे
असामान्य कारक	इस	इन
	उस	उन

'ऐसा तथा वैसा' निर्देशवाचक सर्वनामों के दो कारक होते हैं—सामान्य कारक तथा असामान्य कारक। पुल्लिंग में दोनों वचनों का कारक रूप बहुवचन के सामान्य कारक के रूप के समान होता है। स्त्रीलिंग में दोनों वचनों में ई अन्त्य प्रत्यय सामान्य है।

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	ऐसा	ऐसी	ऐसे	ऐसी
	वैसा	वैसी	वैसे	वैसी
असामान्य कारक	ऐसे	ऐसी	ऐसे	ऐसी
	वैसे	वैसी	वैसे	वैसी

प्रश्नवाचक सवनाम

'क्या तथा कौन प्रश्नवाचक सवनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। 'क्या तथा 'कौन सवनामो के असामान्य कारक एक जसे होते हैं।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	क्या	क्या
	कौन	कौन
असामान्य कारक	किस	किन
	किस	किन

कसा तथा कौनसा प्रश्नवाचक सवनामा के भी दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। इन सवनामा के रूप भी एसा तथा वसा' निर्देशवाचक सवनामा की भाति वर्णित हैं।

स्वामित्ववाचक सवनाम

मेरा, तेरा' हमारा तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनाम सना शब्द के साथ तीनो कारको अर्थात सामान्य असामान्य और सम्बोधन कारको मे प्रयुक्त हो सकते हैं। सामान्य तथा असामान्य कारक म ये सवनाम वे अन्त्य प्रत्यय ग्रहण कर लेते हैं जो एसा तथा 'वसा निर्देशवाचक सवनाम ग्रहण किया करते हैं। सम्बोधन कारक मे उनके अन्त्य प्रत्यय असामान्य कारक के अन्त्य प्रत्यया जसे होते है।

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	मेरा	मेरी	मेरे	मेरी
असामान्य कारक	मेरे	मेरी	मेरे	मेरी
सम्बोधन कारक	मेरे	मेरी	मेरे	मेरी

तेरा हमारा तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनाम मेरा सवनाम की तरह अपने कारक रूप वर्णित हैं। जब स्वामित्ववाचक सवनामा का प्रयोग जन्य विभक्तिचिह्ना के साथ होता है तब जन्य विभक्ति चिह्ना के पूर्व भाग के या की का लोप हो जाता है और स्वामित्ववाचक

विभक्ति चिह्न का पूर्व भाग के विभक्तिचिह्न हो या स्त्रीलिंग 'ई' अन्य प्रत्यय ग्रहण कर लेते हैं बशर्ते जटिल विभक्तिचिह्न का पूर्व भाग की विभक्तिचिह्न हो। जैसे मेरे पास (के पास)। हमारी ओर (की ओर)।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम के दो कारक होते हैं सामान्य तथा असामान्य।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	जो	जो
असामान्य कारक	जिस	जिन

जैसा सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'ऐसा' तथा 'वैसा' निर्देशवाचक सर्वनामों की भाँति कारकों में अपना रूप बदलता है।

निश्चयवाचक सर्वनाम

'समूचा' तथा 'सारा' निश्चयवाचक सर्वनामों के रूप कारकों में 'ऐसा' तथा 'वैसा' निर्देशवाचक सर्वनामों की भाँति बदलते हैं।

'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम

'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम के दो कारक हैं सामान्य तथा असामान्य। सामान्य कारक के दोनों वचनों में उसका रूप होता है 'कोई' किन्तु असामान्य कारक के एकवचन में 'किसी' तथा बहुवचन में 'किन्हीं' होता है। जैसे कोई पुस्तक, कोई पुस्तकें। किसी पुस्तक में किन्हीं पुस्तकों में।

संयुक्त सर्वनामों का विकार

'कोई' के साथ निर्मित संयुक्त सर्वनामों के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। जैसे

सर्वनाम	सामान्य कारक		असामान्य कारक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जो कोई	जो कोई	जो कोई	जिस किसी	जिन किसी
सब कोई	—	सब कोई	—	सब किसी
हर कोई	हर कोई	—	हर किसी	—

सर्वनाम	सामान्य कारक		असामान्य कारक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
और कोई	और कोई	और कोई	और किसी	और किन्हीं
कोई और	कोई और	कोई और	किसी और	किन्हीं और
दूसरा कोई	दूसरा कोई	दूसरे कोई	दूसरे किसी	दूसरे किन्हीं
कोई दूसरा	कोई दूसरा	कोई दूसरे	किसी दूसरे	किन्हीं दूसरे
कोई एक	कोई एक	—	किसी एक	—
एक कोई	एक कोई	—	एक किसी	—
कोई भी	कोई भी	कोई भी	किसी भी	किन्हीं भी
कोई न कोई	कोई न कोई	कोई न कोई	किसी न किसी	किन्हीं न किन्हीं
कोई कोई	कोई कोई	कोई कोई	किसी किसी	किन्हीं किन्हीं

कुछ के साथ निर्मित संयुक्त सर्वनाम। जैसे 'जो कुछ' 'सब कुछ' 'और कुछ' इत्यादि। इनके विकारी रूप नहीं होते हैं।

हर एक संयुक्त सर्वनाम भी अविकारी है।

संख्या सर्वनामों का विकार

संख्या सर्वनाम अपने विकारों की विशेषताओं तथा वाक्य में उनके कार्य के अनुसार होते हैं

(क) विकारी। जैसे इतना उतना कितना जितना।

(ख) आंशिक रूप से विकारी। जैसे कई अनेक तथा बाज।

(ग) अविकारी। जैसे 'चन्द'।

स्वतंत्र प्रयोग में 'इतना', 'उतना' 'कितना' तथा 'जितना' संख्या सर्वनामों का विकार आकारान्त संज्ञा शब्दों की भांति होता है। संज्ञा शब्दों के साथ प्रयोग में उनके लिंग वचन तथा कारक अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे *इतना दूध इतनी रात्रि इतने घर इतनी कापियाँ इत्यादि*। उद्देश्य के रूप में भी उक्त संख्या सर्वनाम प्रायः उस संज्ञा शब्द का लिंग ग्रहण कर लेते हैं जिसका वे निर्देश करते होते हैं। जैसे (i) आज दो विद्यार्थी अनुपस्थित हैं कल भी उतने अनुपस्थित थे। (ii) मेरे पास पांच पुस्तकें हैं आपके पास कितनी हैं?

कई अनेक तथा बाज संख्या सर्वनाम स्वतंत्र प्रयोग में (अर्थात उद्देश्य तथा कर्म के रूप में) कारक में अपना रूप बदलते हैं। संज्ञा शब्दों के

साथ प्रयोग म कारक म वे अविकारी होत हैं। जसे कई (अनेक, वाज़) औरतें। कई (अनेक वाज़) औरता के लिए।

'च द सख्या सवनाम स्वतन्त्र या मना शब्दा के साथ प्रयोग म अविकारी ही रहता है।

जब 'कई', 'अनक तथा 'वाज़ सख्या सवनाम वाक्य मे उद्देश्य का काय करत है तब उनका विधेय बहुवचन म होता है। जैसे कई (अनक वाज) आज आये है, कई कल।

मना शब्दा के साथ प्रयोग म 'इतना उतना' कितना' तथा 'जितना सख्या-सवनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। उनके वही अन्य प्रत्यय होन हैं जो एसा' तथा 'वैसा' निर्देशवाचक सवनामा के होन हैं। जसे

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	इतना	इतनी	इतने	इतनी
असामान्य कारक	इतन	इतनी	इतने	इतनी

'उतना, कितना' तथा जितना सख्या सवनाम सज्ञा शब्दा के साथ प्रयोग म इतना सवनाम की भाति बदलते हैं। स्वतन्त्र प्रयोग म इतना 'उतना, 'कितना तथा जितना सख्या-सवनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। जैस

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	इतना	इतन
असामान्य कारक	इतने	इतना

शेष सवनाम इतन की भाति अपने रूप बदलत हैं।

कई अनक तथा 'वाज़ सख्या सवनामा के दो कारक होन हैं—सामान्य तथा असामान्य। सामान्य कारक—कई अनक 'वाज़। असामान्य कारक—कइया अनेका, 'वाजा। परन्तु उक्त सवनाम विभक्तिचिह्ना के साथ कभी-कभी सामान्य कारक के रूप म भी व्यवहृत होते है।

सवनामा क निश्चयार्थक रूप

नामो तथा जो सम्बन्धवाचक सवनाम के निश्चयाथक रूप हात हैं जा एकवचन म ही तथा ई निपाता के योग से और बहुवचन म ही तथा ई' निपाता के योग से बनत हैं। निश्चयाथक रूप म उक्त सवनामा का प्रयोग स्वतत्र रूप से या सना शब्दा के माथ होता है। अन्यपुरुष के सवनामा तथा निर्देशवाचक सवनामा के निश्चयाथक रूप एकसे होने है।

एकवचन		बहुवचन	
सामान्य कारक	असामान्य कारक	सामान्य कारक	असामान्य कारक
मै ही	मुझी	हम ही, हमी	हमी
तू ही	तुझी	तुम्हा तुम्ही	तुम्ही
यही	इसी	य ही,	इन्ही
वही	उसी	व ही	उन्हा
जो ही	जिसी	जो ही	जिन्हा

उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सवनामा के असामान्य कारक के एकवचन मे निश्चयाथक रूपा मुझी तथा तुझी को छोड करके सवनामा के उक्त सार निश्चयाथक रूप असामान्य कारक म ने विभक्तिचिह्न के साथ भी प्रयुक्त होते हैं। उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सवनाम एकवचन म ने विभक्तिचिह्न के साथ प्रयोग म असामान्य कारक के रूप म व्यवहृत होते है। जसे मैं ही ने यह कहा। तू ही ने यह काम किया।

सब सवनाम का निश्चयाथक रूप है सभी। वह स्वतत्र रूप म या सज्ञा शब्दा के साथ प्रयुक्त होता है।

७

क्रिया

क्रिया में ऐसे शब्दों का समावेश होता है जो व्यापार या अवस्था को व्यक्त करते हैं।

वाक्य में क्रिया मुख्य रूप से विधेय का कार्य किया करती है। इसलिए क्रिया के विधेय सम्बन्धी विशेष रूप है—प्रकार (मूड), काल, विधि (ऐस्पक्ट) वचन, पुरुष इत्यादि।

वस्तुस्थिति के प्रति व्यापार के सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए हिन्दी में क्रिया के चार प्रकार होते हैं निश्चयार्थक, आज्ञार्थक, सम्भावनार्थक तथा संकेतार्थक।

क्रिया के प्रकारों के साथ हिन्दी में काल का घनिष्ठ सम्बन्ध है। काल क्रिया के व्यापार के समय के साथ क्रिया के व्यापार या अवस्था का सम्बन्ध व्यक्त करता है।

क्रिया के विभिन्न प्रकारों के क्रियापरक भेद अलग-अलग संख्या वाले हैं। निश्चयार्थक प्रकार में १५ क्रियापरक भेद हैं। सम्भावनार्थक तथा संकेतार्थक प्रकार में चार चार क्रियापरक भेद हैं। आज्ञार्थक प्रकार में क्रिया के विशेष भेद है।

हिन्दी में क्रिया के दो वचन होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन। प्रत्येक वचन के तीन पुरुष होते हैं—उत्तम, मध्यम और अन्य।

व्यापार के कर्म की दृष्टि से क्रियाएँ होती हैं सकर्मक तथा अकर्मक। सकर्मक क्रियाओं के साथ प्रधान कर्म होते हैं जो उस वस्तु को व्यक्त करते हैं जिस पर व्यापार का प्रभाव होता है, जैसे पानी पीना, या उस वस्तु को व्यक्त करते हैं जो व्यापार का फल होती है। जैसे घर बनाना।

उन क्रियाओं के साथ प्रधान कर्म नहीं आता है जो ऐसे व्यापार या अवस्था को व्यक्त करता है जिसका प्रभाव दूसरी वस्तु पर नहीं होता है। जैसे होना, आना, पहुँचना आदि। इस प्रकार की क्रियाओं में समाविष्ट होना है

कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य। जैसे पढ़ना, पढ़ा जाना। लिखना, लिखा जाना।

(च) क्रिया का सामान्य रूप सामान्य क्रिया विधेय का कार्य कर सकता है। ऐसा तब होता है जब क्रिया के व्यापार की प्रेरणा, आज्ञा या निषेध व्यक्त करना होता है। जैसे आज ही यह करना। वहाँ कभी मत जाना।

(छ) क्रिया के सामान्य रूप में ऐसी वाक्यरचना बनती है जो अर्थ के अनुसार क्रिया के पुरुषवाचक रूपों की भाँति होती है। जैसे दाढ़ी के सब बाल सफेद हो जाने के बावजूद लोगों ने चिरागदान के बाप अब्दुलगनी को पहचान लिया।

हिन्दी में क्रिया का सामान्य रूप व्यापार का निर्देश करने के साथ साथ क्रियार्थक भाववाचक संज्ञा भी होता है। जैसे जाना खाना पीना।

क्रियार्थक भाववाचक संज्ञा होते हुए क्रिया के सामान्य रूप की संज्ञा सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं—

(क) क्रिया के सामान्य रूप का लिंग होता है पुल्लिंग।

(ख) *क्रिया के सामान्य रूप के दो कारक होते हैं सामान्य कारक तथा* असामान्य कारक। कारकों में क्रिया के सामान्य रूप बदलते हैं केवल एकवचन में। क्रिया के सामान्य रूप के सामान्य कारक का अन्त्य प्रत्यय उसके हिन्दी शब्दकोष में स्थित रूप जैसा होता है। उसके असामान्य कारक का अन्त्य प्रत्यय होता है ए जो हिन्दी के आकारान्त संज्ञा शब्दों के एकवचन असामान्य कारक के अन्त्य प्रत्यय की भाँति है। जैसे खाना खाने।

(ग) असामान्य कारक में क्रिया का सामान्य रूप उन्हीं विभक्तिचिह्नों के साथ प्रयुक्त होता है जो संज्ञाशब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे खाने का खाने को खाने के लिए इत्यादि।

(घ) क्रिया के सामान्य रूपों के साथ विशेषण सर्वनाम तथा संज्ञाशब्द का प्रयोग हो सकता है। जैसे मुझे अच्छा पढ़ना पसन्द है। मेरे आने से वह प्रसन्न हुआ। राम के जाने से काम में बाधा पहुँची।

(ङ) क्रिया का सामान्य रूप वाक्य में वह कार्य भी कर सकता है जो संज्ञाशब्द करते हैं। जैसे (उद्देश्य) नहाना अच्छा है।

चिडियो के चहचहाने ने मुझे जगा दिया। (गुण निर्देशक)—लिखने की मेज। (विधेय के नामिक अंग)—विद्यार्थियो का वतव्य पढना है। (विशेषताबोधक)—पति के आने पर भी वह औरत चुप न रही।

क्रिया के सामान्य रूप मे क्रिया तथा सज्ञा सम्बन्धी विशेषताओ के साथ-साथ उसकी विशेषण सम्बन्धी विशेषताएँ भी है। क्रिया के सामान्य रूप मे विशेषण सम्बन्धी विशिष्टताएँ देखने मे आती है उद्देश्य के रूप मे उन क्रियाओ के साथ सयोजना मे तथा क्रियानामिक शब्दसमुदायो मे जो व्यापार का आरम्भ या समाप्ति सूचित करते है (आरम्भ होना शुरू होना आरम्भ करना, शुरू करना, खत्म होना खत्म करना बन्द होना, बन्द करना छोडना आदि), चाहना तथा पसन्द करना जैसी क्रियाओ के साथ सयोजना मे और साध्यतामूलक तथा आवश्यकतामूलक वाक्यो मे। क्रिया का सामान्य रूप लिंग तथा वचन मे उस उद्देश्य के अनुसार हो सकता है जो सामान्य कारक मे सज्ञाशब्द मे व्यक्त होता है बशर्ते विधेय मे अकर्मक क्रिया हो और लिंग तथा वचन मे उस प्रधान कर्म के अनुसार हो जो सामान्य कारक मे सज्ञाशब्द से व्यक्त होता है बशर्ते विधेय मे क्रिया सकर्मक हो। क्रिया के सामान्य रूप लिंग तथा वचन मे सज्ञाशब्द के अनुसार होते हुए आकारान्त विशेषणो की भाति बदलते है। जैसे (१) दोनो तरफ के दरवाज़े बन्द होने बेहतर है। (२) इनके शब्द याद करने मुश्किल हैं। (३) दमाव के महीने मे मन करने शुरू हो जाते हैं। (४) उसने कविता पढनी शुरू की। (५) गाव भर ने उसमे बात करनी छोड दी। (६) मैं उसको एक चिट्ठी भेजनी चाहती हूँ। (७) दीवार ऊचाई मे कम होनी चाहिए। (८) यह रिपोर्ट पन्द्रह अप्रैल तक लखनऊ पहुँच जानी चाहिए। (९) आज मुझे बहुत काम करना है। (१०) इसके लिए अपनी तमाम शक्तिया जमा करनी आवश्यक है।

क्रिया की धातु

क्रिया के सामान्य रूप से -ना प्रत्यय पृथक किया जाय तो क्रिया की धातु शेष रहती है। जैसे 'पढना' की धातु है पढ्, 'लिखना' की धातु है लिख् और 'बांधना' की धातु है बांध्।

क्रिया की धातुएँ होती हैं अव्युत्पन्न तथा व्युत्पन्न। जैसे पढ् अव्युत्पन्न धातु किन्तु पढा तथा पढ़वा हैं व्युत्पन्न धातुएं।

क्रियाओ की अव्युत्पन्न धातुएँ प्रायः मौलिक भाववाचक सज्ञाओ का

भाँति प्रयुक्त होता है। जैसे समझ चमक लूट आदि।

क्रियाओं की अनेक धातुओं ने मूल अर्थ ग्रहण कर लिये और इसके साथ ही वचन भी। जैसे माग—मागें 'लूट—लूटें।

सिद्धान्तत क्रिया की प्रत्येक अव्युत्पन्न धातु भाववाचक संज्ञा शब्द की भांति प्रयुक्त हो सकती है, परन्तु वर्तमान हिन्दी भाषा में क्रिया की अनेक अव्युत्पन्न धातुओं का प्रयोग संज्ञाशब्दों की तरह नहीं होता है। जैसे पढ लिख, कह। क्रिया की व्युत्पन्न धातुएँ क्रियार्थक संज्ञा शब्दों की भाँति कभी भी प्रयुक्त नहीं होती हैं उनसे क्रिया के अपुरुषवाचक तथा पुरुषवाचक रूपों का निर्माण होता है। इस प्रकार की धातुओं में समाविष्ट होती है व सामान्य नामिक क्रियाओं की धातुएँ जो ना अन्त्य प्रत्यय द्वारा बनी होती हैं। जैसे बदलना—बदल। विचारना—विचार।

वास्तव में उक्त क्रियाओं की धातुएं मूल संज्ञाशब्द के व्याकरणपरक समनाम शब्द हैं जिसमें स्वतन्त्र प्रयोग में अपने में निहित स्वरूप चिह्न बने रहते हैं। जैसे डरना क्रिया की धातु है डर। यह डर पुल्लिग संज्ञाशब्द की भांति प्रयुक्त होता है क्योंकि इससे क्रिया बनने से पूर्व उसका पुल्लिगवाचक प्रयोग होता था। खरीदना क्रिया की धातु है खरीद। यह खरीद स्वतन्त्र प्रयोग में स्त्रीलिंग है किन्तु वह स्त्रीलिंग इसलिए नहीं है क्योंकि वह धातु है प्रत्युत इसलिए है क्योंकि वह अपने से बनी खरीदना क्रिया से पूर्व स्त्रीलिंग थी।

व्युत्पन्न तथा अव्युत्पन्न दोनों प्रकार की क्रिया की धातुएँ पूर्वकालीन कृदन्त तथा आज्ञार्थक प्रकार के एकवचन मध्यम पुरुष के रूप में मिलती जुलती होती हैं। जैसे घर में लोग आग के चारों तरफ बैठ तम्बाकू पी रहे थे। उठ। बोल। जा। बिठा।

क्रिया की धातुओं से निम्नलिखित का निर्माण होता है सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त, सातत्यबोधक कृदन्त प्रथम भविष्यत्काल सम्भावनार्थक प्रकार का सामान्य रूप आज्ञार्थक प्रकार के रूप, 'सकना तथा चुकना अपूर्णार्थक क्रियाओं के साथ क्रियापरक संयोजन शक्ति बोधक संयुक्त क्रियाएं आदि।

कृदन्त

कृदन्त क्रिया का ऐसा रूप होता है जिसमें एक साथ क्रिया तथा विशेषण दोनों की विशेषताएँ होती हैं इसलिए कृदन्त को कभी-कभी क्रियार्थक विशेषण कहते हैं।

कृदन्त क्रिया का अपुरुषवाचक रूप है अतः उसके प्रकार (मूड) तथा पुरुष नहीं होते हैं। हिन्दी में कई किस्म के कृदन्त हैं—सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त, सामान्य भूतकालिक कृदन्त, संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त, संयुक्त भूतकालिक कृदन्त, 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त, सातत्यबोधकालिक कृदन्त आदि।

उपरिलिखित कृदन्तों की क्रिया सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं

(क) कृदन्त सकर्मक और अकर्मक दोनों ही हो सकते हैं। सकर्मक क्रियाओं से सकर्मक कृदन्त बनते हैं और अकर्मक क्रियाओं से अकर्मक कृदन्त। जैसे (१) किताब पढ़ती (हुई) लड़की। (२) चिट्ठी लिखने वाला लड़का। (३) चलती (हुई) गाड़ी। (४) खिला (हुआ) फूल। (५) काम कर रहे मजदूर। (६) हो रहा सम्मेलन।

(ख) सकर्मक कृदन्तों के साथ प्रधान कर्म प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (१) जानकी कोट पहनती हुई घर से निकली। (२) यहाँ पर सोना उगलने वाली जमीन है।

(ग) कृदन्तों के साथ स्थान समय आदि विशेषणावाचक प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे (१) तुमको दुकान पर बैठे शर्म नहीं आती? (२) वह आज जाने वाला है। (३) यहाँ पर मीलों तक फैले हुए दरिया और झीलें हैं।

(घ) कृदन्तों के साथ क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के विभक्तिचिह्न भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे (१) पानी से निकलता हुआ नाग। (२) बच्चे बस्ते बगल में दबाये स्कूल से वापस आ रहे थे। (३) जर्मनी को फिर से हथियारबन्दी की दुहाई देने वाले पश्चिम के समर्थक।

(ङ) क्रिया की भाँति सकर्मक कृदन्तों के दो वाच्य होते हैं—कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य। जैसे

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सुनता (हुआ)	सुना जाता (हुआ)
सुना (हुआ)	सुना गया
सुनने वाला	सुना जाने वाला
कर रहा	किया जा रहा

इसके अलावा स्वयं कृदन्तों में वाच्य की विभिन्नताएँ प्रकट होती हैं। क्रिया के अर्थ के अनुसार कृदन्तों के अर्थ या तो कर्तृवाच्य हो सकते हैं या कर्मवाच्य। सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाओं के सामान्य व संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त, 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त, सातत्यबोधकालिक कृदन्त तथा अकर्मक क्रियाओं के सामान्य व संयुक्त भूतकालिक कृदन्त सदा कर्तृवाच्य होते हैं। जैसे पढ़ता

(ञा) आता (हुआ) आया (हुआ) करन वाला, लिख रहा।

सकर्मक क्रियाओं के सामान्य व संयुक्त भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य में से कोई भी हो सकता है। जैसे (१) पकड़ा (हुई) तितली। (२) इनाम पाया (हुआ) लड़का।

(च) कृदन्त व्यापार की पूर्णता या अपूर्णता को दिखाते हैं। सामान्य एवं संयुक्त वर्तमान कालिक कृदन्त तथा सातत्यबोधकालिक कृदन्त अपूर्ण व्यापार सूचक होते हैं। जैसे देखता (हुआ), पहुँचता (हुआ) चल रहा।

सामान्य व संयुक्त भूतकालिक कृदन्त पूर्ण व्यापारसूचक होते हैं। जैसे देखा (हुआ), पहुँचा (हुआ)। वाला प्रत्ययान्त कृदन्त प्रसंग के अनुसार या तो अपूर्ण व्यापारसूचक होता है या पूर्ण व्यापारसूचक। जैसे (१) मरने वाला आदमी। (२) इस खबर में मरने वाले के रिश्तेदारों में हमदर्दी का कोई पहलू नहीं निकला था।

(छ) कृदन्त सापेक्षिक काल को दिखाते हैं। सामान्य व संयुक्त कृदन्त स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होते समय ऐसा काल दिखाते हैं जो क्रिया के पुरुषवाचक रूप से निर्दिष्ट काल के सदृश होता है या उससे पूर्व के काल जैसा होता है। जैसे (१) मैंने कल आपको रामनाथ के साथ बातचीत करते (हुए) देखा। (२) उसने घोड़े पर चढ़े बंदूक चलायी।

क्रिया के संयुक्त पुरुषवाचक रूपों में सामान्य तथा सातत्यबोधक काल वाले कृदन्त से निर्दिष्ट व्यापार का काल क्रिया के काल में स्पष्ट किया जाता है। जैसे मैं पढ़ता हूँ। मैं पढ़ता था। मैं पढ़ता रहूँगा। ये किताब पढ़ी जायगी। वह पढ़ रहा है।

वाला प्रत्ययान्त तथा गुणनिर्देशक के रूप में प्रयुक्त सातत्यबोधक काल वाले कृदन्त के व्यापार का काल सदा क्रिया के पुरुषवाचक रूप से निर्दिष्ट व्यापार के काल पर आश्रित होता है। जैसे (१) शान्ति आन्दोलन में हिस्सा लेने वाले हर व्यक्ति का तकाजा है कि इसको मजबूत बनाने में कोई कसर न रखे। (२) उसने चौबीसपंचवार्षिक योजना पर हो रही बहस में भाग लिया। (३) यह प्रस्ताव पाँच से लेकर तीस मई तक होने वाले अधिवेशन में पास किये जायेंगे।

(ज) वाला प्रत्ययान्त तथा सातत्यबोधकालिक कृदन्तों को छोड़कर अन्य सब कृदन्तों से ऐसी वाक्यरचना बन जाती है जो अर्थ के अनुसार क्रिया के पुरुषवाचक रूपों की तरह हैं। जैसे सुन जल्दी दौड़ते (हुए) चोट लगी। (२) उसे गये (हुए) दो महीने हो गये हैं।

कृदन्तों की विशेषण सम्बन्धी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

(क) विकारी विशेषणों की तरह कृदन्त अपने विशेष्य संज्ञा के लिंग, वचन और कारक के अनुसार रूपान्तरित होते हैं। जैसे बहता (हुआ) पानी। गाती (हुई) लड़की। खेलते (हुए) लड़के का।

(ख) वाक्य में कृदन्त वही काम करते हैं जो विशेषण किया करते हैं। अर्थात गुणनिर्देशक तथा विधेय के नामिक अंग के रूप में काम करते हैं। जैसे (१) बहता पानी साफ होता है। (२) वह आया हुआ है। (३) मैं अपने मित्र को चिट्ठी लिखने वाला हूँ।

कर्तृवाचक और कर्मवाचक कृदन्त

जैसाकि ऊपर बताया गया है हिंदी में कर्तृवाचक और कर्मवाचक दो प्रकार के कृदन्त होते हैं। सकर्मक क्रियाओं से कर्तृवाचक और कर्मवाचक कृदन्त बनते हैं। अकर्मक क्रियाओं से केवल कर्तृवाचक कृदन्त बनते हैं। कर्तृवाचक कृदन्त उस वस्तु की विशेषता को बताता है जो स्वयं व्यापार करता है। जैसे (१) काम करती (हुई) औरत। (२) खौलता (हुआ) पानी। (३) सोया (हुआ) बच्चा। (४) किताब पढ़ने वाला लड़का।

कर्तृवाचक कृदन्त उस वस्तु की विशेषता बताता है जो अन्य वस्तु के व्यापार से प्रभावित होता है। कर्तृवाचक कृदन्त में निर्दिष्ट व्यापार का साधन प्रकट या अप्रकट रह सकता है। अगर यह साधन प्रकट है तो वह 'से', 'द्वारा', 'की ओर से' तथा इस प्रकार के अन्य विभक्तिचिह्नों के साथ असामान्य कारक के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे (१) डाक से भेजा गया चिट्ठा। (२) पंसिल द्वारा खींचा गया चित्र। (३) सोवियत सरकार की ओर से भारत को दी गयी सहायता।

कृदन्तों का निर्माण

कर्तृवाचक कृदन्तों का निर्माण

(क) सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त क्रिया की धातु के साथ ता प्रत्यय जोड़ने से बनता है। जैसे

क्रिया की धातु	सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त
बोल	बोलता
लिख	लिखता
पढ़	पढ़ता

(ख) सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया की धातु के साथ 'आ' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। जैसे

क्रिया का मूल रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
बोल	बोला
लिख	लिखा
पढ	पढ़ा

अगर क्रिया की धातु आकारान्त, एकारान्त, ओकारान्त या ईकारान्त होता है तो क्रिया की धातु तथा 'आ' प्रत्यय के बीच 'य' वर्ण का आगम हो जाता है। जैसे —

क्रिया की धातु	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
आ	आया
से	सेया
बो	बोया
पी	पीया (पिया)

होना, करना, देना, लेना, जाना, ठानना और मरना क्रियाओं के सामान्य भूतकालिक कृदन्त उपरोक्त नियम के अपवाद हैं। इन कृदन्तों का निर्माण होते समय अक्षरों में परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार से होता है —'ओ' 'ऊ' में परिवर्तित होता है, 'आ' 'इ' में परिवर्तित होता है, 'ए' 'इ' में परिवर्तित होता है, 'आ' 'अ' में और 'अ' 'उ' में परिवर्तित होता है। 'करना', 'ठानना' और 'मरना' क्रियाओं से बने कृदन्तों में कुछ व्यंजनों का लोप होता है जिससे क्रिया की धातु काफी परिवर्तित हो जाती है। 'जाना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक कृदन्त 'गया' अन्य क्रिया की धातु से बना है। उदाहरणार्थ —

क्रिया का सामान्य रूप	क्रिया की धातु	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
होना	हो	हुआ
करना	कर	किया ('करा' हिन्दी बोलियों तथा कविता में प्रयुक्त होता है)
देना	दे	दिया
लेना	ले	लिया
ठानना	*ठान*	*ठया, ठाया, ठाना*
मरना	मर	मुआ (कविता में प्रयुक्त होता है) मरा
जाना	जा	गया

(ग) सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त	सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त
बोलना	बोलता	बोलता हुआ
करना	करता	करता हुआ
पढ़ना	पढ़ता	पढ़ता हुआ

(घ) सयुक्त भूतकालिक कृदन्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	सयुक्त भूतकालिक कृदन्त
आना	आया	आया हुआ
भेजना	भेजा	भेजा हुआ
लेना	लिया	लिया हुआ

(ङ) 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त क्रिया के सामान्य रूप के असामान्य कारक के साथ उक्त प्रत्यय के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	क्रिया के सामान्य रूप का असामान्य कारक	'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त
पढ़ना	पढ़ने	पढ़ने वाला
लिखना	लिखने	लिखने वाला
होना	होने	होने वाला

(च) सातत्यबोधक कृदन्त क्रिया की धातु के साथ 'रहना' क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	क्रिया की धातु	सातत्यबोधक कृदन्त
खेलना	खेल	खेल रहा
चलना	चल	चल रहा
होना	हो	हो रहा

कर्मवाचक कृदन्तों का निर्माण

हिन्दी में सकर्मक क्रियाओं में लगभग सब कर्तृवाचक कृदन्तों के समरूप भिन्न कर्मवाचक रूप होते हैं जो सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना

त्रिया के विभिन्न कृदन्तों के संयोजन से बनते हैं।

(क) कर्मवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता
भेजना	भेजा	भेजा जाता
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता

(ख) कर्मवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा गया
भेजना	भेजा	भेजा गया
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा गया

(ग) कर्मवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता हुआ
भेजना	भेजा	भेजा जाता हुआ
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता हुआ

(घ) कर्मवाचक 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाचक 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाने वाला
भेजना	भेजा	भेजा जाने वाला

छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाने वाला

(८) क्रमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	क्रमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जा रहा
करना	किया	किया जा रहा

कृदन्त विकार

हिन्दी में कृदन्त का विकार कृदन्तों के प्रयोग पर निर्भर करता है। सामान्य वर्तमानकालिक तथा सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के अंग होते हुए केवल लिंग और वचन में बदलते हैं। आकारान्त विकारी विशेषणों के सदृश अन्त्य प्रत्ययों के अलावा स्त्रीलिंग बहुवचन में क्रिया के पुरुषवाचक रूप में जब कृदन्त सहायक क्रिया के बिना प्रयुक्त होते हैं तब उनके अन्त्य प्रत्यय 'ईकारान्त' बन जाते हैं। जैसे

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलता	बोलते	बोलती	बोलती, बोलतीं
लिखता	लिखते	लिखती	लिखती, लिखतीं
पढ़ता	पढ़ते	पढ़ती	पढ़ती, पढ़तीं

सब प्रकार के कृदन्त स्वतन्त्र रूप से व्यवहृत होते हुए लिंग, वचन और कारक में अपने रूप बदलते हैं। लिंग, वचन और कारक में अपना रूप बदलते हुए उनके साथ वही अन्त्य प्रत्यय जुड़ते हैं जो आकारान्त विकारी विशेषणों के साथ जुड़ते हैं। जैसे 'ए' अन्त्य प्रत्यय, जो पुल्लिंग बहुवचन सामान्य कारक में तथा दोनों वचनों में असामान्य कारक प्रयुक्त होता है और 'ई' अन्त्य प्रत्यय जो स्त्रीलिंग में दोनों वचनों और कारकों में प्रयुक्त होता है। जैसे

सामान्य कारक एकवचन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ता (हुआ)	पकड़ती (हुई)
पकड़ा (हुआ)	पकड़ी (हुई)

न्रिया क विभिन कृदता क सयोजन म बनत है।

(क) कमवाचक सामाय वतमानकालिक कृदत मकमक क्रिया क सामाय भूतकालिक कृदत क साथ 'जाना त्रिया के सामाय वतमानकालिक कृदत के सयोजन स बनता है। जस

क्रिया का सामाय रूप	सामाय भूतकालिक कृदत	कमवाचक सामाय वतमानकालिक कृद त
पढना	पढा	पढा जाता
भेजना	भेजा	भेजा जाता
छोडना	छोडा	छोडा जाता

(ख) कमवाचक सामाय भूतकालिक कृदत सकमक क्रिया क सामाय भूतकालिक कृदत क साथ जाना त्रिया के सामाय भूतकालिक कृन्त क सयोजन स बनता है। जस

क्रिया का सामा य रूप	सामाय भूतकालिक कृदत	कमवाचक सामा य भूतकालिक कृदत
पढना	पढा	पढा गया
भेजना	भेजा	भेजा गया
छोड़ना	छोडा	छोडा गया

(ग) कमवाचक सयुक्त वतमानकालिक कृदत सकमक क्रिया क सामाय भूतकालिक कृदत के साथ जाना त्रिया के सयुक्त वतमानकालिक कृदत के सयोजन स वनता है। जैस

क्रिया का सामाय रूप	सामाय भूतकालिक कदत	कमवाचक सयुक्त वतमान कालिक कद त
पढना	पढा	पढा जाता हुआ
भेजना	भेजा	भेजा जाता हुआ
छोडना	छोडा	छोडा जाता हुआ

(घ) कमवाचक वाला प्रत्ययान्त कृदत सकमक क्रिया क सामान्य भूतकालिक कृदत के साथ जाना त्रिया के वाला प्रत्ययान्त कृदन्त के सयोजन स बनता है। जस

क्रिया का सामाय रूप	सामाय भूतकालिक कदत	कमवाचक वाला प्रत्ययान्त कदत
पढ़ना	पढा	पढा जाने वाला
भेजना	भेजा	भेजा जाने वाला

छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाने वाला

(ङ) कर्मवाचक सातत्यबोधक कृदन्त सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ जाना क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कर्मवाचक सातत्यबोधक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जा रहा
करना	किया	किया जा रहा

कृदन्त विकार

हिन्दी में कृदन्त का विकार कृदन्तों के प्रयोग पर निर्भर करता है। सामान्य वर्तमानकालिक तथा सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के अंग होते हुए केवल लिंग और वचन में बदलते हैं। आकारान्त विकारी विशेषणों के सदृश अन्त्य प्रत्ययों के अलावा स्त्रीलिंग बहुवचन में क्रिया के पुरुषवाचक रूप में जब कृदन्त सहायक क्रिया के बिना प्रयुक्त होते हैं तब उनके अन्त्य प्रत्यय ईंकारान्त बन जाते हैं। जैसे

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलता	बोलते	बोलती	बोलती, बोलतीं
लिखता	लिखते	लिखती	लिखती लिखतीं
पढ़ता	पढ़ते	पढ़ती	पढ़ती, पढ़तीं

सब प्रकार के कृदन्त स्वतन्त्र रूप से व्यवहृत होते हुए लिंग, वचन और कारक में अपने रूप बदलते हैं। लिंग वचन और कारक में अपना रूप बदलते हुए उनके साथ वही अन्त्य प्रत्यय जुड़ते हैं जो आकारान्त विकारी विशेषणों के साथ जुड़ते हैं। जैसे 'ए' अन्त्य प्रत्यय जो पुल्लिंग बहुवचन सामान्य कारक में तथा दोनों वचनों में असामान्य कारक प्रयुक्त होता है और 'ई' अन्त्य प्रत्यय जो स्त्रीलिंग में दोनों वचनों और कारकों में प्रयुक्त होता है। जैसे

सामान्य कारक एकवचन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ता (हुआ)	पकड़ती (हुई)
पकड़ा (हुआ)	पकड़ी (हुई)

पकडने वाला	पकडने वाली
पकड रहा	पकड रही

असामान्य कारक एकवचन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पकडते (हुए)	पकडती (हुई)
पकडे (हुए)	पकडी (हुई)
पकडने वाला	पकडने वाली
पकड रहे	पकडी रही

सामान्य कारक बहुवचन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पकडते (हुए)	पकडती (हुई)
पकडे (हुए)	पकडी (हुई)
पकडने वाला	पकडने वाली
पकड रहे	पकड रही

असामान्य कारक बहुवचन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पकडत (हुए)	पकडती (हुई)
पकडे (हुए)	पकडी (हुई)
पकडने वाला	पकडने वाली
पकड रहे	पकड रही

सामान्य तथा सयुक्त कृदन्तो के पुल्लिग असामान्य कारक के रूप की विशेषता यह है कि उसके साथ प्राय कोई विभक्तिचिह्न नही लगता है। सामान्य और सयुक्त कृदन्तो का असामान्य कारक के स्थायी अविकारी रूप म विभिन्न वाक्यरचना सम्बन्धी कार्यों म व्यवहार होता है। विशेष करके विशेषता वाचक तथा विधेयक के अग के कार्यों म और स्वतन्त्र (एब्सोल्यूट) वाक्यरचना म। जैसे (१) दो औरत एक दूसरे से बात करत (हुए) रास्त पर जा रही थी। (२) वह सन्न-सन्न सा गया। (३) मैं आँखें बन्द किये सोचने लगा। (४) एक किसान अनाज से भरी (हुई) गाडी लिये नाके म आया। (५)

मुखिया एक हाथ म बच्चे को पकड़े (हुए) थी। (६) घर गिरे चार महीने बीत गये।

अकर्मक क्रियाओं के संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त संयुक्त भूतकालिक कृदन्तों तथा प्रत्येक प्रकार की सकर्मक या अकर्मक क्रियाओं के 'वाला' अन्त्य प्रत्यय कृदन्तों का संज्ञा के अर्थ म प्रयोग होता है और उनके रूप आकारान्त संज्ञाओं की भाँति बनते हैं।

सामान्य कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरता हुआ	गिरते हुए
आया हुआ	आये हुए
सुनने वाला	सुनने वाले

असामान्य कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरते हुए	गिरते हुओं
आये हुए	आये हुओं
सुनने वाले	सुनने वालों

सम्बोधन कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरते हुए !	गिरते हुओ !
आये हुए !	आये हुओ !
सुनने वाले !	सुनने वालो !

उदाहरणार्थ (१) मैंने इस लौटे हुए को फारम पर रहने और काम करने के लिए बुलाया है। (२) मैं बिना टिकट सफर करने वालों को पकड़ा करता था।

कृदन्तों का प्रयोग

हिन्दी म कृदन्तों का बहुत व्यापक रूप से प्रयोग होता है। वे क्रिया के विभिन्न कालिक रूपों और पुरुषवाचक रूपों के निर्माण म तथा स्वतन्त्र रीति से व्यवहृत होते हैं। कर्तृवाचक वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक नहीं देता

कृदन्त, कर्मवाचक, सामान्य वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक कृदन्त और सातत्य बोधक कृदन्त प्राय क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के अंग की भाँति प्रयुक्त होते हैं। अपुरुषवाचक रूप में अर्थात स्वतन्त्र रूप में सब कृदन्तों का व्यवहार नहीं होता है। उदाहरण के लिए कर्मवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त स्वतन्त्र रूप से प्राय प्रयुक्त नहीं होते हैं। अन्य प्रकार के कृदन्त स्वतन्त्र शब्दों की भाँति प्रयुक्त होते हैं। स्वतन्त्र शब्दों की भाँति के प्रयोग में वाक्य में कृदन्तों के काय भिन्न भिन्न होते है। उनके प्रयोग गुणनिर्देशको (एट्रीब्युट) विशेषणाबोधको तथा विधेय के अंगों के रूप में हो सकते हैं। संज्ञाशब्दों के अर्थ में प्रयुक्त कृदन्त वाक्य में उद्देश्य कर्म तथा विशेषताबोधक हो सकते है।

कृदन्तो के स्वतन्त्र प्रयोग की कुछ विशेषताएँ

सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त

सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्तों का निम्नलिखित स्वतन्त्र प्रयोग होता है —

(क) उद्देश्य के रूप में। जैसे मरता क्या नहीं करता।

(ख) कर्म के रूप में। जैसे डूबते को तिनके का सहारा।

(ग) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे चलती गाडी उडता पक्षी।

(घ) विधेय के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) गाडी निकट आती दिखायी दे रही है। (२) उसे किसी ने यह काम करते नहीं देखा।

(ङ) समय विशेषणाबोधक के रूप में। जैसे (१) सोते में भी वह भूखे रहते हैं और जागते में भी भूखे रहते है। (२) तुमको दुकान पर बैठते शर्म नहीं आता।

समय विशेषताबोधक के रूप में प्राय प्रयुक्त होते है असामान्य कारक में सामान्य भूतकालिक कृदन्त ही निपात के संयोजन से। इस संयोजन का प्रयोग ऐसे पृथक व्यापार का निर्देश करने के लिए होता है जो विधेय से अभिहित व्यापार के ही पूर्व हुआ या हो रहा है। ही निपात के साथ सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन का अर्थ ज्यों ही से सन्ध होता है। जैसे अन्दर आते ही वह बैठ गया।

उक्त संयोजन में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त का रूप उस वाक्य के उद्देश्य के लिंग पुरुष वचन तथा कारक से प्रभावित नहीं होता है जिसके

विधय के साथ य सयोजन सम्बंधित होते हैं। जसे (१) पहुँचते ही मैं अपने मित्र से मिलने गया। (२) आते ही वह पत्र लिखने लगा (लगी लगे)। (३) यह समाचार सुनते ही मा ने झट से एक तार भेज दिया।

ऊपर दिये गये उदाहरणों म 'ही' निपात के साथ सयोजनों म कृदंतों के कर्ता तथा वाक्यों के उद्देश्य एक ही है परन्तु हिंदी म ही के साथ प्रयुक्त कृदन्त का प्राय अपना कर्ता होता ह जो वाक्य के उद्देश्य स भिन्न भी हो सकता है। ऐसी स्थिति म कृदन्त का कर्ता सज्ञाशब्द के सामान्य कारक या के विभक्ति चिह्न सहित अन्य पुरुष वाचक सवनाम के असामान्य कारक स अभिव्यक्त होता है। जैसे (१) मेरी छुट्टियां शुरू होते ही हम दोनों शिमला जाना चाहते हैं। (२) मरीज के आते ही डाक्टर ने उसे बैठने को कहा। (३) उसके चिट्ठी लिखते ही हम डाकघर गये।

अगर कृदन्त का कर्ता होता है उत्तम या मध्यम पुरुषवाचक सवनाम तो वह असामान्य कारक म सम्बंधित स्वामित्ववाचक सवनाम से अभिव्यक्त होता है। जसे (१) मेरे जाते ही वह अखबार पढने लगा। (२) तुम्हारे जाते ही वह चुप हो गयी।

'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त ऐसा व्यापार व्यक्त करते है जो क्रिया के पुरुषवाचक रूप से निर्दिष्ट व्यापार स पूर्व होता है। इस कृदंत म व्यक्त व्यापार का काल क्रिया के पुरुषवाचक रूप स व्यक्त काल पर निर्भर करता है। जब विधेय म क्रिया वर्तमान काल म होती है तब 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त पूर्व वर्तमान काल को व्यक्त करता है। जसे शिक्षक के श्रेणी म आते ही विद्यार्थी उठ जाते है।

यदि विधेय म क्रिया भूतकाल म होती है तो 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त पूर्व भूतकाल व्यक्त करता है। जसे कुत्ते को देखते ही बच्चा डरकर रो उठा।

जब विधेय म क्रिया भविष्यतकाल म होती है तब 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त पूर्व भविष्यत्काल व्यक्त करता है। जसे घर आते ही मैं टेलीफोन करूंगा।

'ज्यों ही' के अर्थ म 'ही' निपात के साथ सामान्य भूतकालिक कृदन्त की पुनरुक्ति भी व्यवहृत होती है। जसे आते ही आते उसने यह कहा।

समय विशेषणवाचक के रूप म असामान्य कारक म सामान्य वर्तमानकालिक कृदंत तथा समय या 'वक्त' के सयोजनों का भी प्रयोग होता है। जसे सोते समय (वक्त) चिट्ठी पढते समय (वक्त)।

'समय तथा वक्त' के साथ प्रयुक्त सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त यह दिखाते हैं कि विधेय से निर्दिष्ट मुख्य व्यापार की पूर्ति में उद्देश्य क्या करता है। इस प्रयोग में सामान्य भूतकालिक कृदन्त का कर्ता तथा वाक्य का उद्देश्य अलग अलग हो सकता है। सामान्य भूतकालिक कृदन्त का कर्ता प्राय निर्दिष्ट नही होता है, परन्तु वह प्रसंग से पता चलता है। जैसे (१) काम करते समय (वक्त) वह कभी नही बोलता है। (२) आज घर लौटते समय (वक्त) मुझे अपना पुराना मित्र मिला।

(च) प्रकार विशेषतावोधक के रूप में। प्रकार विशेषताबोधक के रूप में सामान्यतया सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त की पुनरुक्तिया व्यवहृत होती है जो अपने से अभिहित व्यापार के सातत्य को सूचित करता है। जैसे (१) दौडता दौडता घर गया और तितलियो वाला डब्बा ले आया। (२) अम्मा रात रात सो गया था।

सामान्य भूतकालिक कृदन्त

सामान्य भूतकालिक कृदन्तो का निम्नलिखित स्वतन्त्र प्रयोग होता है —

(क) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे सोया बच्चा। लिखी चिट्ठी।

(ख) विधेय के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) आज वहाँ की स्थिति बदली नजर आ रही है। (२) सडक के बीच खून से लाल हुई जगह पर एक आदमी बेहोश पडा था। (३) दूसरे दिन सुबह गाँव वालो ने छत्रपति को इस चट्टान पर बैठा पाया।

हिन्दी में बहुधा विधेय के नामिक अंग के रूप में सकर्मक सामान्य भूतकालिक कृदन्त भी प्रयुक्त होते हैं। विधेय के नामिक अंग के रूप में सकर्मक सामान्य भूतकालिक कृदन्तो का दो प्रकार का प्रयोग होता है। एक प्रकार के प्रयोग में वे असामान्य कारक में अविकारी पुल्लिंग वाले होते है। जैसे कल वह नया कोट पहने था।

दूसरे प्रकार के प्रयोग में वे विधेय के नामिक अंग के रूप में लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में उद्देश्य का अनुगमन करते है। जैसे लिफाफे पर तीन टिकट लगाये हैं।

पहले प्रकार के उपरोक्त प्रयोग में सकर्मक सामान्य भूतकालिक कृदन्तो का कर्तृवाच्यपरक अर्थ होता है। दूसरे प्रकार के प्रयोग में उक्त कृदन्तो का कर्मवाच्यपरक अर्थ होता है। कर्मवाच्यपरक अर्थ वाले कृदन्त भूतकाल के ऐसे

सम्पान्ति व्यापार का निर्देश करते हैं जो अपने फल के कारण वतमान भूत या भविष्यतकाल से सम्बंधित है जिसका सकेत होना सहायक क्रिया करती है। जैसे सब मेजें मजपोशों से ढकी हैं (ढँकी थी ढँकी होगी)।

(ग) प्रकार विशेषतावाचक के रूप में। प्रकार विशेषतावाचक के रूप में सामान्य भूतकालिक कृदन्त (के) बिना तथा (के) बगैर विभक्ति चिह्नों के साथ प्रयुक्त होते हैं। इस प्रयोग में विभक्तिचिह्न या तो कृदन्त से पूर्व प्रयुक्त हो सकते हैं या पश्चात्। जैसे उससे मिले बिना, बगैर रुके। (के) बिना' तथा (के) बगैर विभक्तिचिह्नों के साथ प्रयुक्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त पूरक नकारात्मक व्यापार व्यक्त करते हैं। जैसे (१) ठाकुर ने बिना रत्तीभर इधर उधर हिले डुले पूछा क्या ? (२) उनसे बातें किये बगैर मैं क्या कर सकता हूँ ?

प्रकार विशेषतावाचक के रूप में '(के) बिना तथा '(के) बगैर विभक्तिचिह्नों के साथ सामान्य भूतकालिक कृदन्त का विशेष व्यापक प्रयोग उन नकारात्मक वाक्यों में होता है जिनमें अर्थ के अनुसार दो नकारात्मक निपातों की आवश्यकता होती है। इन तरह के वाक्यों में विधेय 'रहना क्रिया या रह सकना क्रियापरक शब्दसमुदाय से व्यक्त होता है। ऐसे वाक्यों में विधेय से पूर्व एक नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है जो प्राय न निपात होता है। जैसे (१) मैं इस पर हँसे बिना न रहूगा। (२) वह मेरी चिट्ठी का उत्तर दिये बगैर न रह सका।

(घ) अवस्थावाचक प्रकार विशेषतावोधक के रूप में। इस कार्य में केवल असामान्य कारक में अविकारी पुल्लिगवाले रूप में प्राय सकर्मक सामान्य भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग होता है। ये विशेषताबोधक उस अवस्था का निर्देश करते हैं जिसमें मुख्य व्यापार हो रहा होता है और साथ-ही-साथ ये उस व्यापार को स्पष्ट कर देते हैं। अवस्थावाचक प्रकार विशेषताबोधक के रूप में सामान्य भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्य का अर्थ देते हैं। जैसे (१) एक फटी सी रजाई ओढ़े ठाकुर बाहर निकल आया। (२) सूर्य अपना सुनहला थाल लिये पूरब से पश्चिम में जा पहुँचा था।

सयुक्त वतमानकालिक कृदन्त

सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्तों का सबसे स्वतन्त्र प्रयोग होता है। यह प्रयोग प्राय निम्नलिखित होता है —

(क) गुणनिर्देशक के रूप में। सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाले

गुणनिर्देशक दो प्रकार के होते है—पूर्ववर्ती तथा परवर्ती। पूर्ववर्ती गुणनिर्देशक के रूप में सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग वचन तथा कारक में आकारान्त विशेषणों की भाँति विशेष्य का अनुगमन करते हैं। जैसे जाता हुआ आदमी जाते हुए आदमी जाते हुए आदमियों में जाती हुई औरत जाती हुई औरतें।

परवर्ती गुणनिर्देशक के रूप में जो प्राय विधेयवाचक होता है सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन में वाक्य के उद्देश्य के अनुसार होते हैं। जैसे (१) एक लड़का सिर के बडे बडे बालों को खुजलाता हुआ चला आ रहा है। (२) पीछे उसकी पत्नी कराहती, कांपती हुई गठरी-सी बनकर सिमट गई।

(ख) विधेय के नामिक अग के रूप में। विधेय के नामिक अंग के रूप में सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य का उद्देश्य या वाक्य का प्रधान कर्म निर्दिष्ट करते है। उद्देश्य को निर्दिष्ट करते हुए वाक्य के विधेय के क्रियापरक अंग के रूप मे निम्न अकर्मक क्रियाएँ तथा क्रियानामिक शब्दसमुदाय प्रयुक्त होते है —दिखाई देना दिखाई पडना जान पडना नजर आना मालूम होना, प्रतीत होना आदि। सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य के उद्देश्य का अनुसरण करते है। जैसे (१) इतने में ही गुरदीन आता हुआ दिखाई दिया। (२) बहुत लड़कियां जगल की ओर जाती हुई नजर आ रही हैं।

जब सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य के प्रधान कर्म का निर्देश करता है तब विधेय के क्रियापरक अंग के रूप में प्रयुक्त होती है देखना सुनना पाना जसी क्रियाएँ। विधेय के नामिक अंग का प्रधान कर्म के साथ व्याकरण-परक सम्बन्ध प्रधान कर्म के रूप के अनुसार नामिक अग द्वारा अभिव्यक्त होता है। विधेय के नामिक अंग के रूप में सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य कारक में प्रधान कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार होते है। जैसे वह एक गाडी निकट आती हुई देख रहा है।

यदि प्रधान कर्म 'को' विभक्ति चिह्न सहित असामान्य कारक में सज्ञा शब्द तथा सर्वनाम है या कर्मकारक में सर्वनाम है तो विधेय के नामिक अंग के रूप में प्रयुक्त सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त का अन्वय प्रधान कर्म के कर्म कारक से होता है या वह सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य कारक एकवचन पुल्लिंग में होता है। जैसे (१) उसे आज तक किसी ने बात करते हुए नहीं सुना। (२) अभी मैंने उनको सडक पर जाता हुआ देखा।

क्रिया के नामिक अंग के रूप में प्रयुक्त तथा विधेयवाचक गुणनिर्देशक के रूप में प्रयुक्त सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्तों में भेद किया जाना चाहिए।

विषयवाचक गुणनिर्देशक वाक्य के उद्देश्य तथा विधेय दोनों का निर्देश करते हैं किन्तु अर्थानुसार उनका अधिक सम्बन्ध विधेय से ही होता है। जैसे लड़की हँसती हुई जा रही थी।

विधेय का नामिक अंग विधेय में क्रिया के अनुसार केवल वाक्य के उद्देश्य का या केवल वाक्य के प्रधान कर्म का निर्देश करता है। जैसे (१) दूर से वह चीज चलती हुई दिखाई पड़ती है। (२) उन्होंने लड़के को नदी में डूबते हुए पाया।

इसके अतिरिक्त वाक्य में विषयवाचक गुणनिर्देशक तथा विधेय के बीच विशेषता बाधक कर्म और यहां तक कि उद्देश्य भी आ सकते हैं जबकि विधेय का नामिक अंग तथा विधेय का क्रियापरक अंग साथ साथ रहते हैं और उनके मध्य में निपातों को छोड़कर वाक्य का कोई भी अन्य अंग नहीं आ सकता है। जैसे (विषयवाचक गुणनिर्देशक)—(१) शराबी उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गली में ले चला। (२) बल्कि सोचता हुआ वह चुपचाप घर से निकला। (विधेय का नामिक अंग)—उस दिन के बाद उसे किसी ने मुसकराते हुए नहीं देखा।

(ग) समय विशेषताबोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त पूर्ण स्वतन्त्र होते हैं। स्वतन्त्र कृदन्त का कर्ता वाक्य के उद्देश्य से भिन्न होता है। जैसे घर जाते हुए मेरा सिर दर्द करने लगा। इस वाक्य में अर्थानुसार कृदन्त का कर्ता है 'मैं' किन्तु वाक्य में उद्देश्य है सिर।

(घ) प्रकार विशेषताबोधक के रूप में। प्रकार विशेषताबोधक के रूप में संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सदा अविकारी रूप में विभक्तिचिह्न रहित असामान्यवाक्य में प्रयुक्त होते हैं। जैसे (१) बड़े दुलार से उसका मुंह पोंछते हुए उस लड़के वह फाटक के बाहर चला आया। (२) टटोलते हुए सलाई से मिट्टी की ढिबरी जलाकर वह फट कम्बल के नीचे कुछ खोजने लगा।

(ङ) सति अथवा (वस्तुस्थिति) विशेषताबोधक के रूप में। सति-अथवा विशेषताबोधक के रूप में संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त भी निपात के साथ असामान्य वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। जैसे (१) बहुत डरते हुए भी मैंने उनकी बातों के जवाब में एक भाषण तैयार किया। (२) यह जानते हुए भी कि यह आशा थी कि चन्दा लड़की पढ़ी लिखी और समझदार है।

संयुक्त भूतकालिक कृदन्त

संयुक्त भूतकालिक कृदन्त सदा स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होते हैं। स्वतन्त्र

रूप से सामान्य भूतकालिक कृदन्ता की अपेक्षा इनका प्रयोग अधिक प्रचलित है। उनका प्रयोग प्राय निम्नलिखित होता है—

(क) कम के रूप म। इस रूप म बहुधा अकमक सयुक्त भूतकालिक कृदन्ता का इस्तमाल होना है। जस इन लौटे हुओ को फारम पर रहन और काम करन क लिए बुलाया गया है।

(ख) गुणनिर्देशक क रूप म। जस (१) इसक बाद दिनभर के थके हुए पति पत्नी सो गये। (२) उन्होन फटी हुई पतग उठाकर देखी।

अकमक सयुक्त भूतकालिक कदत परवर्ती विधेयवाचक गुणनिर्देशक क रूप म भी प्रयुक्त हात है। जैसे बाका गुमान अपनी कोठरी क द्वार पर बठा हुआ यह कौतुक बड ध्यान स दख रहा था।

गुणनिर्देशक के रूप म सकमक सयुक्त भूतकालिक कद त प्राय कम वाच्य का अथ दन हैं। यदि एस कृदन्ता का कर्ता अभिहित हाना है तो वह असामाय कारक म का (क की) विभक्ति चिह्न सहित सनाशब्द या सव नाम होना है। यदि उन कदन्ता का कता उत्तम या मध्यम पुरुष वाला सवनाम होता है ता वह सम्बधित स्वामित्ववाचक सवनाम म अभियक्त होता है। जस (१) दिल्ली और भारत के दूसरे भागा म इन बादशाहा की बनवायी हुई इमारता क खण्डहर आज भी देख जान है। (२) उसकी पढी हुई पुस्तक। (३) मेरी लिखी हुइ चिट्ठी।

जब गुणनिर्देशक क रूप म सकमक सयुक्त कृदन्त का अपना प्रधान कम होना है ता वह कत वाच्य का अथ दता है। जैसे मैंन घुटनो स ठुडडी लगाय हुए एक निराह बालक का देखा।

(ग) विधय क नामिक अग क रूप म। जैस (१) उत्तर म भारत की सीमा अफगानिस्तान और चीन की सीमाओ स मिली हुई है। (२) वह बहुत घबराया हुआ मालूम होता था। (३) अब म जब कभी छोटी लडकी की आख सूजी हुई और गाल लाल देखता हूँ ता समझ लता हूँ कि किसी बडे घर म चीनी क बतन टूट हैं।

जब विधय क नामिक रूप म सकमक सयुक्त कृदन्ता का प्रयाग होता है तब व असामाय कारक म अविकारी पुल्लिग वाल रूप म हात हैं या व लिंग तथा वचन (पुल्लिग) उन्ह्य का अनुगमन करत है। अविकारी रूप क प्रयाग म सकमक सयुक्त भूतकालिक कृदन्त कतवाच्यपरक अथ दत है। जस सस्कृति क क्षत्र म भारत अपनी विशषता बनाये हुए है।

विकारी प्रयाग म व कमवाच्यपरक अथ दन हैं तथा सामाय भूतकालिक

कृदन्तों की भाँति ऐसे सम्पादित व्यापार का निर्देश करते हैं जो अपने फल के कारण उस वर्तमान, भूत या भविष्यत काल से सम्बन्धित है जिसका संकेत सहायक क्रिया करती है। जैसे अलमारी में किताब रखी हुई है (थी होगी)।

(ग) समय विशेषताबोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में संयुक्त भूतकालिक कृदन्त प्रायः पूर्ण स्वतन्त्र होते हैं। जैसे (१) उसे गये हुए दो महीने हो गये हैं। (२) यह घोड़ा खरीदे हुए तीन साल हो चुके हैं।

(घ) अवस्थावाचक प्रकार विशेषता बोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में केवल असामान्य कारक में अविकारी पुल्लिंग वाले रूप में प्रायः सकर्मक सामान्य भूतकालिक कृदन्तों का व्यवहार होता है। इस प्रकार के विशेषताबोधक उस अवस्था का निर्देश किया करते हैं जिसमें मुख्य व्यापार हो रहा होता है। इसके साथ ही ये उक्त व्यापार को भी स्पष्ट किया करते हैं। इस प्रकार के संयुक्त भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्यपरक अर्थ दिया करते हैं। जैसे (१) एक गन्दी कोठरी का दरवाजा ढकेलकर बालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। (२) कुत्ता दुम दबाये हुए लारी के पास पहुँचा।

'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त

'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्तों का केवल स्वतन्त्र प्रयोग होता है। ये कृदन्त किसी वस्तु की ऐसी क्रियापरक विशेषता का निर्देश किया करते हैं जो प्रसंगानुसार वर्तमान, भविष्यत तथा भूतकाल में से किसी भी काल से सम्बन्धित हो सकता है अथवा जो क्रिया के सामान्य रूप में व्यक्त व्यापार की उद्यतता या तैयारी सूचित करती है।

'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्तों का निम्नलिखित प्रयोग होता है —

(क) उद्देश्य के रूप में। जैसे बताने वाले ने बताया कि शराब के मटके छाती, मुण्डों और पगड़ी पर बर्फ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी।

(ख) कर्म के रूप में। जैसे देर में आने वालों को सभा में बैठने की जगह नहीं मिली।

(ग) गुणनिर्देशक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में कृदन्त के लिंग, वचन तथा कारक अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे वह साथ के आने वाली वस्तुओं को बटोरने लगा।

वाक्य में जब 'वाला' प्रत्ययान्त एक से अधिक कृदन्त किसी एक ही विशेष्य के होते हैं तब 'वाला' प्रत्यय प्रायः विशेष्य से पूर्व एक ही बार प्रयुक्त

रूप से सामान्य भूतकालिक कृदन्तों की अपेक्षा इनका प्रयोग अधिक प्रचलित है। उनका प्रयोग प्रायः निम्नलिखित होता है—

(क) कर्म के रूप में। इस रूप में बहुधा अकर्मक संयुक्त भूतकालिक कृदन्तों का इस्तेमाल होता है। जैसे इन लौटे हुओं को फारम पर रहने और काम करने के लिए बुलाया गया है।

(ख) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे (१) इसके बाद दिनभर के थके हुए पति पत्नी सो गये। (२) उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी।

अकर्मक संयुक्त भूतकालिक कृदन्त परवर्ती विधेयवाचक गुणनिर्देशक के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे बाबा गुमान अपनी कोठरी के द्वार पर बैठा हुआ यह कौतुक बड़े ध्यान से देख रहा था।

गुणनिर्देशक के रूप में सकर्मक संयुक्त भूतकालिक कृदन्त प्रायः कर्म वाच्य का अर्थ देते हैं। यदि ऐसे कृदन्तों का कर्ता अभिव्यक्त होता है तो वह असामान्य कारक में का (के की) विभक्ति चिह्न सहित संज्ञा शब्द या सर्वनाम होता है। यदि उन कृदन्तों का कर्ता उत्तम या मध्यम पुरुष वाला सर्वनाम होता है तो वह सम्बन्धित स्वामित्ववाचक सर्वनाम से अभिव्यक्त होता है। जैसे (१) दिल्ली और भारत के दूसरे भागों में इन बादशाहों के बनवायी हुई इमारतों के खण्डहर आज भी देखे जाते हैं। (२) उसकी पढ़ी हुई पुस्तक। (३) मेरी लिखी हुई चिट्ठी।

जब गुणनिर्देशक के रूप में सकर्मक संयुक्त कृदन्त का अपना प्रधान कर्म होता है तो वह कर्तृ वाच्य का अर्थ देता है। जैसे मैंने घुटनों में ठुड्डी लगाये हुए एक निरीह बालक को देखा।

(ग) विधेय के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) उत्तर में भारत की सीमा अफगानिस्तान और चीन की सीमाओं से मिली हुई है। (२) वह बहुत घबराया हुआ मालूम होता था। (३) अब मैं जब कभी छोटी लड़की की आँखें सूजी हुई और गाल लाल देखता हूँ तो समझ लेता हूँ कि किसी बड़े घर में चीनी के बर्तन टूटे हैं।

जब विधेय के नामिक रूप में सकर्मक संयुक्त कृदन्तों का प्रयोग होता है तब वे असामान्य कारक में अविकारी पुल्लिंग वाले रूप में होते हैं या वे लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) उन्हीं का अनुगमन करते हैं। अविकारी रूप के प्रयोग में सकर्मक संयुक्त भूतकालिक कृदन्त कर्तृ वाच्यपरक अर्थ देते हैं। जैसे संस्कृति के क्षेत्र में भारत अपना विशिष्टता बनाये हुए है।

विकारी प्रयोग में वे कर्मवाच्यपरक अर्थ देते हैं तथा सामान्य भूतकालिक

कृदन्ता की भांति एसे सम्पादित व्यापार का निर्देश करते हैं जो अपने फलो के कारण उस वर्तमान, भूत या भविष्यत काल से सम्बन्धित है जिसका संकेत सहायक क्रिया करती है। जैसे अल्मारी मे किताब रखी हुई है (थी होगा)।

(ग) समय विशेषताबोधक के रूप म। इस तरह के प्रयोग मे सयुक्त भूतकालिक कृदन्त प्राय पूर्ण स्वतन्त्र होते है। जसे (१) उसे गय हुए दो महीने हो गये है। (२) यह घोडा खरीदे हुए तीन साल हो चुके है।

(घ) अवस्थावाचक प्रकार विशेषता बोधक के रूप म। इस तरह के प्रयोग म केवल असामान्य कारक म अविकारी पुल्लिग वाले रूप म प्राय सकमक सामान्य भूतकालिक कृदन्तो का व्यवहार होता है। इस प्रकार के विशेषताबोधक उस अवस्था का निर्देश किया करते है जिसम मुख्य व्यापार हो रहा होता है। इसके साथ ही य उक्त व्यापार का भी स्पष्ट किया करते हैं। इस प्रकार के सयुक्त भूतकालिक कृदन्त कर्तृ वाच्यपरक अर्थ दिया करत है। जैसे (१) एक गन्दी कोठरी का दरवाजा ढकेलकर बालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। (२) कुत्ता दुम दबाये हुए लारी के पास पहुँचा।

'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त

होता है। जस बम्बई म बहुत रेशमी कपडा बनान और रगन वाल कारखान है।

(घ) विधय क नामिक अग क रूप म। इस तरह क प्रयोग म वाला प्रत्ययान्त कृदन्तो क लिंग तथा वचन वाक्य क उददश्य क अनुसार होत है। जस (१) मेर तीन मित्र कलकत्ता जान वाल है। (२) उसकी बहन कल ही आन वाली थी।

विशेषणो और सज्ञाओ मे कृद तो का सक्रमण

हिन्दी म कुछ कृदन्त अपनी क्रियापरक विशषताएँ (काल वाच्य आदि) खो करके और गुणनिर्देशक या वस्तुपरक अथ ग्रहण करके क्रमश विशषण या सज्ञा क शब्दभेद म परिगणित होत है। विशेषण या सज्ञा क शब्दभेद म परिगणित हान समय कृदन्त अपना मुख्य अथ (अथात काल म होने वाल व्यापार के रूप म किसी निश्चित गुण की अभिव्यक्ति) को खो दत हैं। जस पका, सूखा कहा फटा रहन वाला।

विशषणो म सबस अधिक अकमक क्रियाओ क सामान्य भूतकालिक कृदन्त परिगणित होत है। जस खुला फटा टूटा घिसा आदि।

विशेषणो क शब्दभेद म समानाथक क्रियाओ के सामान्य भूतकालिक कृदन्तो क सयोजन भी परिगणित होत है। जस टूटा फूटा (टटना फूटना) भूला भटका (भूलना भटकना) घिसा पिटा (घिसना पिटना) पढा लिखा (पढना लिखना)।

विशषणो क अथ म समान मूल स बनी अकमक तथा सकमक क्रियाओ के सामान्य भूतकालिक कृदन्तो क सयोजनो का भी प्रयाग होता है। जस बना-बनाया (बनना बनाना) पका पकाया (पकना पकाना) पिटा पिटाया (पिटना पीटना)।

सज्ञाओ क शब्दभेद म प्राय सकमक क्रियाओ क कतृ वाच्य सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा वाला अन्त्य प्रत्यय कृदन्तो का परिगणन होता है।

सज्ञाओ क शब्दभेद म परिगणित सकमक क्रिया क सामान्य भूतकालिक कृदन्त भाववाचक सज्ञाएँ होती हैं जो व्यापार की प्रक्रिया या उसका फल दिखाती हैं। जस किया रहा छापा फाडा।

वाला प्रत्ययान्त कृदन्त प्राय मनुष्यवाचक होत है। जस पढन वाला बचन वाला आदि। सज्ञाशब्दो की भाँति प्रयुक्त वाला प्रत्ययान्त कृदन्त क अपन म निर्दिष्ट व्यक्ति क अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग हो सकत हैं,

किन्तु वे बहुधा पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं। स्त्रीलिंग में इनका प्रयोग तब होता है जब वे केवल स्त्रीजाति में से किसी व्यक्ति को सूचित करते हैं। पद रचना की दृष्टि से इसका पता चलता है 'वाला' प्रत्यय के अंतिम 'आ' के 'ई' में परिवर्तन से। जैसे पढने वाला, पढने वाली रहने वाला, रहने वाली।

ईकारांत वाला प्रत्ययांत कृदन्तों का विकार ईकारान्त स्त्रीलिंग वाचक संज्ञा शब्दों की भाँति होता है। जैसे लिखने वाली लिखने वालियाँ लिखने वालियाँ लिखने वालियाँ।

विशेषणों तथा संज्ञाओं के शब्दभेदों में सब प्रकार की क्रियाओं के सामान्य और संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सकर्मक क्रियाओं के संयुक्त भूतकालिक कृदन्त कभी भी परिगणित नहीं होते हैं। विशेषणों तथा संज्ञाओं के शब्दभेदों में कर्मवाचक कृदन्तों का भी परिगणन नहीं होता है।

विशेषणों तथा संज्ञाओं के शब्दभेदों में अकर्मक क्रियाओं के संयुक्त भूतकालिक कृदन्तों का परिगणन विरला ही होता है। जैसे घिसा हुआ, अर्थात् चालाक। छटा हुआ' अर्थात् धोखेबाज।

सातत्यबोधकालिक कृदन्त

स्वतन्त्र रूप से सातत्यबोधकालिक कृदन्त केवल गुणनिर्देशक के कार्य में प्रयुक्त होते हैं। गुणनिर्देशक के कार्य में प्रयुक्त उक्त कृदन्त क्रिया की धातु से निर्दिष्ट उस व्यापार या अवस्था के सातत्य को सूचित करते हैं जो वर्तमान या भूतकाल से सम्बन्धित होते है। सातत्यबोधकालिक कृदन्त का काल विषय में क्रिया के काल पर निर्भर करता है। जैसे (१) वे चलते रहे वहस में भाग लेते है। (२) हम उस कुहर में रात के ठीक एक बजे तालाब के किनारे की उस भीगी, बर्फ-सा ठण्डा हो रही ओह की बेंच पर बैठ गये।

पूर्वकालिक कृदन्त

हिन्दी में पूर्वकालिक कृदन्त क्रिया का ऐसा अविकारी अपुरुषवाचक रूप होता है जिसमें एक साथ क्रिया तथा क्रियाविशेषण दोनों की विशेषताएँ होती है। पूर्वकालिक कृदन्त वाक्य में विशेषताबोधक का कार्य करते हुए दूसरी क्रिया को स्पष्ट कर देते हैं तथा उससे सम्बन्धित पूर्व व्यापार का निर्देश करते हैं।

पूर्वकालिक कृदन्तों की क्रियासम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं—

यदि वाक्य म पूवकालिक कृन्ता स निर्दिष्ट एक स अधिक एक सदृश पूरक व्यापार होन है ता पूवकालिक कृदन्त का प्रत्यय प्राय केवल अन्तिम क्रिया का धातु के पश्चात ही प्रयुक्त हाता है। जैस खा पीकर लडका स्कूल गया।

हिन्दी म पूवकालिक कृदन्त बहुधा कतृवाच्य क्रियाओ म आते हैं। उन वाक्या म जहा विधेय कमवाच्यपरक क्रिया स अभिव्यक्त हाता है पूवकालिक कृदन्त कमवाच्य का अथ ग्रहण कर लेत है तथा पूण स्वतन्त्र हो जाते हैं। जसे (१) यह मन्दिर चट्टानो का काट कर बनाया गया था। (२) हाथ पकडकर जरा उठने के लिए इस जार से बैठा लिया गया तो और चारा न रहा लाचार बैठा रहना पडा।

पूवकालिक कृदन्तो का प्रयोग

वाक्य म पूवकालिक कृन्त अधिकतर एसे पूरक व्यापार का निर्देश करते है जो क्रिया के पुरुषवाचक रूप स व्यक्त मुख्य व्यापार की भाति उस व्यक्ति स सम्बन्धित होता है जो वाक्य म उद्देश्य का काय कर रहा हाता है। जसे होटल के बाहर आकर मित्र न अपनी जेब म हाथ डालकर कुछ टटोला।

उक्त वाक्य मे पूवकालिक कृन्तो स निर्दिष्ट आकर तथा डालकर' पूरक व्यापार और टटोला क्रिया के टटोला रूप स अभिहित व्यापार एक ही व्यक्ति मित्र' से सम्बन्धित है जो इस वाक्य म उद्देश्य का काय कर रहा है। अर्थात मित्र होटल के बाहर आया उसने जेब म हाथ डाला और उसने कुछ टटोला।

पूवकालिक कृदन्त स निर्दिष्ट पूरक व्यापार का सम्बन्ध वाक्य के उद्देश्य से इतर व्यक्ति या कर्ता स भी हो सकता है। एस प्रयाग म पूवकालिक कृदन्त पूर्ण स्वतन्त्र हो जाता है। जस यहा की दीवारा पर बने चित्र देखकर आज भी भारत की पुरानी कला के लिए श्रद्धा स सिर झुक जाता है—इस वाक्य म देखकर पूवकालिक कृदन्त स निर्दिष्ट व्यापार तथा झुक जाना' क्रिया के झुक जाना है रूपस व्यक्त व्यापार के अलग-अलग कर्ता है। पूवकालिक कृदन्त से अभिहित व्यापार का कर्ता इस वाक्य म कोई भी व्यक्ति या पुरुषवाचक सवनाम है और क्रिया के पुरुषवाचक रूप स व्यक्त मुख्य व्यापार का कर्ता अर्थात् उद्देश्य है सज्ञा शब्द सिर'।

जिन वाक्यो म क्रिया के पुरुषवाचक रूप का अर्थ गौण-सा रहता है और पूवकालिक कृदन्त का मुख्य-सा रहता है उन वाक्यो म वस्तुत पूवकालिक

कृदन्त वाक्य के मुख्य व्यापार का कार्यनिर्देशक होता है। जैसे (१) उसने बच्चे का सिर छूकर देखा। (२) सरकार साहब ने उन्हें (उन पत्रों को) खोलकर भी न देखा था। (३) शामत का मारा रज्जब इसी ठाकुर के दरवाजे पर अपनी ज्वरग्रस्त पत्नी को लेकर पहुँचा।

बहुधा पूर्वकालिक कृदन्त मुख्य व्यापार के लिए प्रेरक व्यापार का नहीं बल्कि उस पूर्ववर्ती सदृश व्यापार का निर्देश करता है जो विधेय में क्रिया में व्यक्त मुख्य व्यापार से स्वतन्त्र होता है। ऐसे प्रयोग में पूर्वकालिक कृदन्त का अर्थ क्रिया के पुरुषवाचक रूप के अर्थ जैसा होता है और वाक्य में वह विधेय के सदृश कार्य कर रहा होता है। जैसे (१) फिर दोनों बैठकर द्वार बनाने लगे। (२) जाकर पानी लाओ। (३) दोनों कोठरी छोड़कर चल पड़े। (४) मुन्नी, मैं सच कहता हूँ मैं घर छोड़कर भाग जाऊँगा।

कभी-कभी पूर्वकालिक कृदन्त मुख्य व्यापार के लिए प्रेरक व्यापार का निर्देश न करके मुख्य व्यापार को केवल अधिक स्पष्ट कर देते हैं। जैसे (१) बैसाख के महीने में गेहूँ पककर तैयार हो जाता है। (२) चौंककर देखा चौक के दरवाजे में दो स्वयंसेवक खड़े थे।

अनेक बार पूर्वकालिक कृदन्त प्रेरक व्यापार को व्यक्त करते हुए मुख्य व्यापार के प्रकार या साधन का निर्देश करते हैं। जैसे (१) हम तुझे समझाकर हार गये। (२) हमने डाक्टर को टेलीफोन करके बुलाया। (३) मैं बस में बैठकर घर जाता हूँ।

वाक्य में भी निपात के साथ प्रयुक्त पूर्वकालिक कृदन्त सति अर्थक विशेषतावबोधक का कार्य करते हैं। जैसे (१) क्या वे क्या रुपये देकर भी सेंत-मेंत का बेटा कहलाता है? (२) वक्त पर आकर भी मैं उससे न मिला।

हिंदी में पूर्वकालिक कृदन्तों की पुनरुक्तियाँ प्रायः ऐसे व्यापार का निर्देश करती हैं जिसका सातत्य अवरुद्ध-सा होता है। जैसे (१) बच्चा रो-रोकर सो गया। (२) रुई के रेशों से भाप के बादल हमारे सिरों को छू-छूकर बेरोक घूम रहे थे।

नकारार्थक वाक्यों में नकारार्थक निपात जो प्रायः विधेय के पूर्व ही होते हैं पूर्वकालिक कृदन्तों से भी सम्बन्धित होते हैं। जैसे हाथ-मुँह धोकर वह खाना खाने नहीं बैठता है।

इस वाक्य के विधेय में क्रिया के व्यापार से ही नहीं अपितु पूर्वकालिक कृदन्त में निर्दिष्ट व्यापार से भी इनकार किया जाता है। जब पूर्वकालिक कृदन्त से निर्दिष्ट व्यापार से इनकार किया जाता है तब वह व्यापार बहुधा

विधय म क्रिया के यापार का वारण होता है। पूवकालिक कृदतो के साथ प्राय न' निपात का प्रयोग होता है। जसे प्रश्न न समझकर मैंने उसे दोहरान को कहा।

क्रिया की धातु के रूप म पूववालिक कृदन्त द्वारा पुरुषवाचक क्रिया के साथ जुडने से वाक्य रचनापरक ाब्दसमुदाया का निर्माण होता है। इन शब्दसमुदायो के अगा (अथात पूववालिक कृदन्त तथा पुरुषवाचक क्रिया) के अथ पूणत बने रहत ह और एक दूसरे क बाद हो रह दो व्यापारा की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार क ाब्दसमुदाया म पूवकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूप जसा काय कर रह होते है और वाक्य म विधेय-जसा काय। जस (१) वह यह कह गया (अर्थात उसने यह कहा और गया)। (२) कुछ काम देंगे हजूर ? हाँ दूँ दूगा।

बहुधा पूवकालिक कृदन्त एसे शब्दसमुदाय म समाविष्ट होत हैं जिनके अथ उक्त शब्दसमुदाय के अगा से भिन होते है। इस प्रकार क ाब्दसमुदाय म कृदन्ता का अथ गौण हो जाता है और समग्र ाब्दसमुदाय विधिपरक या आकस्मिकता आदि जस निश्चयपरक अथ ग्रहण कर लते है। जस ले जाना ले चलना आ पहुँचना जा पहुँचना हो लेना आ कूदना आ निकलना, आ धमकना।

'छोडना क्रिया से बना 'छोडकर पूवकालिक कृदन्त को विभक्ति चिह्न के सयोजन म 'सिवाय का अथ देता है। जसे उसको छोडकर सब विद्यार्थी श्रेणी म उपस्थित हैं।

लेना' क्रिया से बना लेकर पूवकालिक कृदन्त को विभक्तिचिह्न सहित या को के बिना भी के साथ का अथ दिया करता है। जस वह कुत्ते को लेकर शिकार खेलने गया।

'होना क्रिया से बना होकर पूवकालिक कृदन्त माग से' का अथ दिया करता है। जसे वह दिल्ली होकर कलकत्ता जाएगा।

क्रिया के पुरुषवाचक रूप

हिन्दी म क्रिया के पुरुषवाचक रूप क्रिया की अपरिवर्तित या परिवर्तित धातु स विशिष्ट क्रियापरक पुरुषवाचक प्रत्ययो अथवा कृदन्ता द्वारा बनते है। क्रिया क पुरुषवाचक रूप जो क्रिया की धातु म विशिष्ट पुरुषवाचक प्रत्ययो स बनत हैं हिन्दी म उनकी संख्या बहुत नहीं है। उनम परिगणित होत हैं

(क) निश्चयार्थक प्रकार का 'होना' क्रिया के सामान्य वर्तमान काल का सरल भेद।

(ख) प्रथम भविष्यत काल।

(ग) आज्ञार्थक प्रकार के भेद।

(घ) सम्भावनार्थक प्रकार का सामान्य भेद।

शेष सब पुरुषवाचक रूप कृदन्तो द्वारा बनते है। कृदन्तपरक पुरुषवाचक रूप कृदन्तो से बने होते है या कृदन्तो तथा सहायक क्रियाओ से बने होते है। क्रिया के पुरुषवाचक रूप जो क्रिया की धातु से पुरुषवाचक प्रत्ययो द्वारा बनते हैं या केवल कृदन्तो से बनते हैं वे सामान्य पुरुषवाचक कहाते है और जो कृदन्तो तथा सहायक क्रियाओ से बनते है वे जटिल पुरुषवाचक रूप कहाते है।

सामान्य कृदन्तपरक पुरुषवाचक रूपो मे सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा सातत्यबोधक कृदन्त प्रयुक्त होते है। जटिल कृदन्तपरक पुरुषवाचक रूपो मे सामान्य वर्तमानकालिक कर्तृवाचक तथा कर्मवाचक कृदन्तो का प्रयोग होता है। सहायक क्रियाओ के रूप मे 'होना' 'रहना', 'जाना' 'आना', 'करना' तथा कुछ अन्य क्रियाओ का प्रयोग होता है। क्रिया के पुरुषवाचक रूपो मे परिगणित होते है काल प्रकार विधि तथा वाच्य।

काल

हिन्दी मे काल क्रियापरक रूपो का ऐसा समवाय है जो भाषा मे प्रत्यक्ष एव वास्तव मे विद्यमान समय का प्रतिबिम्बित करता है और क्रिया से अभिव्यक्त व्यापार या अवस्था के सम्बन्ध का कथन के क्षण के प्रति निर्देश करता है। ऐतिहासिक वर्णना मे काल, पूर्वकालिकता, आनुपूर्विता तथा समकालिकता का निर्देश करता है। काल के तीन मुख्य भेद हैं वर्तमान भूत तथा भविष्यत।

वर्तमान काल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण मे होता है या शाश्वत सत्य होता है। जैसे (१) वह एक अखबार पढ़ता है। (२) पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

भूतकाल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण से पूर्व हो रहा था या हुआ था। जैसे जमना सवेरा मे रही थी।

भविष्यत्काल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण के पश्चात होगा। जैसे मैं कल वापस मेरठ चला जाऊगा।

उपरोक्त उदाहरणो मे स्पष्ट है कि इस या उस काल से सम्बन्धित

यापार वतमान भन या भविष्यतकाल के किसी निश्चित रूप में अभिहित होता है।

कई भाषाओं में क्रिया के कालों के तीन मुख्य भेदों के अनेक अवान्तर भेद होते हैं। हिन्दी में भी क्रिया के कालों के इसी तरह अनेक अवान्तर भेद होते हैं। ये भेद इसलिए होते हैं ताकि काल के विभिन्न भेदों से व्यापार की पूर्णता या अपूर्णता व्यक्त हो सके। अतएव हिन्दी में कालों के बहुसंख्यक भेद व्यापार के सम्पादन का निर्देश करने के साथ साथ उसकी पूर्णता या अपूर्णता का भी निर्देश करते हैं।

प्रकार

क्रिया के प्रकारों का ऐसे क्रियापरक रूप कहते हैं जो वस्तुस्थिति के प्रति वक्ता से अभिहित क्रिया के व्यापार या अवस्था का निर्देश करते हैं। क्रिया के प्रकार जो अर्थ देते हैं उन्हें प्रकारपरक कहते हैं। हिन्दी में अनुमान द्विविधा सम्भावना आदि जैसे भाव केवल क्रिया के प्रकारों से ही नहीं अपितु अन्य साधनों से भी व्यक्त हो सकते हैं। इन साधनों में समावेश है किन्हीं विशेष शब्दों, निपातों तथा विशेष क्रियाओं के प्रयोग का जो प्रकारपरक अर्थ देते हैं। जैसे (१) शायद वह यहां नहीं रहता था। (२) सम्भव है कि मेरी बहिन आज ही जा सकेगी।

परन्तु प्रकारपरक भावों को व्यक्त करने का मुख्य साधन है क्रिया के अनेक प्रकार। हिन्दी में ये क्रियापरक रूप संश्लिष्टात्मक या विश्लिष्टात्मक होते हैं। पदरचनापरक तथा भावार्थक विशेषताओं के अनुसार हिन्दी में क्रियाओं के ये चार प्रकार हैं (१) निश्चयार्थक प्रकार, (२) आज्ञार्थक प्रकार, (३) सम्भावनार्थक प्रकार तथा (४) संकेतार्थक प्रकार।

निश्चयार्थक प्रकार

क्रिया के निश्चयार्थक प्रकार का कोई अपना पदरचनापरक चिह्न नहीं है जो उसका पूर्ण निर्देश कर सके। निश्चयार्थक प्रकार की यह विशेषता है कि उसके काल के रूप होते हैं। निश्चयार्थक प्रकार क्रिया के व्यापार की वस्तविकता का दर्शाता हुआ बताता है कि वक्ता उस व्यापार को एक तथ्य समझता है और उसका वर्तमान भूत या भविष्यतकाल से सम्बन्ध जोड़ता है।

निश्चयार्थक प्रकार के तीन मुख्य कालों के पन्द्रह अवान्तर भेद होते हैं। सुविधा के लिए हम इन अवान्तर भेदों को यहाँ ये नाम देंगे। उनमें

वर्तमानकाल में निम्न का परिगणन होता है

(क) सामान्य वर्तमानकाल।
(ख) जटिल वर्तमानकाल।
(ग) सातत्यबोधक वर्तमानकाल।
(घ) जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल।

भूतकाल में निम्न का परिगणन होता है

(क) सामान्य अपूर्ण भूतकाल।
(ख) जटिल अपूर्ण भूतकाल।
(ग) सातत्यबोधक भूतकाल।
(घ) जटिल सातत्यबोधक भूतकाल।
(ङ) सामान्य भूतकाल।
(च) आसन्न भूतकाल।
(छ) पूर्ण भूतकाल।

भविष्यत्काल में निम्न का परिगणन होता है

(क) प्रथम भविष्यत्काल।
(ख) द्वितीय भविष्यत्काल।
(ग) तृतीय भविष्यत्काल।
(घ) सातत्यबोधक भविष्यत्काल।

वर्तमानकाल तथा उसके भेद

सामान्य वर्तमानकाल

'होना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल में दो भेद होते हैं सरल तथा जटिल। 'होना' क्रिया के वर्तमानकाल का सरल भेद उक्त क्रिया की परिवर्तित धातु में पुरुषवाचक प्रत्ययों से बनता है। वर्तमानकाल के सरल भेद में होना क्रिया के रूप केवल पुरुष तथा वचन में बदलते हैं। एकवचन में मध्यम तथा अन्य पुरुष के रूप एक जैसे होते हैं। बहुवचन में उत्तम, मध्यम (आदरसूचक आप सर्वनाम से सम्बन्धित) तथा अन्य पुरुष के रूप एक जैसे होते हैं।

सामान्य वर्तमान काल के सरल भेद में 'होना' क्रिया की रूपरचना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	(मैं) हूँ	(हम) हैं

मध्यम पुरुष	(तू) है	(तुम) हो, (आप) हैं
अन्य पुरुष	(वह) है	(ये, वे) हैं

सामा य वतमानकाल का निर्माण

सामान्य वतमानकाल क्रिया के सामान्य वतमानकालिक कृदत तथा *होना क्रिया के सामान्य वतमानकाल के सरल भेद के रूपों के सयोजन से* बनता है। जसे कॉलेज के लडका को देखता हूँ जो जोर जोर स हँसते है। लापरवाह रहते है और कभी इसको बनाते है कभी उसस मजाक करते है।

सामान्य वतमानकाल म सामान्य वतमानकालिक कृदत लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) म बदलते है और होना' सहायक क्रिया बदलती है पुरुष और वचन म।

सामा य वतमानकाल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढता हूँ	(मैं) पढती हूँ
(तू) पढ़ता है	(तू) पढती है
(यह वह) प ता है	(यह वह) पढ़ती है
बहुवचन पुल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पढते हैं	(हम) पढती है
(तुम) पढते हो	(तुम) पढती हो
(आप) पढते हैं	(आप) पढ़ती हैं
(ये, वे) पढ़त हैं	(ये, वे) पढ़ती हैं

यदि सामान्य वतमानकाल म क्रिया के साथ 'नहीं' नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है तो होना सहायक क्रिया का लोप हो सकता है और स्त्रीलिंग बहुवचन रूपा मे सामान्य वतमानकालिक कृदत इ अत म लग जाता है। *जस य लडकियाँ नहीं खेलती।*

सामान्य वतमानकाल का प्रयोग

हिन्दी म सामान्य वतमानकाल का प्रयोग होता है

(क) *ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो कथन के क्षण के साथ* साथ हो रहा है। जस क्या आप अखबार पढते हैं? नहीं मैं पत्रिका पढता हूँ।

(ख) *एस व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका कथन क क्षण स*

सम्बन्ध नहीं होता है। जैसे यह लडका अभी स्कूल म पढता है।

(ग) एस व्यापार का निर्देश करने के लिए जो नित्य एव सवदा होता है। जैसे (१) पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। (२) इस म शीत काल में नदियाँ जम जाती है।

(घ) ऐसे भावी व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसम उस व्यापार की निष्पन्नता की उद्यतता या सामीप्य की विवक्षा होती है। जसे (१) मैं अभी जाता हूँ, सरकार! (२) मैं आपके पैरो पडती हूँ मकान इस वक्त न बचें। (३) तुम खाओ मोहन! तुम्हें नींद जल्दी आ जाती है।

यदि क्रिया के व्यापार को अनुमानपरक समझा जाता है तो सामान्य वतमानकाल म क्रिया सम्भावना विनिपतावोधक उपवाक्यो म भी भावी व्यापार का निर्देश कर सकती है। जैसे आप लोग कहते हैं तो मैं तीस हजार की बातचीत करूँगा।

(ङ) एस भूतकालीन व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसम वक्ता उस व्यापार को वतमान की भाति प्रस्तुत करना चाहता है। जैसे (१) वह भा समय गई ठीक ही कहता है। (२) मैं दो चार हजार के लिए झूठ न बोलूँगा, नहीं-नहीं यह मैं कब कहता हूँ।

सामान्य वतमानकाल मे 'होना' क्रिया का जटिल भेद

सामान्य वतमानकाल का होना' क्रिया का जटिल भेद अन्य क्रियाओ के सामान्य वतमानकाल की भाति बनता है अर्थात 'होना क्रिया के सामान्य वतमानकालिक कृदत तथा 'होना' क्रिया के सामान्य वतमानकाल के सरल भेद के रूपो के सयोजन स बनता है।

सामान्य वतमानकाल के जटिल भेद मे 'होना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) होता हूँ	(म) होती हूँ
(तू) होता है	(तू) होती है
(यह वह) होता है	(यह, वह) होती है
बहुवचन पुल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिग
(हम) होते हैं	(हम) होती हैं
(तुम) होते हो	(तुम) होती हो

(आप) होते हैं	(आप) होती ह
(ये, वे) होते हैं	(ये, वे) होती हैं

जटिल वतमानकाल

जटिल वतमानकाल क्रिया के सामान्य वतमानकालिक कृदन्त तथा होना' क्रिया के सामान्य वतमानकाल के जटिल भेद के रूपा के सयोजन से बनता है। जसे वह प्रात अपने जूते पर पालिश करता होता है।

जटिल वतमानकाल म सामान्य वतमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिग) म बदलते हैं और 'होना' क्रिया के सामान्य वतमान काल के सरल भेद के रूप पुरुष और वचन म बदलते हैं।

जटिल वतमानकाल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग	एकवचन स्त्रीलिग
(म) पढता होता हूँ	(म) पढती होती हूँ
(तू) पढता होता है	(तू) पढती होती है
(यह, वह) पढता होता है	(यह वह) पढती होती है

बहुवचन पुल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिग
(हम) पढ़ते होते हैं	(हम) पढती होती हैं
(तुम) पढते हो,	(तुम) पढती होती हो,
(आप) पढ़ते होते है	(आप) पढ़ती होती हैं
(ये, वे) पढते होते हैं	(ये, वे) पढ़ती होती हैं

जटिल वतमानकाल का प्रयोग

हिन्दी म जटिल वतमानकाल ऐसे व्यापार का निदश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो वतमान म किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव स सम्बधित होता है। जसे उसका भाई यहा घूमने के लिए आता होता है।

सातत्यबोधक वतमानकाल

सातत्यबोधक वतमानकाल क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त तथा होना' क्रिया के सामान्य वतमान के सरल भेद के रूपो के सयोजन से बनता है। जैसे वह घर म जा रहा है।

सातत्यबोधक वतमानकाल म सातत्यबोधक कृदन्त लिंग तथा वचन

(पुल्लिंग) म बदलते है और 'होना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल के सरल भेद के रूप पुरुष तथा वचन म बदलते है

सातत्यबोधक वर्तमानकाल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(म) पढ रहा हूँ	(म) पढ रही हूँ
(तू) पढ रहा है	(तू) पढ रही है
(यह, वह) पढ रहा है	(यह, वह) पढ रही है

बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पढ रहे है	(हम) पढ रही हैं
(तुम) पढ रहे हो,	(तुम) पढ रही हो,
(आप) पढ रहे हैं	(आप) पढ रही हैं
(ये, वे) पढ रहे हैं	(य, वे) पढ रही हैं

सातत्यबोधक वर्तमानकाल म यदि क्रिया के साथ 'नही' नकारार्थक निपात प्रयुक्त होता है तो 'होना' सहायक क्रिया के रूप कभी कभी लुप्त हो हो जाते है। जैसे वह इस घर म नही रह रहा।

सातत्यबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग

हिन्दी म सातत्यबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग होता है

(क) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जो कथन के क्षण के साथ-साथ होता है। जसे पेडों पर चिडिया बोल रही हैं।

(ख) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका कथन के क्षण स सम्बन्ध नही होता है। जसे हम डाक्टर की दवा खा रहे हैं।

(ग) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जो नित्य एव सवदा होता है। जसे पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है।

(घ) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका सम्पादन निकट भविष्य म होगा। ऐसे प्रयोग म वाक्य प्राय समयविशेषताबोधक भविष्य का सकेत करता होता है। जस मेरे मित्र की बहिन आज साँझ को बम्बई जा रही है।

जाना क्रिया का सातत्यबोधक वतमानकाल असामान्य कारक म क्रिया के सामान्य रूप के सयोजन म क्रिया के सामान्य रूप म निर्दिष्ट व्यापार के सम्पादन का ध्येय प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है। जस (१) वह चिट्ठी

लिखा जा रहा है। (२) यह सभा परसों शाम को पांच बजे होने जा रही है।

जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल

जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल के जटिल भेद के रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे पुत्र की उन्नति को देखकर पिता प्रसन्न हो रहा होता है।

जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल में सातत्यबोधक कृदन्त तथा होना क्रिया का वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग और वचन (पुल्लिंग) में बदलते हैं और होना क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल के सरल भेद के रूप पुरुष तथा वचन में बदलते हैं।

जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढ़ रहा होता हूं	(मैं) पढ़ रही होती हूं
(तू) पढ़ रहा होता है	(तू) पढ़ रही होती है
(यह, वह) पढ़ रहा होता है	(यह, वह) पढ़ रही होती है
बहुवचन पुल्लिंग	**बहुवचन स्त्रीलिंग**
(हम) पढ़ रहे होते हैं	(हम) पढ़ रही होती हैं
(तुम) पढ़ रहे होते हो,	(तुम) पढ़ रही होती हो, (आप)
(आप) पढ़ रहे होते हैं	पढ़ रही होती हैं
(ये, वे) पढ़ रहे होते हैं	(ये, वे) पढ़ रही होती हैं

जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग

हिन्दी में जटिल सातत्यबोधक वर्तमानकाल उसे सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो वर्तमान में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव से सम्बन्धित होता है। जैसे मेरा मित्र भोजन के बाद आराम कर रहा होता है।

भूतकाल तथा उसके भेद

सामान्य अपूर्ण भूतकाल

होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल में भी दो भेद होते हैं सरल तथा जटिल। होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के काम में

'था' सहायक क्रिया प्रयुक्त होती है। यह सहायक क्रिया केवल लिंग तथा वचन में बदलती है। जैसे

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) था	(मैं) थी
(तू) था	(तू) थी
(यह, वह) था	(यह, वह) थी

बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) थे	(हम) थीं
(तुम) थे, (आप) थे	(तुम) थीं, (आप) थीं
(ये, वे) थे	(ये, वे) थीं

जम छोटा सा मकान था परन्तु उसके गाव वाले गढ़ी' के आदर व्यजक शब्द से पुकारा करते थे और ठाकुर के डर के मारे राजा शब्द से सबोधित करते थे।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल का निर्माण

सामान्य अपूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त तथा होना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूपों के समोजन से बनता है।

सामान्य वर्तमानकाल में तथा सामान्य अपूर्ण भूतकाल में 'होना' क्रिया के सरल भेद का प्रयोग

उक्त दो कालों में 'होना' क्रिया के सरल भेद का उपयोग होता है

(क) स्वतन्त्र रूप में। इस रूप में होना क्रिया के सरल भेद किसी की उपस्थिति या विद्यमानता का सामान्य निर्देश करते हैं। जैसे (१) वह बम्बई में है। (२) यह पुस्तक मेज पर है (थी)।

(ख) मुख्य क्रियाओं के रूपों के निर्माण में। जैसे वह पढ़ता है (था)।

(ग) सहायक क्रिया के रूप में। संज्ञाशब्द के साथ प्रयुक्त 'होना' क्रिया सचाई तथ्य का निर्देश करती है। जैसे वह विद्यार्थी है (था)।

विशेषण के साथ प्रयुक्त होना क्रिया निर्देश करती है —

(१) किसी अकाट्य सत्य का। जैसे (१) पृथ्वी गोल है। (२) प्राचीन काल में यूरोप का जलवायु अधिक गरम था।

(२) किसी एक घटना का। जैसे लड़का बीमार है (था)।

(३) एक ही वस्तुओं के समूह में से किसी एक निश्चित को। जैसे वह स्याही खाती है (थी)।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल में 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुंल्लिग	एकवचन स्त्रीलिग
(मै) पढता था	(मैं) पढती थी
(तू) पढता था	(तू) पढती थी
(यह, वह) पढता था	(यह वह) पढती थी

बहुवचन पुल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिग
(हम) पढते थे	(हम) पढती थीं
(तुम) पढते थे, (आप) पढ़ते थे	(तुम) पढती थी (आप) पढती थीं
(ये, वे) पढते थे	(ये वे) पढती थी

ऊपर दी गयी तालिकाओं से स्पष्ट है कि पुंल्लिग में वचन से सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया दोनों ही बदलते हैं। स्त्रीलिंग में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त वाली मुख्य क्रिया दोनों वचनों में अपरिवर्तित रहता है। वचन से केवल सहायक क्रिया बदलती है। यदि क्रिया के साथ नहीं नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है तो सहायक क्रिया के रूप लुप्त भी हो सकते हैं। जैसे वह कल कोई पुस्तक नहीं पढ़ता। जब सहायक क्रिया का लोप होता है तब सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त बहुवचन में ती के रूप में प्रयुक्त होता है जैसे परमों ये लडकियाँ नहीं घूमती।

यदि भूतकाल में क्रिया के व्यापार की आवृत्ति अभीष्ट होता है तो सामान्य अपूर्ण भूतकाल में नहीं नकारात्मक निपात के प्रयोग के अभाव में भी सहायक क्रिया का लोप हो जाता है। जैसे (१) कभी उसे कोई लाल रंग का कमीज सिलवा देता और कभी कोई पाजामा बनवा देता। (२) दूर प्रकाश और अँधियारे से रंगकर कभी ये नीले दीखते कभी सफेद और फिर लाल से अरुण पड जाते। (३) एक समय में अकेली कमरे में चुपचाप कोई किताब पढती या अपनी समवयस्काओं से जो उसे देखने या मिलने आयी होती बातें करती प्रभा के पास वे पानों की डिबिया और पानदान रख जाती।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग

सामान्य अपूर्ण भूतकाल में होना क्रिया का जटिल रूप अन्य क्रियाओं के सामान्य अपूर्ण भूतकाल की भाँति बनता है अर्थात 'होना' क्रिया के सामान्य

वर्तमानकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूपों के संयोजन से बनता है।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल के जटिल भेद में 'होना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) होता था	(मैं) होती थी
(तू) होता था	(तू) होती थी
(यह, वह) होता था	(यह, वह) होती थी
बहुवचन पुल्लिंग	**बहुवचन स्त्रीलिंग**
(हम) होते थे	(हम) होती थीं
(तुम) होते थे, (आप) होते थे	(तुम) होती थीं (आप) होती थीं
(ये, वे) होते थे	(ये, वे) होती थीं

सामान्य वर्तमानकाल में तथा सामान्य अपूर्ण भूतकाल में 'होना' क्रिया के जटिल भेद का प्रयोग

उपरोक्त शीर्षक में दिये कालों में होना क्रिया का जटिल भेद स्वतन्त्रता से तथा सहायक क्रिया के तौर पर प्रयुक्त होता है। स्वतन्त्र प्रयोग में वह किसी की उपस्थिति या विद्यमानता की प्रायिकता का निर्देश करता है। जैसे (१) यह पुस्तक मेज पर होती है (थी)। (२) उसके यहाँ बहुत मेहमान होते हैं (थे)। (३) इन स्थानों में बहुत जानवर होते हैं (थे)। (४) मेरे भाई के पास कम पैसा होता है। (५) उस आदमी के पास बहुत बड़ा सोना होता था।

विशेषण के साथ प्रयुक्त सहायक क्रिया के तौर पर 'होना' क्रिया निर्देश करती है—

(क) किसी वस्तु के स्थायी गुण या विशेषता का। जैसे (१) लोहा कड़ा होता है। (२) कौए काले होते हैं।

(ख) किसी घटना की प्रायिकता या आवृत्ति का जैसे (१) यह लड़का अक्सर बीमार होता है (था)। संज्ञाशब्द के साथ प्रयुक्त होना क्रिया प्रायिकता का भी निर्देश करती है। जैसे वह मेरा साथी होता है।

संयुक्त नामिक क्रियाओं तथा क्रियानामिक शब्दसमुदायों में क्रियापरक अंग के तौर पर होना क्रिया के जटिल भेद अकर्मक व्यापार की प्रायिकता का

निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होते है। जैसे (१) हमारे पाठ सुबह नौ बजे शुरू होते हैं (थे)। (२) उस शहर पर बहुत हमले होते थे।

बाध्यतामूलक वाक्यों में 'होना' क्रिया के जटिल भेद क्रिया के सामान्य रूप से व्यक्त व्यापार की प्रायिकता का निर्देश करता है। जैसे मुझे वहाँ जाना होता है (था)।

जटिल अपूर्ण भूतकाल

जटिल अपूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के जटिल रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे जब प्रातः ६ बजे मैं उसके घर जाता था तब भी वह सोता होता था।

जटिल अपूर्ण भूतकाल में वचन (पुल्लिंग) में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया दोनों ही बदलते हैं। स्त्रीलिंग में सामान्य वर्तमान काल वाली मुख्य क्रिया दोनों वचनों में अपरिवर्तित रहती है। वचन में केवल सहायक क्रिया बदलती है।

जटिल अपूर्ण भूतकाल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढ़ता होता था	(मैं) पढती होती थी
(तू) पढता होता था	(तू) पढती होती थी
(यह वह) पढता होता था	(यह वह) पढती होती थी
बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पढ़ते होते थे	(हम) पढ़ती होती थीं
(तुम) पढते होते थे (आप) पढ़ते होते थे	(तुम) पढ़ती होती थीं (आप) पढती होती थीं
(ये वे) पढते होते थे	(ये, वे) पढती होती थीं

जटिल अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी में जटिल अपूर्ण भूतकाल ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होते हैं जो भूतकाल में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव से सम्बन्धित होता है। जैसे राममूर्ति प्रातः उठकर नियमपूर्वक व्यायाम करता होता था।

सातत्यबोधक भूतकाल

सातत्यबोधक भूतकाल क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे : कल बड़े जोर से पानी बरस रहा था।

सातत्यबोधक भूतकाल में सातत्यबोधक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में बदलता है। 'होना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूप लिंग तथा वचन में बदलते हैं।

सातत्यबोधक भूतकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढ़ रहा था	(मैं) पढ़ रही थी
(तू) पढ़ रहा था	(तू) पढ़ रही थी
(यह, वह) पढ़ रहा था	(यह, वह) पढ़ रही थी
बहुवचन पुल्लिंग	**बहुवचन स्त्रीलिंग**
(हम) पढ़ रहे थे	(हम) पढ़ रही थीं
(तुम) पढ़ रहे थे, (आप) पढ़ रहे थे	(तुम) पढ़ रही थीं (आप) पढ़ रही थीं
(ये, वे) पढ़ रहे थे	(ये, वे) पढ़ रही थीं

सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी में सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग होता है —

(क) ऐसे सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए जो भूतकाल के किसी क्षण में या किसी अन्य व्यापार के सम्पादन के क्षण में होता था। जैसे : (१) मैं उस समय एक किताब लेकर पढ़ने का बहाना कर रहा था। (२) मुझे तो मुद्दत से ही इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि क्या वह इस इतनी महत्वपूर्ण बात को अत्यन्त तुच्छ बनाकर उड़ाये हुए है। (३) एक दिन संध्या समय जब आकाश में बादल छटा रहे थे बुढ़ाया नामक गाँव में एक परदेशी शिशुपाल ब्राह्मण के द्वार पर आया। (४) जब तीसरे दिन एक आदमी को लेकर पहुँचा तो शारदा बंगले के सामने घास पर टहल रही थी।

(ख) ऐसे सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसकी

पृष्ठभूमि म किसी अय व्यापार का सम्पादन हुआ है। जैसे (१) मेरी धमपत्नी और लाल की मा एक दिन बैठी हुई बातें कर रही थी कि म पहुँच गया। (२) धूप की गरमी स सुखी होकर वह चिता भुलाने का प्रयत्न कर रहा था कि किसी ने पुकारा—भले आदमी रह कहा ?

कभी कभी बल देने के लिए मुख्य क्रिया की धातु के बाद ही निपात का प्रयोग किया जाता है। जसे व स्टेशन जा ही रह थे कि गाडी निकल गयी।

जाना क्रिया का सातत्यबोधक भूतकाल असामाय वाक्य म क्रिया के सामाय रूप के सयोजन से क्रिया के सामाय रूप द्वारा निर्दिष्ट भूतकालिक व्यापार के सम्पादन का ध्येय प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है। जसे (१) वह कहानी चिट्ठी लिखने जा रहा था। (२) म आवाज लगाने जा ही रहा था कि वह उतर कर सामने खडा हो गया।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल क्रिया के सातत्यबोधक कृदत तथा होना क्रिया के सामाय अपूण भूतकाल के जटिल भेद के रूपो के सयोजन से बनता है। जसे जब म उसके घर जाता था वह प्राय कोई पुस्तक पढ रहा होता था।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल म सातत्यबोधक कृदत तथा होना क्रिया का वतमानकालिक कृदत लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) म बदलते है और होना क्रिया के सामाय भूतकाल के सरल भेद के रूप लिंग तथा वचन म बदलते हैं।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढ रहा होता था	(मै) पढ रही होती थी
(तू) पढ रहा होता था	(तू) पढ रही होती थी
(यह, वह) पढ रहा होता था	(यह वह) पढ़ रही होती थी
बहुवचन पुल्लिंग	**बहुवचन स्त्रीलिंग**
(हम) पढ रहे होते थे	(हम) पढ रही होती थीं
(तुम) पढ रहे होते थे (आप) पढ़ रहे होते थे	(तुम) पढ़ रही होती थीं (आप) पढ रही होती थीं
(ये, वे) पढ़ रहे होते थे	(ये, वे) पढ़ रही होती थीं

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी में जटिल सातत्यबोधक भूतकाल एवं सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो भूतकाल में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव से सम्बन्धित होता है। जैसे वह प्रात उठकर प्रतिदिन सैर करने जा रहा होता था।

सामान्य भूतकाल

सामान्य भूतकाल सामान्य भूतकालिक कृदन्त से व्यक्त होता है। जैसे (१) लड़का आया। (२) गाड़ीवान चुपचाप बैलों को हाँकने लगा।

सामान्य भूतकाल के रूपों के निर्माण में क्रिया की अकर्मकता सकर्मकता के अनुसार भेद किया जाता है।

सामान्य भूतकाल में सब अकर्मक क्रियाओं की रूपरचना निम्न उदाहरण के अनुसार होती है —

सामान्य भूतकाल में 'पहुँचना' अकर्मक क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुंल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पहुँचा	(मैं) पहुँची
(तू) पहुँचा	(तू) पहुँची
(यह वह) पहुँचा	(यह, वह) पहुँची

बहुवचन पुंल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पहुँचे	(हम) पहुँचीं
(तुम) पहुँचे, (आप) पहुँचे	(तुम) पहुँचीं (आप) पहुँचीं
(ये, वे) पहुँचे	(ये, वे) पहुँचीं

उपर्युक्त तालिका में स्पष्ट है कि सामान्य भूतकाल में क्रिया लिंग तथा वचन में बदलती है। तदनुसार वाक्य में सामान्य भूतकाल में क्रिया से अभिव्यक्त विधेय के लिंग तथा वचन उद्देश्य का अनुमान करते हैं। ऐसी वाक्यरचना जिसमें विधेय का रूप उद्देश्य (कर्ता) के अनुसार होता है कर्तृवाच्यपरक वाक्य रचना कहलाता है।

क्रिया के पुरुषवाचक अन्य रूपों की भाँति जिनमें सामान्य भूतकालिक कृदन्त का समावेश होता है सामान्य भूतकाल का प्रयोग क्रिया के अर्थ पर निर्भर करता है। सब अकर्मक क्रियाएँ केवल कर्तृवाच्यपरक वाक्यरचना में

प्रयुक्त होती हैं। सकर्मक क्रियाएँ प्राय उक्त प्रकार की वाक्य रचना में प्रयुक्त नहीं होती हैं। सामान्य भूतकाल में तथा दूसरे पुरुषवाचक रूपों में जिनमें सामान्य भूतकालिक कृदन्त समाविष्ट होते हैं क्रिया की रूपरचना में 'ने' विभक्तिचिह्न का प्रयोग अनिवार्य है जिसके कारण वाक्य में उद्देश्य सामान्य कारक में नहीं बल्कि 'ने' विभक्तिचिह्न सहित असामान्य कारक में प्रयुक्त होते हैं। ऐसी वाक्यरचना में विधेय लिंग तथा वचन में उद्देश्य के अनुसार नहीं बल्कि सामान्य कारक में प्रधान कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे पिताजी ने एक लिफाफा खरीदा। (२) पिताजी ने तीन लिफाफे खरीदे। (३) भाई ने एक चिट्ठी लिखी। (४) भाई ने बहुत चिट्ठियाँ लिखी।

ऐसी वाक्य रचना जिसमें विधेय का रूप प्रधान कर्म के अनुसार होता है **कर्मवाच्यपरक वाक्यरचना** कहलाती है।

वाक्य में प्रधान कर्म के अभाव में या उस स्थिति में जब प्रधान कर्म को विभक्तिचिह्न सहित असामान्य कारक में होता है अथवा वह प्रधान कर्म कर्मकारक में कोई सर्वनाम होता है तो वाक्य में विधेय किसी का अनुगमन नहीं करता है और वह एकवचन अन्य पुरुष पुल्लिंग अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे (१) विद्यार्थी ने काले तख्ते पर लिखा। (२) लड़की ने अपने बाप को दम दिया। (३) मेरे दोस्त ने मुझे यहाँ भेजा।

ऐसी वाक्यरचना जिसमें विधेय तीनों पुरुषों दोनों वचनों व लिंगों के लिए एकवचन अन्य पुरुष पुल्लिंग अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है वह **भाववाच्यपरक वाक्यरचना** कहलाती है।

सामान्य भूतकाल में 'लिखना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

कर्मवाच्यपरक वाक्यरचना

एकवचन

मैंने चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)
तूने चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)
(इसने, उसने) चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)

बहुवचन

हमने पत्र लिखा (पत्र लिखे)
तुमने पत्र लिखा (पत्र लिखे)
आपने पत्र लिखा (पत्र लिखे)
(इन्होंने, उन्होंने) पत्र लिखा (पत्र लिखे)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

एकवचन

मने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

तूने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

(इसने, उसने) चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

बहुवचन

हमने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

(तुमने, आपने) चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

(इन्होंने उन्होंने) चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

सामान्य भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी म सामान्य भूतकाल का प्रयोग होता है —

(क) सकृद सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए। जैसे इन्हा दिनो म इलाके के तहसीलदार साहब न अपने दौरे के लिए मागरा का गाँव चुना।

(ख) सकृद या अनेक अनुक्रमिक सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए। जैसे (१) कोई हुक्का पीने लगा, कोई ताश खेलने लगा, कोई अखबार उठाकर देखने लगा। (२) महमूद ने शरारत भरी आँखो स मेरी तरफ देखा और एक आँख भीच ली।

(ग) ऐसे सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए जो सकृद किन्तु अनेक कार्यों वाला होता है। जैसे (१) नीला रफी के घर कई बार आयी। (२) बाजार म, गली म, सड़क पर जहाँ कहीं वह मिल गया लडका ने उसे तंग करना शुरू कर दिया।

(घ) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो सम्पादन क्षण म निरपेक्ष रहकर सम्पादित हुआ समझा जाता है। जैसे (१) वह बम्बई चला गया। (२) उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा।

(ङ) वर्तमानकाल म होने वाले ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो सम्पादित हुए के रूप म प्रस्तुत किया जाता है। जैसे (१)मैं अभी चला। (२) जरा नीचे आ चिड़िया। जवाब म जरा-सा मुस्कराकर प्रभा ने जवाब दिया, आयी अम्मा जी।'

(च) यदि से निषेधात्मक उपवाक्यों मे भावी व्यापार का निर्देश करने के लिए। जैसे यदि उसने ऐसा किया तो उसे इस पर पछताना पड़ेगा।

आसन्न भूतकाल

आसन्न भूतकाल क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल के सरल भेद के रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे बच्चा सो चुका है।

कर्तृवाच्यपरक वाक्यरचना

आसन्न भूतकाल में 'पहुंचना' अकमक क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पहुँचा हूँ	(मैं) पहुँची हूँ
(तू) पहुँचा है	(तू) पहुँची है
(यह, वह) पहुँचा है	(यह, वह) पहुँची है

बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पहुँचे हैं	(हम) पहुँची हैं
(तुम) पहुँचे हो (आप) पहुँचे हैं	(तुम) पहुँची हो, (आप) पहुँची हैं
(ये, वे) पहुँचे हैं	(ये, वे) पहुँची हैं

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कर्तृवाच्यपरक रूपरचना में आसन्न भूतकाल में सामान्य भूतकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में बदलते हैं। 'होना' सहायक क्रिया पुरुष तथा वचन में बदलती है। यदि क्रिया सकमक है तो कमवाच्यपरक या भाववाच्यपरक वाक्यरचना प्रयुक्त होती है। जैसे (कमवाच्यपरक रूपरचना) १ उसने यह अखबार पढा है। २ रंडक ने दो चिटिठ्याँ भेजी हैं। (भाववाच्यपरक रूपरचना) १ हमने एक आदमी को देखा है। २ उन्होंने लिखा है।

आसन्न भूतकाल में 'लिखना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त वाली क्रिया के आसन्न भूतकालिक रूप लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में बदलते हैं। 'होना' सहायक क्रिया केवल वचन में बदलती है।

एकवचन

मैंने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)

तूने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)

इसने, उसने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)

बहुवचन

हमने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

तुमने आपने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

इन्होंने उन्होंने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

भाववाच्यपरक वाक्यरचना म सामान्य भूतकालिक कृदन्त वाली क्रिया का आसन्न भूतकालिक रूप सदा पुल्लिंग एकवचन म प्रयुक्त होता है और होना सहायक क्रिया अन्य पुरुष एक वचन म।

एकवचन

मने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

तूने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

इसने उसने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

बहुवचन

हमने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा ह

तुमने आपने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा ह

इन्होंने उन्होंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा ह

आसन्न भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी म आसन्न भूतकाल ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो एक निश्चित क्षण म सम्पादित हुआ होता है तथा अपने परिणाम के रूप म जारी है। यह काल सूचित करता है कि व्यापार कथन के क्षण म विद्यमान है। इस प्रकार आसन्न भूतकाल से निर्दिष्ट व्यापार का समय भूत तथा वर्तमान दोनों कालों स सम्बन्धित होता है। जैसे (१) अब पाँच बजे हैं। (२) बातों से भी लगता है कि अब समय आ गया है। (३) एक दफा शंकर सावर उसका औरत सुन गया है।

पूर्ण भूतकाल

पूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल अन्य रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे यह पहले भी यहाँ आया था।

पूर्ण भूतकाल तब भी प्रयुक्त होता है जब किसी अन्य व्यापार से पूर्व सम्पादित व्यापार का उल्लेख अपने से पश्चाद्वर्ती व्यापार के अनन्तर होना है। वाक्य में प्रायः इस अन्य अधिक पश्चातकालीन व्यापार का उल्लेख नहीं किया होता है लेकिन उसका प्रसंग से पता चलता है। जैसे (१) मैं बाहर नहीं गया था उस समय मैं सोया था। (२) अम्मा की आवाज सुनी बड़ी आइ दाल तो मैंने चख ली थी। (३) बाबूजी से न मांगना पड़े इसलिए तो मैं अम्मा के पास गया ही था।

(ख) ऐसे पूर्व व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसके पश्चात किसी अन्य व्यापार का सम्पादन हुआ हो। जैसे (१) श्रेणी में आये थे कि पाठ शुरू हुआ। (२) मैं घर से निकला ही था कि मेरा मित्र आया।

(ग) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो भूतकालिक अन्य व्यापार के सम्पादन से पूर्व सम्पादित न हो पाया है। इस प्रयोग में क्रिया से पहले न निपात का व्यवहार होता है। जैसे (१) अभी हम पहुंचे न थे कि वे चल गये। (२) अभी वह एक तंग गली पर रुका हो था कि बालक को फिर से सिसकने की उसे आहट मिली। (३) अम्मा ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि अचानक मुन्नी के फूट फूटकर रोने से सब चौंक गये।

मिश्रित वाक्यों में जिनमें सम्भावना विशेषणवाचक उपवाक्य होता है पूर्ण भूतकाल ऐसे पूर्वकालीन व्यापार का निर्देश भी कर सकता है जो उपवाक्य के विधेय में निर्दिष्ट व्यापार से पूर्व सम्पादित न हो पाया हो और उपवाक्य में नकारार्थक निपात का प्रयोग न किया गया हो। जैसे अगर हम लोग दौड़कर पकड़ न लेते तो जान ही दे दी थी।

(घ) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो भूतकाल में पर्याप्त समय पूर्व सम्पादित हुआ होता है। जैसे अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति सन १९१७ में हुई थी।

कुछ क्रियाएं अपने अर्थ के अनुसार सकर्मक सामान्य भूतकाल आसन्न भूतकाल पूर्ण भूतकाल तथा दूसरे पुरुषवाचक रूपों में भी जिनमें सामान्य भूतकालिक कृदन्त समाविष्ट होता है अकर्मक क्रियाओं की भांति प्रयुक्त हो सकती हैं। ऐसी क्रियाओं में परिगणित शब्द हैं भूलना समझना सीखना हारना जीतना आदि। इनका क्रिया के रूप अकर्मक क्रियाओं की भांति बनते हैं। जैसे हम ये बातें यहां लाये (हैं) (थे)।

भविष्यत्काल तथा उसके भेद

प्रथम भविष्यत्काल

प्रथम भविष्यत काल क्रिया की धातु म निम्न पुरुषवाचक प्रत्यया क जोडन से बनता है

	एकवचन पुंल्लिग	एकवचन स्त्रीलिग
उत्तम पुरुष	ऊगा	ऊगी
मध्यम पुरुष	एगा	एगी
अ य पुरुष	एगा	एगी

	बहुवचन पुंल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिग
उत्तम पुरुष	एगे	एगी
मध्यम पुरुष	ओगे	ओगी
अ य पुरुष	एगे	एगी

प्रथम भविष्यत् काल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुंल्लिग	एकवचन स्त्रीलिग
(मैं) पढ़ूगा	(मैं) पढ़ूगी
(तू) पढेगा	(तू) पढेगी
(यह वह) पढेगा	(यह, वह) पढेगी

बहुवचन पुंल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिग
(हम) पढेंगे	(हम) पढ़ेंगी
(तुम) पढोगे, (आप) पढेंगे	(तुम) पढोगी, (आप) पढेंगी
(ये वे) पढेंगे	(ये व) पढेंगी

उपराक्त तालिका म स्पष्ट है कि प्रथम भविष्यत काल म क्रिया पुरुष ...चन तथा लिग म बदलती है। एकवचन म मध्यम तथा अ य पुरुष क रूप एक ...स ान है। बहुवचन म उत्तम मध्यम (आदरसूचक 'आप स सम्बधित) ...र अ य पुरुष क रूप एक जस हात है।

यदि क्रिया की धातु के अन्त म आ ई, ऊ ए' म स कोई स्वर ...ा है तो उन तथा प्रथम भविष्यत काल क पुरुषवाचक प्रत्ययो क बीच कभी ... व अथवा य व्यजन का आगम हो जाता है। य व्यजन क आगम स ...र्घ ई तथा ऊ ह्रस्व' हो जात है। जस जाना—हम जायगे। ...—तू पायगा (पाएगा)। छूना—व छुयगा।

दीर्घ 'ई' तथा 'ऊ' तब भी ह्रस्व हो जाते हैं जब प्रथम भविष्यत काल के पुरुषवाचक प्रत्यय क्रिया की धातु में सीधे जुड़ते हैं। जैसे पीना—हम पिएंगे। छूना—तू छुएगा।

लेना तथा देना क्रियाओं के प्रथम भविष्यत कालिक रूप उपरोक्त नियम के अपवाद हैं। इनमें उक्त पुरुषवाचक प्रत्यय क्रिया की धातु में नहीं अपितु उसके परिवर्तित रूप से जुड़ते हैं। जैसे

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) लूंगा (दूंगा)	(मैं) लूंगी (दूंगी)
(तू) लेगा (देगा)	(तू) लेगी (देगी)
(यह वह) लेगा (देगा)	(यह वह) लेगी (देगी)

बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) लेंगे (देंगे)	(हम) लेंगी (देंगी)
(तुम) लोगे (दोगे) (आप) लोगे (दोगे)	(तुम) लोगी (दोगी), (आप) लोगी (दोगी)
(ये, वे) लेंगे (देंगे)	(ये, वे) लेंगी (देंगी)

होना क्रिया के प्रथम भविष्यत कालिक रूपों का निर्माण अन्य क्रियाओं के प्रथम भविष्यत कालिक रूपों के निर्माण से काफी भिन्न होता है। जैसे

एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) हूँगा	(मैं) हूँगी
(तू) होगा	(तू) होगी
(यह वह) होगा	(यह वह) होगी

बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) होंगे	(हम) होंगी
(तुम) होगे (आप) होंगे	(तुम) होगी (आप) होंगी
(ये वे) होंगे	(ये, वे) होंगी

प्रथम भविष्यत् काल का प्रयोग

प्रथम भविष्यत काल उस व्यापार के सम्पादन का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो कथन के क्षण के बाद हो। जैसे (१) सोचा था कि चुपचाप जाकर पलंग पर सो जाऊंगा। (२) जब मैं चढ़ूंगा तो वह पीछे से आकर मेरा हाथ या कुर्ते का छोर पकड़ लेगी।

कहावतों तथा लोकोक्तियों में प्रथम भविष्यत् काल समय से निरपेक्ष व्यापार का निर्देश भी कर सकता है। जैसे जो बोयेगा सो काटेगा।

जब वाक्य में एक से अधिक विधेय होते हैं और वे प्रथम भविष्यत् कालिक क्रिया वाले होते हैं तब भविष्यत् काल का गा अन्त्य प्रत्यय कभी-कभी अंतिम क्रिया के साथ विधेय के उद्देश्य के अनुसार एक बार जुड़ता है। जैसे जाने से पहले क्या कुछ खाओ पियोगे ?

'होना' क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपों का प्रयोग

'होना' क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपों का प्रयोग केवल भविष्यत् काल का निर्देश करने के लिए ही नहीं होता है अपितु उनका व्यापक प्रयोग अनुमान सम्भावना दुविधा अनिश्चितता के प्रकारपरक भावों को व्यक्त करने के लिए भी होता है। जैसे (अनुमान)—उसकी उम्र बीस साल की होगी। (सम्भावना) आपकी औरत होगी। (अनिश्चितता) किसी समय यह इमारत खूबसूरत होगी।

होना क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपों से निर्दिष्ट अनुमान, सम्भावना तथा अन्य प्रकारपरक भावों को अधिक निश्चित रूप से व्यक्त करने के लिए वाक्य में बहुधा शायद 'सम्भवतः' आदि जैसे प्रकारपरक शब्द प्रयुक्त होते हैं। जैसे भाई साहब शायद अभी बम्बई में ही होंगे।

उक्त प्रकारपरक भाव नाना कालों में से किसी भी काल से सम्बन्धित हो सकता है। 'होना' क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूप अनुमान व्यक्त करने के लिए स्वतन्त्रता में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे (१) बुद्ध ने कहा था कि यह दुनिया धोखा है माया है। होगी लेकिन यकीन नहीं होता। (२) (प्रश्न) वह घर पर होंगे ? (उत्तर) होंगे।

द्वितीय भविष्यत् काल

द्वितीय भविष्यत् काल क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपों के संयोजन से बनता है। जैसे - वह आता होगा।

द्वितीय भविष्यत् काल में सामान्य वर्तमान कालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुंलिंग) में बदलता है और होना सहायक क्रिया पुरुष, वचन तथा लिंग में बदलती है।

द्वितीय भविष्यत् काल मे 'पढना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मै) पढता हूँगा	(मैं) पढती हूँगी
(तू) पढता होगा	(तू) पढती होगी
(यह वह) पढता होगा	(यह, वह) पढती होगी

बहुवचन पुलिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पढ़ते होंगे	(हम) पढती होंगी
(तुम) पढते होंगे, (आप) पढते होंगे	(तुम) पढती होंगी (आप) पढती होंगी
(ये वे) पढते होंगे	(ये वे) पढती होंगी

द्वितीय भविष्यत् काल का प्रयोग

हिन्दी मे द्वितीय भविष्यत काल भविष्यत कालिक असम्पादित या अपूर्ण व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे (१) आप देखेंगे कि वह अपनी गलती पर पछताता होगा। (२) चारपाई न हो तो मैं डाले जाती हूँ। यहा अभी तुम्हारे जठजी आते होंगे।

आधुनिक हिन्दी मे होना क्रिया के प्रथम भविष्यत काल के रूपो मे निहित प्रकारपरक भावो तथा द्वितीय भविष्यत काल के रूपो की विशिष्ट रचना के कारण इस काल का अर्थ पर्याप्त मात्रा मे बदल चुका है। इस समय द्वितीय भविष्यत काल का प्रयोग अधिकतर वर्तमान काल या निकट भविष्यत काल से सम्बन्धित व्यापार के सम्पादन के प्रति सम्भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे (१) लोग यहा तो कहते होंगे कि राय साहब के आदमी ऐसे बदमाश और चोर है। (२) नहीं भैया ऐसा नहीं करते। यह तो घर की गैल है। अन्न देवता का कही अपमान किया जाता होगा? (३) अभी बाप आते होंगे।

तृतीय भविष्यत् काल

तृतीय भविष्यत काल क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के प्रथम भविष्यत कालिक रूपो के संयोजन से बनता है। जैसे वह आया होगा।

क्रिया के अन्य पुरुषवाचक रूपो की भाँति जिनमे सामान्य भूतकालिक कृदन्त का समावेश होता है तृतीय भविष्यत काल का निर्माण क्रिया की

अकर्मकता तथा सकर्मकता पर निर्भर करता है।

तृतीय भविष्यत काल में अकर्मक क्रियाओं की रूपरचना निम्नलिखित होती है —

कर्तृवाच्यपरक वाक्यरचना

कर्तृवाच्यपरक वाक्यरचना में तृतीय भविष्यत काल में सामान्य भूत कालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिग) में बदलते है और होना सहायक क्रिया पुरुष वचन तथा लिंग में बदलती है।

एकवचन पुल्लिग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पहुँचा हूँगा	(मैं) पहुँची हूँगी
(तू) पहुँचा होगा	(तू) पहुँची होगी
(यह, वह) पहुँचा होगा	(यह, वह) पहुँची होगी

बहुवचन पुल्लिग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पहुँचे होगे	(हम) पहुँची होगी
(तुम) पहुँचे होगे, (आप) पहुँचे होंगे	(तुम) पहुँची होगी, (आप) पहुँची होगी
(ये, वे) पहुँचे होंगे	(ये वे) पहुँची होंगी

यदि क्रिया सकर्मक है तो तृतीय भविष्यत काल में कर्मवाच्यपरक या भाववाच्यपरक वाक्यरचना प्रयुक्त होती है। जैसे (कर्मवाच्यपरक वाक्यरचना) उसने यह पुस्तक पढ़ी होगी। (भाववाच्यपरक वाक्यरचना) हमने इस फिल्म को देखा होगा।

तृतीय भविष्यत् काल मे 'लिखना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

कर्मवाच्यपरक वाक्यरचना

कर्मवाच्य परक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिग) में बदलते है और 'होना' सहायक क्रिया लिंग तथा वचन में बदलती है।

एकवचन

मैंने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

तूने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

इसने, उसने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

बहुवचन

हमने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)

तुमने, आपने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)

इन्होंने उन्होंने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

भाववाच्यपरक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त सदा पुल्लिंग एकवचन में प्रयुक्त होता है और 'होना' सहायक क्रिया पुल्लिंग एकवचन अन्य पुरुष में।

एकवचन

मैंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

तूने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

इसने, उसने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

बहुवचन

हमने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

तुमने, आपने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

इन्होंने, उन्होंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

तृतीय भविष्यत्काल का प्रयोग

हिन्दी में तृतीय भविष्यत् काल भविष्यकालिक सम्पन्न या पूर्ण व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है। यह व्यापार प्रायः अन्य भविष्यकालिक व्यापार से पूर्व हुआ होता है। जैसे (१) अगर आज सुबह वह लाहौर से चला तो शाम को रावलपिण्डी पहुँच गया होगा। (२) जब वह वापस घर लौटेगा तो यहाँ जाड़ा भी आधा बीत चुका होगा।

आधुनिक हिन्दी में होना क्रिया के प्रथम भविष्यत् काल के रूपों में निहित प्रकारपरक भावों तथा तृतीय भविष्यत् काल के रूपों की विशिष्ट रचना के कारण इस काल का भी अर्थ पर्याप्त मात्रा में बदल चुका है। इस समय तृतीय भविष्यत् काल का प्रयोग अधिकतर भूतकाल और कभी कभी भविष्यत् काल से सम्बन्धित व्यापार के संपादन के प्रति सम्भावना अनुमान आदि व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे (१) पन्द्रह दिन हो गये होंगे। (२) कल तक तुम यह काम समाप्त कर चुके होगे। (३) भारत की प्राकृतिक दशा और जलवायु के वर्णन में यह जान गये होंगे कि भारत के कुछ भागों की मिट्टी